त्वमेव माता

© मणि मधुकर

प्रथम सस्करण
१९७८

मूल्य
दस रुपये

प्रकाशक
शब्दकार
२२ ३ गली डकौतान तुकमान गेट दिल्ली ११०० ६

मुद्रक
भारती प्रिटस दिल्ली ११००१२

आवरण
अशोक धीमान

आवरण-मुद्रक
परमहस प्रेस दिल्ली ११०००६

पुस्तक बध
सुराना बुक बाइडिंग हाउस दिल्ली ११ ००६



मणि मधुकर

स्वमेव माता

क्रम

फाँसी	६
उजाड और अधमरे	१८
जख्म के चारो ओर	२७
पानी की आवाज	३६
हथेली	४७
एक मुर्दाबाद आदमी	५२
स्वयं	६०
पथ	६८
चन्द्र ग्रहण	७२
विस्फोट	८७
गिरती हुई बर्फ	६५
घाव	६६
सत्यवान	१०३
स्वमेव माता	११३
जली हुई रस्सी	१२१
यमराज	१२८

फाँसी

ठंड बहुत तेज थी। उसने कम्बल की गुमटी में से चेहरा बाहर निकाला तो दांत भिंच गये। कँपकँपी की एक लहर तन में दौड़ गयी। वह पांव सिकोड़ कर दीवाल से टिक गया। फिर आंखों को पूरी तरह खोलने की कोशिश करता हुआ सामने देखने लगा। रात बहुत बाकी थी।

करीब सौ सवा सौ गठरियां प्लेटफार्म पर दुबकी हुई थीं। सर्द हवा का कोई तीखा वार होता तो कुछ गठरियों में से 'आह उंह' की आवाजें निकलतीं और धीरे धीरे यह कुनमुनाहट नींद से भारी सांसों के पार डूब जाती थीं।

गाड़ी आने में अभी देर है उसने टिकट खिड़की को बंद देख कर अनुमान लगाया। वह सोना चाहता था, पर शरीर इतनी बेरहमी से टूट रहा था कि पलकें मींच कर घुटनों से माथा जोड़ लेने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं था। कभी-कभी थकान ज्यादा हो जाती थी और तब अपने अंग अंग की तोड़-मरोड़ को समेटते हुए वह सिर्फ झपकियां ही ले पाता था। हर झपकी के बाद उसके भीतर का खालीपन अधिक असह्य हो उठता था।

हडमान !" किसी ने नाम लेकर उसे पुकारा।

क्या है ?'

वह झुभना उठा। आवाज गले की नसों को तड़काती हुई निकली। उसने अपने पर काबू करना चाहा पर खाँसी खड़ी हो गयी थी।

तू कोई दवा क्यूँ नहीं लेता ?"

खाँसी थमने पर हडमान ने सिर उठाया। बदे था। टाट की रजाई म लिपटा हुआ।

"रेलवाई कम्पोटरसे इलाज कराया था। फायदा नहीं हुआ।' हडमान ने मुह म इकट्ठे कफ को बगल म थूक दिया।

एक रोज तू मेरे साथ लालजी साँई के पास चलना। उनके पानी म बडी बडी बीमारियाँ ठीक हो जाती है।'

हडमान कुछ नहीं बोला।

ला चोआनी द' बदे ने कहा अहमद ने मगवायी है।

अहमद थानेदार और गेट बाबू का आदमी था। अगर कोई कुली एक वक्त म तीन से ज्यादा मुसाफिर निपटाता था तो वह उससे चवन्नी वसूल कर लेता था। यह उसकी बँधी बधायी आमदनी थी।

हडमान ने कमीज के नीचे पहनी हुई बडी की जेब म हाथ डाला अगुलियो से कुछ टटोला फिर धीमे से बोला अभी चिल्लर है नहीं। सुबह दे दूगा।

याद रख के द दना। भूल गया तो गेट बाबू लवर छीन लेंगे।

'आहा भूलूगा नहीं।'

आज सर्दी ज्यादा है। बादल हो रहे हैं।'

बादल ?'

हाँ ! देखना, कड़ाके की बरखा होगी !

तभी सामने की पटरियाँ बज उठीं। एक छडीवाला ठेला आया और घडघडाता हुआ निकल गया। उसके पीछे पीछे दो आदमी दौड रहे थ।

कौन लोग हैं ? हडमान ने पूछा।

बारहमासिय मजूर है। कही लन बिगड गयी होगी।

सुपारी खायगा ?

"नट्टो। तेरे हाथ कितने गदे हैं तू कभी नहाता क्यो नही ?" बदे ने भिड़क दिया।

हडमान हँसने लगा जरा झेंपता हुआ-सा।

तेरे पास बैठने पर बदबू आती रहती है।'

'इस नीले जाडे म नहाकर मुझे मरना है क्या ? सुपारी का एक टुकडा दाता तले दबाकर हडमान मुह चलाने लगा।

'किसी दिन मैं तुझे नल के नीचे पटक दूगा।' कहकर बदे चल दिया। रजाई म गाल गुम्मा होकर वह ऐसा लग रहा था, जसे पूरा का-पूरा खभा चल रहा हो। चार छह कदम आग जाकर उसने जोर से छींका, फिर नाक सुड़कता हुआ अँधेरे म गायब हो गया।

बिजली का एक तेज लट्टू हडमान स दो हाथ हटकर भूल रहा था। पत्थरो के जडाऊ प्लेटफाम पर उसकी रोशनी क्षण क्षण थरथराती रहती थी।

गाडडी आणे मे अभी और कितणी देरी है ? '

हडमान ने देखा नजदीक की एक मोटी गठरी हिली और उसम से यह सवाल बाहर आया।

'आधा पौना घटा समझो।' हडमान ने अन्दाजा लगाकर जवाब दे दिया।

जैपर मे डिब्बे म जगा मिल जाएगी ?

आहो, मिल जाएगी।

एक बूढा दाढ़ीदार चेहरा ऊपर उठा और हडमान की तरफ मुडा, 'तुम भी वहीं जाण वाले हो ?"

नहीं पता नही।" उस झुर्रियो भरे चेहरे म एसा क्या था कि हडमान अपने आपको कुली के रूप म स्वीकार नहा कर सका। उसने सुपारी कुतरत हुए सोचा, 'अच्छा ही है कि लाल कमीज कबल मे छुपी हुई है और इस वक्त दिखलायी नही दे रही है। बोला मैं यहीं का हूँ।'

बूढा उसके पास खिसक आया।

बातें करो तो रात कट जाती है' वह बोला पहले मुझे नींद म भी बडबडाने की आदत थी। मेरी घरवाली जब जिंदा थी तो टोकती रहती

थी। मैं कहता भई आदमी अगर बातें न करे तो जिया ही क्या ? अब तुम जाणो बोली है ना ज़िंदगाणी है।

कहाँ के रहने वाले हो ? ' हडमान ने एक जमुहाई ली और अँगुली से आँख का मल निकालते हुए पूछा।

म्हीखास ' बूढ़े ने दोवड़ को कंधों पर खींचते हुए कहा, ' हरपालू मैमन के पास पड़ता है। वा क्या कहते हैं भई कि ज दुनिया भ आवे जपर नहीं देख्या तो किस्मत म तेरा क्या लखा ! सो सैल सपाटा मानो या और कुछ जैपर जा रहा हूं।

' खेती-पाती कैसी है इसबार ? ' हडमान के स्वर म अचानक अपनापा भर आया। हरपालू के निकट कालरी गाव म उसकी बुआ का घर था। छुटपन में एक बार वह वहाँ गया भी था। तब की सिर्फ एक ही याद भीतर टँगी रह गयी थी कि फूफा ने जान किस बात पर गुस्सा होकर भीत से माथा भिड़ा दिया था और भीत गिर गयी थी।

घनो क गुच्छे खूब खिल ह भई ' रूना पले जसी दाढ़ी को सहलाते हुए कह रहा था ये समझो कि धरती सुगे की पाखड़ी हो गयी है— बिलकुल हरी। एक बूटे को छुआ तो दूसरा हाथ स लिपट जाता है। यही सरतर बणी रही तो वो बमछक मचेगी कि नाज कोठो के बाहर पड़ा रहेगा।"

तुम्हारे कितने बोरो की उम्मीद है ?

म्हारे तो कोई उम्मद नहीं। बूढ़े का हडियल चहरा सहसा सख्त और काला पड़ गया। उसने होंठ चबाते हुए कहा म्हारा तो य साल मुकदमेबाज़ी म गारत हो गया। खेत पटिया की तरह खाली पड़े हैं देख के जी भभकता है। '

कोई जमीन वमीन का झगडा पड़ गया ? हडमान ने तसल्ली देने के ढग म पूछा। वह जानता था, खेत खाली रहने का मतलब है गले म पड़ी हुई कज की रस्सी। किसान के लिए उसकी पकड़ से छूट पाना मुश्किल होता है।

' ना भई जमीन का टटा लेकर मैं कभी कचेड़ी गया नहीं। मुझे पता है सिरकार के तमाम कानून-कायदे जमीन हड़पण क लिए होते है। एक

वार उनकी मँडासी म सिर दे दो, तो उमर भर निकलणे का नही। वडे छल-छन्द करणे पडत है। अब तुम्ही बताओ, हल चलाणे वाले का छन से क्या लणा देणा ?"

सही है,' हनुमान न गदन हिलायी। गदन का निचला हिस्सा दद कर उठा। शाम को इतना बोझ एक दम नही उठाना चाहिए था उसने आहिस्ता-आहिस्ता रीढ को पीछे की तरफ तानते हुए सोचा।

"म्हारी तो माटी खराब होणी थी बुढापे मे सो हो गयी।' बूढे का गला भर्रा गया। वह कुछ क्षण चुपचाप शू य मे घूरता रहा, फिर बुझे स्वर म बोला, आदमी क्या सोचता है और क्या हो जाता है !"

हवा की सरसराहट बढ गयी। अधकार मे घुप्प आसमान बादलो की मन्द गरजन फेंक रहा था। ऐसा लगता था मानो कोई बनैला पशु ऊँघ मे गुर्रा रहा हो।

बूढे ने दोवड हटाया। उसने एक खुरदरा ऊनी कोट पहन रखा था, जो सुतली की डोरियो स कमर म बँधा हुआ था। कोट के भीतर हाथ डाल कर बूढे न चमडे की पीपी निकाली। डाट खोलकर हडमान की ओर देखा "लो, पहले तुम दो घूट ले लो। अकेले पीणे से मेरा आँत फुकणे लगनी हैं।"

हडमान ने पीपी नमर दारू गुटक ली। जलती हुई मोमबत्ती नीचे उतर गयी। फिर बूद बूद मोम पिघल कर फैलने लगा। उसन जोर से हथलियाँ भीच ली।

बूढा गट-गट पीपी को खाली करने लगा, जसे प्यास की उतावली म पानी पी रहा हो।

"भई, इस बच्चे को देखो। कसी बेफिक्री मे सो रहा है।' होठ पोछकर बूढे ने एक घुटना ऊचा किया। उसकी गोद म सोय हुए बच्च का गोरा मुख दोवड स बाहर निकल आया। गोल भरा भरा चेहरा। हल्की भूरी भौंहे। छोटे-छोटे नथुन सास लेते हुए। सिर पर धारीदार टोपा।

'पोता है ? हडमान ने फिर पीपी से मुह लगा लिया।

ना दोयता है लडकी का छोरा।' बूढे की आँखें अजीब ढग स

सिकुड़ गयी "अब हम क्या मालूम कि गमार म क्या हो रहा है ?'
बचपन एसा ही होता है ।
बूढ़े न बच्चे के गालो को सहलाया, झुककर चूम लिया ।
मैं तुमस झूठ बाल गया भई, माफ करना । वो मैंन कहा था कि जपर घूमण घूमणे जा रहा हू मो बात नहीं । य बच्चा है न इसका बाप यहाँ जेल म है । उससे मिलणे क लिए जा रहे हैं ।
इसका बाप जल म है ?
तो फर साफ-साफ सुणोग ? सुणो । मैं किस किसस छुपाऊगा ? छुपाणे स होगा भी क्या ! बात यह है कि इस बच्च क बाप को फाँसी होण वाली है । जेल वालो न हम मिलणे क लिए बुलाया है ।
हडमान क शरीर की तमाम नसें एकाएक खिच गयी । उसन बसकी के बड़ का हाथ थाम लिया बाबा तुम सच बात रह हो ?
'सच और झूठ तो वो सगुरा भगवान जाण जिसन इस बच्च को जनम दिया और फिर उस क पल्ल मौत बाँध दी ।
बूढ़े का चेहरा तमतमा उठा अब उस हरामी कीड़े से जाकर कोई पूछ कि हे मालिक तू एस दन्द फन्द क्यों करता है ? बच्च का और इसकी माँ का क्या होगा ? मैं कब तक जिऊँगा और दोनो को सभालता रहूँगा ?
दूर अधेरे म कई खूँखार हाथ उग आय और हडमान का लगा व उसकी तरफ बढ़ रहे है । घबरा कर उसने बिजली क लट्टू को देखा वह उसी तरह जल रहा था । उदास और पीलिये के रोगी की भाँति भावहीन ।
जँवाई की जिद मशहूर है । मैंने अपने जवाई को बहुत समझाया । कहा कि मेरी लड़की ऐसी-वसी नहीं है । उसके बारे म बुरी-बुरी बातें सोच कर क्यो मन गदा करते हो ? लेकिन उस इस बच्च का माँ पर एक बार जो शक हुआ तो गया ही नहीं । उसके जच गयी कि औरत का चरित्तर खराब है और वह सबे देवर से बधी हुई है । पहले तो उसन अपने छोटे भाई पर फरसा चलाया फिर औरत की दोनों टाँगें काट डाली जिससे वह जिंदा रहे और सदा दुख भोगे । छोटा भाई तो उसी वक्त मर गया । उसको पुलिस पकड ले गया तो सासर वाले मेरी लड़की के दुश्मन हो गये ।

साम ने उसकी पीठ पर गरम कड़छी दाग दी और बोली कि तू ही खोटे करम की है। मेरे एक बेटे को खा गयी। दूसरे को जेल भेज दिया।"

हड़मान साँस रोके सब-कुछ सुन रहा था। उसकी नजर के सामने बार-बार धुआँ छा जाता और वह एक कसैली गंध में डूबकर असहाय-सा हो उठता था।

'मुझे जब पता चला कि सासरे वाले लड़की को घाट घोंटकर मारणा चाहत हैं तो मैं उसे अपणे पास ले आया। लेकिन मुकदमे में सब बरबाद हो गया। खेती गयी सो गयी, तकलीफें हुईं सो हुईं पर जँवाई की जान नहीं बच सकी। मेरी लड़की ने तो झूठे बयान भी दिये। देवर की हत्या अपणे मत्थे ले ली लेकिन और सारे सबूत खिलाफ गये।"

प्लेटफार्म पर घंटी की टनटनाहट गूंज गयी।

'गाड्डी आणेवाली है। मैं टिकट ले आऊँ।' बूढ़े ने चमड़े की पोपी को कोट के अन्दर में दबाब लिया।

हाँ, जल्दी करो। और—बच्चा मुझे दे दो।' हड़मान ने बाहें फैला दीं और बच्चे को गोद में लेकर कम्बल से ढक दिया।

बूढ़े ने अपने पास की एक गठरी को हिलाया हे बम्मा! उठ। गाड्डी आ रही है।' फिर हड़मान से बोला 'यह मेरी लड़की है।"

एक स्त्री अपने आपको घसीटती-समेटती हुई-सी बैठ गयी। बूढ़ा टिकट खिड़की की ओर चला गया।

हड़मान बच्चे को छाती से चिपका कर गरमी महसूस कर रहा था। बच्चे ने मुंह से एक अलसायी आवाज निकाली और हड़मान ने खुश होकर उसके टोपे पर चुम्बन जड़ दिया।

स्त्री बिना हिले डुले बैठी थी। उसके पतले होंठ कसकर भिंचे थे। आँखों के नीचे रेखाओं का एक ऐसा घेरा मौजूद था जो अधिक रोने और रात रात भर जागने से बन जाता है। काले और अस्त-व्यस्त बादलों के बीच उसका चेहरा इस तरह फँसा हुआ था मानो उसे एड़िया से रौन्द गया हो।

धड़धड़ाती हुई गाड़ी आ गयी। स्त्री बेचैन हो उठी। पर तभी बूढ़ा दौड़ता हुआ आया और उसने स्त्री को उठा कर हाथों में भर लिया जैसे

वह भूस की बोरी हो। एक डिब्बे में जाकर उसने स्त्री को बिठाया। वह बुरी तरह कांप रही थी।

हडमान बच्चे को कंधे से लगाकर उठा और डिब्बे के सामने जा खड़ा हुआ। बूढ़े ने आगे बढ़कर बच्चा उससे ले लिया।

प्लेटफार्म एक परिचित शोर से भर गया था। हडमान के शरीर में बुखार-सा चढ़ आया था, पिंडलियाँ थरथरा रही थीं। गाड़ी चलने लगी तो उसने बूढ़े का हाथ थाम लिया। वह उस हाथ पर माथा टेककर रोना चाहता था पर अंदर सब कुछ सूखा-सूखा था, रुलाई फूट नहीं रही थी।

"अच्छा भई, जिंदे रहे तो फिर मुलाकात हो जायगी कभी।" बूढ़े ने कहा।

हडमान एक बार उस बच्चे का चेहरा देखना चाहता था पर एकाएक उसका माथा झुक गया और डिब्बा सामने से हटकर दूर होता गया।

सुनसान प्लेटफार्म। ठंड। बच्चा। कटे हुए पांवों वाली स्त्री। बूढ़ा। लहराती हुई दाढ़ी। मौत। हडमान को लगा कोई भद्दी चीज़ उसके भीतर सड़ रही है और सड़ांध इतनी ज्यादा बढ़ गयी है कि सांस लेना मुश्किल हो गया है।

कुलियों ने एक जगह गड्ढा बनाकर आग जला रखी थी और उसे घेरकर बैठे थे। एक सिपाही भी उनके बीच खड़ा था और हाथ ताप रहा था। बंदे ने आवाज़ दी, 'हडमान हो! आ जा सेंक कर ले।'

हडमान उनके पास चला गया। वह गुस्से में उबल रहा था, पर उसके लिए यह तय करना कठिन था कि आखिर गुस्सा है किस बात पर!

'तूने अहमद को चौआनी दे दी?' बंदे ने पूछा।

'नहीं दूंगा मैं किसी को एक पाई भी!' हडमान बिफर पड़ा, 'कमाई हम करें, बोझा ढोकर बदन हम तोड़ें और पैसा खायें ये—स्साले टुक्कड़खोर!'

'ज़बान संभाल कर बोल!' सिपाही ने डाँटा।

'अबे जा भड़ुवे, तेरे जैसे तीन सौ तेंतीस जने रोज टांग के नीचे से निकालता हूँ।"

'तूने दारू पी रखी है!" सिपाही ने घूसा तान लिया। वदे बीच-बचाव करने लगा।

हडमान तमक कर चिल्लाया, हा हाँ, मैंने दारू पी रखी है। तू मेरा क्या बिगाड लेगा? चढा दे मुझे फाँसी पर, चढा दे! जा कर दे थाने मे रिपोट। मैं किसी से नही डरता। आग से भी नही। आग ससुरी मेरा क्या कर लेगी?' यह कहकर उसने कम्बल म से हाथ निकाला और उसे लाल-लाल अँगारो पर रख दिया।

उजाड और अधमरे

मरे जूतो म वार-वार रेत घुस जाती थी और तलुवो स लकर अगुलियो की दरारो तक चिकोटी-सी काटने लगती थी। मैं उस फटकारते झाडत परेशान हो उठा था। कधे पर एक लदद कम्बल था भसे के सूखे भारी चमडे जसा। मुझसे सभाल नही सभल रहा था। पाजाम म भरुट क काँटा की लडियाँ इस कदर लिपट गयी थी कि उसके पाँयचे बिलकुल अलग नजर आत थे। धँस धसीली पगडडी पर चलते चलते मेरे फेफडे उलटे बोलने लगे थ और नथनो म साँस समा नही रही थी।

अरड क दरख्तो की लबी कतार लाँघने के बाद मुझे रिगसाना ढाणी का मुह दिखलायी दिया टीला और झाड झखाडो के बीच खोह की तरह खुला हुआ। दूर स डरावना किंतु नजदीक से गमगीन अदर घुसन पर एक अनवरत मोह और अथक धैय स लबालब।

वाऊ छपरे की छत पर आकडे की मोटियो और खीप का जाल गूथ रह थे। मुझे देखकर नीचे उतर आय। कुछ क्षण एकटक देखते रहे एडी चोटी तक की रो रगत। हम दोनो म बीच दस माह का मनहूस, मथर समय था। मैंने तनिक सकोच के साथ उस पार किया और बाँह का थला

उतारकर चूतरी पर रख दिया।

अपनी सफेद सजीदा दाढी पर हाथ फेरते हुए बाऊ ने एक बाल को खीच कर तोड दिया और उसे गौर से तकते हुए बोले, बहुत दिन लगा दिय !"

सूरज शिखर पर था और धूप उतनी ही ठन्डी थी, जितनी कि हवा। चौतरफ धूल के निरतर बदलते हुए नक्शे और कुछ रहस्यमय सबध थे, जो हमेशा मेरी समझ के आसपास उडकर विलीन हो जाते थे।

मैंने स्वय को इस तरह देखा, मानो कोई प्रेत अभी अभी गड्ढे से बाहर निकल आया हो और जबरन मेरी जगह खडा होकर दात बजाने लगा हो।

मैं थकान भरे असमजस मे होठ काट रहा था। उन पर पपडी जमी थी। उनके छिलके जीभ की नोक पर आ गये थे।

'लुगाई और वो क्या नाम उसका छोरी ठीक है ?' बाऊ ने पूछा। फिर पुकारा 'धनसिंग !'

'सब मजे म हैं" मैंने कहा।

बाऊ ने आवाज दी, होका भर ला भई !

उनका स्वर कमजोर और अस्वस्थ था।

तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है बाऊ ?

तबेत को क्या हुआ है, अज्जू ! बस बखत बवक्त पेट मे आट घुमडने लगती है और चित्त म खराबी आ जाती है। उमर भी तो ज्यादा हो गयी ससुरी ! हाँ, तुम सुनाओ राज-काज म क्या हो रहा है आजकल ?'

मैं मुसकराया। जब जब ढाणी आता हूँ बाऊ यह सवाल जरूर पूछते हैं। कुल उन्नीस घरो की वह अकेली बस्ती। दो-ढाइ सौ मील तक रेगिस्तान और उस जसी ही कइ ढाणिया दो मुल्को के बीच म लेकिन दोनो से ही अलग थलग अपने अभागेपन को ढोती हुइ। विवश। मेरी उपस्थिति उन्हे उस दुनिया से जोडती है, जिसम अचरज-ही-अचरज है। लोग मेरे खून के हर कतर म वाकिफ मुझम बरसों से बस हुए वे लोग चुपचाप सब कुछ सुनते हैं और घृणा से होंठ सिकोड लेते है। वे जानते हैं उस दुनिया

की हसी और खुशी उन पर पहाड की तरह गिरती है।

लडाई शुरू होने वाली है बाऊ !" मेरी आँखों से एक भाप-सी उठी और पूरे चेहरे पर फल गयी। नौ साल की कठिन भुखमरी के बाद पहली फसल देखी है इन ढाणियो न। रास्ते म मैंने जगह जगह सरसा क उजास को महसूस किया था। खेत हरे-पीले प्रसन्न खेत। लडाई उनकी प्रसन्नता को नोचकर फिर वही बरबादी बिछा देगी चारो ओर जिसकी कल्पना करने मात्र से मेरे रोगटे जलन लगते हैं।

लडाई! बाऊ की आँखें सिकुड गयी। वो तो कभी की शुरू हो गयी अज्जू! उधर देखो! उन्होने कोस भर के फासले पर खड एक ऊँचे टीबे की तरफ, जहाँ सीमा चौकी थी इशारा किया। वहाँ अब उस पार की फौज का कब्जा है। परसो काफी धाँय धूँय मची फिर भारत वाले खाली कर गये। सुना आदमी और औजार कम थे उनके पास!"

मेरा चेहरा कस गया। टीले पर सचमुच एक अनदेखा दृश्य था। इधर-उधर तबू गाड दिये गये थे और उनम चहल-पहल थी। इतनी दूरी से आदमकद आकार बौने नजर आ रहे थे।

तभी छपरे के अदर से एक व्यक्ति बाहर आया फूक मारकर होके की आग सुलगाता हुआ। उसकी आँखें रूखी और कठोर थी। भौंहो की लबाई कानों तक चली गयी था। माथे पर खुदे हुए आडे तिरछे खड्डो से पता चलता था कि उसने काफी मार खायी है। बाऊ बोले धनसिंग है यह। चार-पाच महीने पहले आया था जाने कहाँ से? अब यही रहेगा।

धनसिंग ने बाऊ के सामने होका रख दिया। वह उसकी नाल को मुह म लेकर बोले मेरा लडका है अज्जू! नालायक शहर म जाके बस गया है!

बाद म धनसिंग से ही मालूम हुआ कि वह फौज म हवलदार रह चुका है। गुस्से म मेस के एक रसोइये का कत्ल कर दिया फिर डरकर फरार हो गया। छिपकर रहने के लिए रिगसाना ढाणी अच्छी लगी। बाऊ को राजी कर जुगाड बिठा लिया। किसी गश्ती हाकिम को शक वक न हो इसलिए दाखां को नाते की चूडियाँ पहना दी। दाखा मेरे मामा की लडकी थी। अकाल के दिनो की भागम भाग मे उसका पति कहीं चला

गया था। वह न लौटकर आया न उसका कोई समाचार' ही मिला। दाखाँ हर रात किसी-न किसी मरद की बगल मे सोयी हुई मिलती थी, सो चाऊ से छूट मिलने पर धर्नसिंग ने उसकी नाक मे नकेन डाल दी। मुझे धर्नसिंग एक मज़बूत और मौजी आदमी लगा, हालांकि वह मामूली सी बात पर रीस मे भर उठता था।

शाम को हम दोनो ने एक साथ 'अम्मल' लिया और देर तक बातें करते रहे। अफीम का असर नसो म घुल रहा था। जाड़े की तीर-तीखी हवा हड्डियां को झकझोर रही थी। धर्नसिंग मुझे स्यालकोट के क़िस्से सुना रहा था। पसठ की लड़ाई म वह उस मोर्चे पर था।

गली सुनसान थी। कीकर की सूखी पत्तियाँ बुमेर लगा रही थी।

अचानक दाखाँ प्रकट हुई। वह लहँगे की पटलिया को कमर मे खोसे गुनगुनाती हुई आ रही थी। मुझे सामने पाकर चौंक पड़ी 'अहे तुम्म! कब आये ?"

मैं कुछ कहूँ इसस पहले धर्नसिंग गरजा 'दिन भर कहा थी तू ?"

दाखाँ ने उसकी ओर मुह बिचका दिया। मरे निकट आकर बोली 'यह जानवर कौन है ?"

धर्नसिंग का चेहरा सुख हो उठा 'तेरा चुलबुलापन अभी गया नही ?"

भरतार तो ऐसे मिले हैं! जाएगा कैसे ?'

सहसा उस कुछ याद आया 'अज्जू पिछली बार तुम एक पाथी छोड गये थे न मैंन उसम स एक फोटू फाडकर अपने पास रख ली। यह देखो! दाखा ने काँचली की आड से एक मुडा-सुडा कागज निकाला। उसम वहीदा रहमान का चित्र था सायास मुसकान वाला।

'यह तुम्हे अच्छा लगा ?" मैंन उस मल अखबारी कागज को उसकी अँगुलियो म हिलते देखा किसी चिडिया क बच्चे की तरह।

इस हरामजादी का दिमाग चल गया है!' धर्नसिंग बडबडाया, 'मैंने एसी बगम औरत कभी नही देखी!

दाखाँ तमतमा उठी, तुमने कितनी औरतें देखो हैं चमगादड ?"

धर्नसिंग की भकुटियाँ तन गयी। वह बाज की तरह झपटा। दाखा के

गले को दबोचकर उसने एक तमाचा और उसकी पीठ पर जमा दिया। वह दुहरी हो गयी। धर्नासिंग उसे घसीटता हुआ छप्परे में ले गया और ठोकर से किवाड़ उढ़का दिया।

थोड़ी देर बाद छप्पर में दाखाँ की घिसघिसाहट सुनायी दी। जहाँ तक मेरा अनुमान है धर्नासिंग अब भी वैसे ही गुर्रा रहा था।

दूसरे रोज़ छावनी से कुछ सैनिक आये और ढाणी के तमाम ऊँटों को इकट्ठा कर ले गये। रेतील बियाबान में जहाँ जीपें और ट्रक अड़कर खड़े हो जाते थे ऊँट ही काम देते थे। उनके जरिये रसद और दूसरा सामान आसानी से इधर-उधर पहुँचाया जा सकता था।

एक सैनिक जिसकी टाँगों पर छोटी सी दाढ़ी थी जब बाड़ की तरफ घूम कर पेशाब कर रहा था धर्नासिंग उसके पास गया और धीमे-से बोला 'तुम्हारी यह हरकत ठीक नहीं है।'

सैनिक ने पलटकर देखा फिर पतलून की पेटी कसते हुए बोला "कौन सी ? मूतने की ?'

नहीं! मजाक मत करो।' धर्नासिंग के जबड़े खिंच गये मैं जानता हूँ तुम मेरी औरत पर हाथ साफ कर रहे हो।'

भला इसमें किसी का क्या नुकसान है ? कहकर सैनिक ने धर्नासिंग की कमर में हाथ डाल दिया। धर्नासिंग हतप्रभ हो गया। वह इस तरह मुंह पपोलने लगा मानो कीचड़ खा रहा हो।

'तुम यह क्या नहीं सोचते कि हम दो दुश्मन मुल्कों के बाशिन्दे हैं लेकिन उस औरत ने हमें एक कर दिया है।'

दुपहर ढल रही थी। ऊँटों की टोली जा चुकी थी। सिर्फ एक ऊँटनी जो बीमार थी सिजड़े के खूँटे से बंधी हुई अरड़ा रही थी। उसकी बिलबिलाहट से माहौल एकदम निरीह और असहाय हो उठा था। ऊँटों को हमेशा के लिए खोकर लोग अपने झोपड़ों में दुबक चुके थे। कहीं किसी स्त्री के रोने की घुटी घुटी आवाज़ आ रही थी। ऊँट का मतलब है फसल उजड़ जाए, तो भी जीने का एक आधार। वह आधार छिन चुका था। विरोध का एक झोंका भी कहीं से उठ खड़ा होता तो समूची ढाणी

को जलाकर बराबर कर दिया जाता। सब खामोश थे। यही होता है। कोई बचाव नही। कोई चारा नही।

बाऊ मेरे पास बुत की तरह बैठे थे। मुझे लगा वह सदियो से इसी तरह बठे हैं। नगे बदन हताश।

दाखाँ खिचड़ी के लिए बाजरा कूट रही थी। ओखली की धम्म धम्म पहल मेरे सिर म गूजती रही, फिर कलेजे म उतर गयी। निहत्थी निष्पन्न नजरो स मैंने अपने बाप को देखा। वह मिट्टी का ही एक करारा व्यक्तित्व था, जो क्षण भर क लिए तमतमा कर लाल हुआ, फिर राख की तरह काला पड गया। एक अस्फुट यत्रणा मुझ तक आकर ठहर गयी अज्जू हमारा कोई नही है।'

धनसिंग चिलम भर कर ले आया था और उस सैनिक को पिला रहा था। मैंने सैनिक का एक उडता-सा वाक्य सुना 'जब हम एक चिलम, एक तम्बाकू साथ-साथ बैठकर पी सकते हैं तो एक औरत के सग दोनों सो क्या नही सकते?'

धनसिंग ने कोई उत्तर नही दिया बुझी-बुझी दृष्टि म उस बदूक को घूरता रहा जो सैनिक के कधे पर टँगी थी।

एकाएक ऊँटनी धम्म म गिर पडी और टाँगें पछाडकर बुरी तरह चीखने लगी। बाऊ उसके पास गय। बोले 'इस गम लोह म दागना पडगा। कोई रग खिच गयी है जिसकी वजह स इतनी तकलीफ है।'

धनसिंग ने पूछा मैं दाग दूँ?'

'हाँ जल्दी करो, नही तो यह दद के मारे खत्म हो जाएगी।'

कुछ घरों क सामने सैनिक बैठे थ और स्त्रिया स छेडछाड कर रह थे। एक सनिक निसार की बडी लडकी को एक टाँग से वल नचा रहा था। निसार उस ओर पीठ किय मुह पर गमछा डाल सो रहा था। खाट उसकी थरथरी स हिल रही थी।

'हमीर!' दाखाँ न मद आवाज मे पुकारा 'यहाँ आ जाओ।'

वह सनिक चिलम का आखिरी कश लेकर उठा। धनसिंग की तरफ व्यग्यपूण निगाहा स देखा उसने और दाखाँ की बगल म जाकर बठ गया। वह छाजल म बाजरे का तूस अलग करती हुई मुसकरा रही थी। बाऊ

न अधभिच होठो स गाली दी "चुडैल ।"

धर्नसिंग लकडियाँ जमा कर आग सुलगाने लगा। बाद म एक लंबी-सी छड़ लेकर उसने अंगारो के बीच धँसा दी।

ऊंटनी का पट फूलता जा रहा था और वह अपनी गँदली कातर आँखो से बाऊ को देखती हुई लगातार अरडा रही थी।

धर्नसिंग ने हाथ के चारो ओर कपडा लपटकर गम छड को पकडा और ऊँटनी के नजदीक ले आया, किस तरफ? उसने पूछा।

'पुट्ठा पर दायें पूंछ की सीध म।' बाऊ ने कहा और ऊँटनी की पिछली टाँगो को अच्छी तरह दबाकर बठ गये।

अज्जू तुम इसकी गरदन कस दो हिल न सके।"

मैंन गरदन दबोच ली। गम लोहा लगने ही ऊंटनी छटपटायी। उसके मुह स झाग निकलने लगे अरडाना आकाश को चीरने लगा।

दो बार दाग लगाकर धर्नसिंग परे हो गया।

अब लोहे को पानी म डालकर ठडा कर दो। बाऊ ने कहा।

दाखाँ का हमीद न ओखली के पास ही जमीन पर लुढ़का दिया था और मसल रहा था। मैंने उधर से मुह फेर लिया।

अज्जू जरा मेरी मदद करो।

मैं बाऊ क साथ जुटकर ऊंटनी क पट को जोर-जोर स रगडने लगा। वह शायद कुछ आराम महसूस कर रही थी। आफरा धीरे धीर हलका पड रहा था। पुट्ठो का तनाव भी ढीला हो गया था।

सहसा एक तेज चीख निकली जो घिघियाहट म बदल गयी। उसके शात होत ही हगामा मच गया। धर्नसिंग न गम लोहे की छड हमीद की गरदन पर रख दी थी। वह तडपकर खत्म हो गया।

घास फूस के ढेरो और पत्थरो पर बठे हुए सैनिक दौड पड़े।

धर्नसिंग ने छड पानी के कुण्ड म फेंक दी और सब कुछ सहने के लिए तैयार हो गया। काँचली के कसने बद करती हुई दाखाँ उठी। उसने धर्नसिंग का मुह नोच लिया। वह रोती जा रही थी और चिल्ला रही थी, कमीने! कुत्ते यह क्या किया तुमने? क्यों मार डाला इस बेचारे को ? मारना ही था, तो मुझ मार डालते ! मैं तुम्हे कच्चा चबा जाऊँगी।

नासिर की लड़की नाचना बंद कर दाखां की तरफ देखने लगी चकित-सी। फिर वह निसार की खाट पर बैठकर चेहरा पोंछने लगी। होठों पर सैनिक ने काट खाया था और खून बह रहा था।

धनसिंग को घेर लिया गया। कोई निर्णय नहीं कर पा रहा था कि उसका क्या किया जाये? तभी एक सैनिक ने उसकी पसलियों पर लात जमा दी, दूसरे ने कूल्हों पर, तीसरे ने खोपड़ी पर बंदूक का कुंदा बजा दिया। धनसिंग गिर पड़ा। दाखां फटी आँखों से इस दृश्य को देखती रही। दनादन घूंसे चल रहे थे। अचानक उसने एक सैनिक को धक्का दिया और चिल्लायी 'सूअरो तुम इसे मार ही डालोगे क्या?' वह धनसिंग से लिपट गयी।

एक अधेड़ सैनिक ने, जो ठर्रे में धुत्त था, सुझाया, 'दोनों को पकड़ कर छावनी ले चलो!'

धनसिंग और दाखां को रस्सी से बांध दिया गया। वे उन्हें धकेलते हुए ढाणी से बाहर चले गये। एक फौजी ने मृत सैनिक को पीठ पर लाद लिया और अलापने लगा "हाय हमीद प्या-आ रे!" उसके स्वर में दुख की कोई गाँठ थी या खुशी, पहचानना मुश्किल था। भीड़ छँट गयी। ढाणी इतनी जड़ और निःशब्द थी मानो अब कभी जिंदा नहीं होगी। सर्दी डंक मार रही थी। मैंने जेब से आधी पी हुई सिगरेट निकाली, होंठों तक लाते-लाते उसे अँगुलियों से मसल दिया और अस्थिर हो उठा।

बाऊ ऊँटनी की गरदन सहला रहे थे — निःसंग और भयंकर रूप से भाव शून्य। 'इस बूढ़े को सहना आता है, यह आदी हो गया है,' मैंने सोचा और अवसाद में डूबने लगा। हिकारत और मितली! मैं कायरता के दो हिस्सों में बँट गया।

निसार की लड़की कुछ देर पहले की दुर्घटना को भूलकर प्याज रोटी खा रही थी। काँसी की थाली पर वह इस तरह झुकी हुई थी मानो अपना चेहरा देख रही हो। उसकी पिंडलियों और कुहनियों पर छोटे-छोटे घाव थे।

रात को एकाएक नींद टूटी तो किसी की सिसकियाँ सुनायी दीं। कम्बल लपेटकर बाहर चौगान में आया। चाँदनी धुप धुप चमक रही थी टीलों

पर। रेत वर्फ सी ठडी रेत म मुट्ठियाँ मारती हुई दाखाँ फ्फक फफक कर रो रही थी।

"अज्जू" उसकी देह म अधड उठा हुआ था।'

'तुम्हें छोड दिया उन्होने?' मैंने पूछा। पर वह स्वर मेरा नही था। दाखाँ ने सिसकारते हुए 'हा' भरी।

'और घनसिंग?'

'उसे गोली मार दी मेरे सामन ही!' वह फिर मुह म ओढनी ठूस कर रोने लगी। आँसुओ से तर एक ध्वस्त परास्त चेहरा। उस पर पीडा ऐंठ रही थी।

मैंन चाहा कि मुझ पर उसके रदन का कोइ असर न हो, मैं खाला पोपा बना रहूँ पर अचानक मुझे लगा कि घनसिंग की आत्मा की शाति क लिए हम प्रार्थना करनी चाहिए।

"दाखाँ उठो! प्रभु के आगे हाथ जोड दो!" मैंने कहा। पर वह नही उठी। मेरे मुह से निकला, "हे ईश्वर, हे नीच ईश्वर!"

आँखें बद हो गयी। कपाल म धुआ भर गया।

तडके गोलियो की आवाजो से कान फटने लगे। फिर हवाइ जहाजो का शोर और बमो के धमाके। धरती मढकी की तरह उछलन लगी। सूरज निकलने के साथ ही सुना कि चौकी फिर हिंदुस्तान के कब्जे म आ गयी थी। बाऊ दावा, मैं और दूसरे लोग दौडकर छावनी तक गये और हु खद आश्चय से भर उठे कल वाल सैनिको और इन सैनिको म अद्भुत समानता थी। वसे ही चेहरे। मार-काट की मनहूसियत मे पुते हुए। खूखार। अलबत्ता गहराई से देखने पर आँखो म उदासीनता और हमदर्दी का पुट मिल जाता था अनिश्चित-सा।

उस रोज से लडाई बाकायदा शुरु हो गयी।

जख्म के चारों ओर

एक छोटी-सी टीबड़ी के बाद रास्ता खत्म हो गया और सामने सपाट तल्ला नजर आने लगा। हवा के संग उड़ती हुई बालू के पीछे आसमान छिपा हुआ था फिर भी कहीं कहीं तारों की रोशनी गिर जाती थी और लूणिया एकदम चौंककर अपने आसपास के पेड़ों को घूरने लगता था।

अँधेरा जैसे तनकर खड़ा था। खम्भे की भाँति। गुस्से में आँखें चढ़ाते हुए हाकिम की भाँति। लूणिया रुका। जूतियों में फँसी हुई रेत उसने झाड़ दी। उसके घुटने दर्द कर रहे थे और चेहरे पर हर क्षण एक नया खिंचाव उभर आता था। कनपटियों के नीचे सूजन बढ़ती जा रही थी।

उसने एक तरफ मुँह मोड़कर थूका। होंठ खुले तो लगा वहाँ भी कसावट है। चमड़ी इतनी सख्त पड़ गयी थी कि जरा-सा जबड़ा हिलते ही चिर जाने के लिए उतावली हो रही थी।

'ससुरी मोमाक्खी!" लूणिया भुनभुनाया। दोपहर को जंगल पार करते हुए उसने जब झाड़ियों के बीच मधु-मक्खियों का छत्ता देखा तो शहद खाने के लोभ को न रोक सका। वैसे भी वह एक पखवारे से उबली हुई बाजरी के दाने फाँक रहा था, नमक के साथ। गले में खारा स्वाद जम

गया था। छत्ते को दखते ही उसन फेंगा हाथा पर नपट दिया और पगा तानकर टूट पडा। अगल क्षण चिप चिप करता हुआ छत्ता उसकी उँगलियो म झूल रहा था डठल समेत।

वह भागा। आधा कोस तक मधु मक्खियो ने उसका पीछा किया। वे उसके शरीर पर डक लगाती रही पर दौडते-दौडते भी लूणिया न सारा शहद कटोर म उतार लिया। वह कटोरा इस समय उसक सिर पर फेंटे की *सलाई' म रखा हुआ था।*

अगर फेंटा कुछ बडा होता तो उस चहरे पर भी लपेट सकता था। तब थोडा बचाव हो जाता। लूणिया ने सोचा और तल्ल म उतर गया। डक जल रहे थे। एक वचन-सी इच्छा हुई कि जहाँ जहाँ सूजन तप रही है वहाँ गीली मिट्टी का लप कर ले और तनिक देर के लिए किसी टील की ठडी ढलान म सो जाय। पर कधे पर टँगी हुई लोटडी म बूद भर पानी भी नही था कि गला तर कर सके। फिर रात गहरी होती जा रही थी और *दिशा भूलन का डर उसके मन पर छान लगा था।*

तारो की हिरणिया' को देखकर उसने अनुमान लगाया कि वह ठीक रास्त पर है। तल्ले म मरे हुए मवेशियो की सडाँध और एक बुरी-सी चुप्पी दम घोट रही थी। दरख्तो पर किसी पखेरू की फडफडाहट तक नही। उसे लगा, वह किसी गुनी सुगनी की तरह रात के अनदेखे रहस्य म से गुजर रहा है। तभी पाँवो से किसी जानवर की खोपडी टकरायी। लूणिया उछल कर उसे लाँघ गया।

एक मोड आया। तब टीले और पत्थरा के ऊच ढेर। लूणिया आँखें फाड फाडकर चौतरफ देखन की कोशिश कर ही रहा था कि कुत्ता भौंका। उसके दौडने की आवाज आयी।

लूणिया पेड की आड म हो गया। लेकिन कुत्ता और भी जोर स भौंकने लगा। सास सभाल कर लूणिया ने दो चार दफा खखारने की चेष्टा की। उसक मुह स निकला, दुर दुर हट स्साल।'

कौन है? एक भारी आवाज गूजी, जसे कुएँ म भाटा फेंक दिया हो किसी ने।

लूणिया आगे बढा। जान-बूझकर मुह-नाक से आवाजें बनाता अपने

होन का एह्सास कराता हुआ।

मैं—लूणिया, भोजासर वाला। उसने अँधेरे म चिल्लाकर कहा। पास की टेकडी पार करते ही उसन जलती हुई आग का उजाला देखा। हवा म धुएँ की गंध तर रही थी।

एक अधेड आदमी जिसका चहरा पीला और गडढा स ऊबड-खाबड था आग को ताकता हुआ बैठा था।

'जै रामसा-पीर की !" लूणिया ने कहा।

"ज !" उसने बेमन-से होठ बवाये और घुटनो के नीचे दबे हुए कुत्ते को थपथपाने लगा। कुत्ते के नथुना स गुर्राहट फूट रही थी और आख लूणिया की तरफ लगी थी।

लूणिया खड़ा रहा।

'बैठो।" आदमी ने कहा।

'तुम्ह किसी ने मारा है ?" उसने पूछा और कुत्ते के कान मे अँगुली उलझाने लगा।

"मोमाक्खी !' लूणिया न कहा। चेहरे पर हाथ फेरा तो लगा सूजन बेहिसाब बढ़ गयी है और गालो पर गूमड़े उठ आये हैं। आँखें भी अदर धँस गयी थीं।

मामाक्खिया को छेडा तुमने ?'

नहा छत्ता तोड रहा था।'

तोड लिया ?

"हाँ शहद कटोरे मे है।' लूणिया ने फेंटा खोलकर कटोरा हाथ म ले लिया और आहिस्ता से बठ गया।

'मुझे थोडा शहद दो।' आदमी ने हाथ आगे किया और कटोर म अगुली डाल दी। एक धार जीभ मे लेकर मुह चलाने लगा।

'पानी है यहा ?" लूणिया का गला सूख रहा था।

'उधर घडा रखा है पी लो !"

लूणिया ने हाथ धोकर पानी पिया। कोर ताजे घडे की ठडक अदर उतर गयी। वह मुह पर छींटे मारने लगा। जलन कुछ शात हुई। फेंटा भिगोकर उसने चेहरे पर इस तरह लपेट लिया कि सिर्फ आखें बाहर रहीं।

क्या नाम है तुम्हारा ?" लूणिया न तम्बाकू की तलब म इधर उधर टोहते हुए पूछा। आदमी ने आँटी स चिलम-साफी निकाल कर उसकी ओर बढा दी।

'जठा। गाँव खारडा। डढ महीने स यहाँ आया हूँ। इस मुग्गी म।"

"एक बार मैं गारडी गया था ऊन बेचन क लिए। लूणिया न चिलम पर अगार रखकर पहला कश लिया साँवत मधवाल क घर ठहरा था मैं। वह वही है आज-कल ?

साँवत को पिछले कातिक मे पुलिसिय पकड ल गय। जठा ने अभी शहद म अगुली डाल रखी थी उसन पटवारी पर बर्छी चला दी थी। खेत-लगान का मामला था।

तुम क्या करते हो इस जगह ?"

आगे सडक बन रही है। ठेकेदार सारा माल यहीं जमा रखता है। उधर देखो पत्थरो के ढर रोडी चूना औजार—सब पडे है। मैं रखवाली करता हूँ।"

'मुझ रुजगार मिल जायेगा ?'

हाँ नौ-दस कोस आगे। सडक पर ज्यादा मजदूरो की जरूरत पड सकती है।"

काला अकाल है। लोग दर दर भटक रहे हैं रोजी क लिए। एक मजदूर की जगह बने तो सौ जने सिर के बल चलकर आते है।

अगारो पर राख जमने लगी थी। लूणिया ने जगर म कुछ लकडियाँ डाल दी।

'ठेकेदार आएगा तब मैं उसस तुम्हार लिए कह दूगा।' जठा न उबासी ली। कुत्ता उसके घुटनो के नीचे स निकल कर कहीं चला गया था।

अगर मुझे काम नही मिला तो मैं हत्या कर दूगा।' लूणिया की आँखो म आवेश की चमक भर गयी।

तुम खून नही कर सकते।

कर सकता हूँ।

किसका ?"

'किसी का भी।'

जेठा हँसा 'मारना इतना आसान नहीं होता।"

लूणिया न कोई जवाब नहीं दिया।

कई बार मैंने भी कोशिश की है। हाथ काँप जाता है।"

'मैं नहीं डरूँगा।' लूणिया ने जूतियाँ खोलकर परे रख दी और एड़ियों को रेत म धँसा दिया, "तुम किसे मारना चाहते थे ?'

अपनी लुगाई को।'

क्यो ?"

वह जबान की बहुत कड़वी है।

लूणिया चुप रहा।

उसमे मुझसे ज्यादा ताकत है।'

जेठा का स्वर फँस गया। थोडी देर वह चुप रहा। फिर बोला "वह चाहे तो वहाँ सडक पर जाकर कमा सकती है, किन्तु उसे मेहनत करना सुहाना नही। अव्वल दर्जे की कामचोर है।"

"लो, चिलम पिओ।' लूणिया ने कहा।

गालियाँ देने म उसका कोइ मुकाबला नही। ववात गल पड जाती है। ठेकेदार तक को नहीं बख्शती।' जेठा ने चिलम खीचकर मुह फेर लिया और लम्बी लम्बी सास लेने लगा।

मुझे भूख लगा है। लूणिया ने आग मे आखें गडाकर कहा।

एक औरत तजी से चलकर आयी और ओढनी के छोर को लहँगे म खोसती हुई बोली 'भूख लगी है तो अपना हाथ चबाकर खा जाओ। यहाँ कुछ नही है।' वह हाँफ रही थी। कुत्ता उसकी बगल म प्रकट हो गया धीरे धीरे दुम हिलाता हुआ।

'बक-बक मत कर बेशऊर!' जेठा चीखा।

औरत पर कुछ असर नहीं हुआ। उसने सख्त ढग से पूछा "शहद कहाँ स आया है ?

जेठा ने आग की रोशनी म शहद की धार बनायी फिर कटोरे को हिलाने लगा, "यह लाया है। लूणिया। सडक पर काम करेगा।"

'तुम्हारा जी कसा है ?" औरत की कठोरता पिघली।

'ठीक है।" जेठा झेंपते हुए मुसकराया, 'इसे कुछ खाने को द।'

ज्वार के टिक्कड है। शहद के साथ अच्छे लगेंगे।' कहकर औरत झुग्गी मे चली गयी।

तुम बीमार हो ?" लूणिया ने पूछा।

'ठेले पर से पत्थर उतार रहा था तो एक पत्थर लुढक कर छाती पर आ गिरा। तब से दद है। खून की उल्टी भी हुई।' जेठा ने नाक खुजलाते हुए कहा।

हल्दी पकाकर खाओ। ठीक हो जाओगे। कुछ दिन लुगाइ से परहज रखना।

अच्छा।'

झुग्गी म बतनो के खटपटने और गुनगुनान की मिली जुली ध्वनियाँ उत्पन्न हुइ।

तुम्हारी औरत का नाम नथिया है ?"

ज—हा तुम कैसे जानते हो ?' जेठा चौंका।

'यह पहले मेरे पास थी।'

दोनो के बीच खामोशी टग गयी।

"तुम इसक मद रहे हो ?

'हू तीन साल तक। फिर हम अलग हो गय।'

इसके बच्चा नही होना था इसलिए ?'

'नही। कई बरस तक बरखा नही हुई। भोजासर खाली हो गया। भूख ने मुझे भी लाचार कर दिया कि घर छोड दू और मालवे की तरफ निकल जाऊ। इसने मेरे साथ चलने से मना कर दिया।

"क्यों ?'

यह अपना गुजारा कर लती थी। सिरेपच का भाई इसे सग रखन के लिए राजी हो गया था।'

तेल की चिमनी और कटोरदान लेकर औरत लौटी।

जेठा ने एक तिनका जलाकर चिमनी की बत्ती से छुआ दिया। मन्द प्रकाश फल गया। औरत न टिक्कडो पर शहद लगाया और उन्ह बाँट

लिया। खाते वक्त लूणिया को लगा, वह बहुत उतावली म कौर निगल रहा है। इस बार उसने इतमीनान से गस्सा बनाया और कुछ सोचता हुआ जुगाली-सी करने लगा। नथिया की सुंदर आखें और ठुड्डी पर गुदने की नीली पत्ती। हथेलियों म हथफूल भी होंगे। उसने रामदेवरा के मेले मे गुदवाये थे।

वह बेचैनी से उफनने लगा। अभी अगर चेहरे पर लिपटा हुआ फेंटा हटा दूं तो यह मुझे पहचान जायगी। फिर लूणिया न उधर पीठ कर ली। उसके भीतर गुनगुने जल का एक सोता फूट आया था और बह रहा था। बेआवाज।

खाने स निपटकर औरत ने टाट की दरी बिछा दी और जेठा स बोला 'तुम बदन सीधा कर लो। मैं एक चिलम पिऊंगी।'

जेठा उठा और दरी पर जाकर लम्बलेट पड गया।

कितना समय बीत गया !' लूणिया ने सोचा। उसके मुह की त्वचा म कुछ कसकने लगा। सूजन गदन तक उतर गयी थी और टेंटुवे के आसपास एसा महसूस हो रहा था जसे थूहर के काटे चिपक गय हो। वह पीडा को भूलने की चेष्टा करने लगा।

दूर ऊंटों की बिलबिलाहट हुई। सन्नाटे की सघनता बिखर गयी। औरत चौंककर उठी। कुछ क्षण अधेरे म टीलों क पार घूरती रही। फिर बोली और सामान आया है। मैं ठिकाने लगाकर आती हूं।

आज कित्ते ऊंट आ चुके ? जेठा ने पूछा।

दो कम दस।' औरत ने कहा पांच रोही के तीन खोर के।'

मुरदे रात को भी चैन नही लेने देते।" जेठा न खिन्नकर करवट बदली।

"तुम्हारा चैन कौन छीन रहा है ? ' औरत का स्वर तीखा हो गया। उसन पजों म नाक दबाकर सोते हुए कुत्ते के ठोकर लगायी उठ र आलसी ! मेरे साथ चल।

कुत्ता हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ। आंखें मिचमिचाते हुए उसन मांगालीग जम्हाई ली, फिर औरत के पीछे-पीछे चल पड़ा। उनके पांवों की आहट धीमी होती गयी।

तुमने दूसरी कर ली ?" जेठा ने लूणिया की तरफ सिर घुमाया।

'हाँ।' लणिया ने अनमनेपन से कहा। पता नहीं क्या, उसके मन में नफरत सुलगने लगी थी। या हिकारत। अपने प्रति ? वह तय नहीं कर पाया।

बाल-बच्चे हैं ? जेठा उसे खोद रहा था।

'दो छोरियाँ हुई। दोनों मर गयी। एक चेचक से दूसरी भूख से।'

एक धमाका हुआ। शायद ऊँट पर से बोरा गिराया था। जमीन पर। कुछ मरदाना आवाजें धमाके में डूब गयी।

तुम नथिया को मारने की बात क्या सोचते हो ?' लूणिया ने शक्ति बटोर कर सवाल किया।

जेठा ने अपनी आँखें जोर से मली और अंगों को गट्ठर की भाँति समेट लिया।

यह सुभाव में करखरी है लेकिन दिल से बिलकुल हरी। लूणिया ने सफाई सी देते हुए कहा।

'मुझे लगता है अगर मैंने कुछ नहीं किया तो किसी दिन यह मुझे मार डालेगी,' जेठा के स्वर में आतंक था धोखा देकर या कुछ खिला कर।

'नथिया ऐसी नहीं है। लूणिया ने अनिश्चित ढंग से कहा लेकिन कभी माथे में उल्टी जच जाए तो—यह कुछ भी कर सकती है।

मेरे भीतर बुरे-बुरे विचार उठते है। जेठा निढाल होकर पसर गया और ऊपर देखने लगा। आकाश गंगा में तारे झिलमिला रहे थे फीके और अस्थिर।

लूणिया ने खाली कटोर को रेत से माँजा और काँख में दबा लिया।

'अब मैं चलूंगा।' उसने कहा।

सीधे दक्खिन में निकल जाओ। आगे का रास्ता चौड़ा है। रात भर चलते रहे तो सुबह तक मुकाम पर पहुँच जाओगे। जेठा ने हाथ के इशारे से बतलाया।

इसे समझा दो मुझे किसी की मौत नहीं चाहिए। अँधेरे में से आवाज आयी। ककश। व्यंग्य से सनी हुई।

लूणिया अचकचा गया। औरत ने कुत्ते को कंधे पर टांग रखा था और उसका एक पाँव सहला रही थी। आँखें जेठा पर टिकी हुई थीं।

जेठा का चेहरा भय से पीला पड़ गया।

"तुम तो अब खुश हो ?" औरत लूणिया की तरफ देखकर कड़वाहट से हँसी।

लूणिया निरुत्तर-सा खड़ा रहा। फिर तेज़ी से पलटकर टील की ढलान में उतर गया। नीचे आकर वह रास्ता टटोलने के लिए ठिठका। एक क्षण के लिए पीछे मुड़कर देखा। औरत जेठा की बगल में जाकर लेट गयी थी। चिमनी बुझ गयी थी और आग किसी पुराने ज़ख्म की तरह चमक रही थी। ज़ख्म के चारों ओर अंधेरा था।

पानी की आवाज

बस एक खास मोड पर बहुत तेज आवाज करती हुई रुक गयी। लोग इस तरह उठ खड़े हुए और कुहनियाँ चलाकर दरवाज़े की तरफ बढ़ने लगे जैसे भीतर बर का छत्ता टूट पड़ा हो। एकदम सब कुछ असह्य हो गया। मैंने दयापूर्ण दृष्टि से अपनी सीट की तरफ देखा—अपनी ! हाँ अभी आधा घंटे तक मैं उस पर बैठा रहा था। वह भद्दे ढंग से नीचे को दबी हुई थी। चमड़ा फटकर खजियल कुत्ते के कानों की तरह लटक आया था, लक्कड़ बाहर भाँक रहे थे और नीचे के लोहे का एक घिसा हुआ हिस्सा नजर आ रहा था। मुझे लगा मैं घंटों यहीं खड़ा इस सीट को देखता रह सकता हूँ। इस दरिद्र टूटी हुई सीट को। यह एक चीज है जिसे देखा जाना चाहिए। पर तभी मैंने देखा कि ऐसी देखने लायक चीजें पूरी बस में बिखरी हुई थीं। बिखरी हुई की जगह मैं जमी हुई कह सकता था लेकिन मैंने नहीं कहा।

एक बच्चा और दो बुढ़ियाओं के पाँव कुचलता हुआ मैं नीचे उतर आया। पीठ पीछे मैंने उनकी भर्त्सना सुनी। बच्चा चिल्ला रहा था और काफी विश्वास से अब तक सीखी हुई गालियों का इस्तेमाल कर रहा था।

बुढ़ियाएँ सिर्फ बड़बड़ाकर रह गयीं। यह उम्र का असर था। चिल्लाना अपने अन्तिम स्तर पर बड़बड़ाहट में बदल जाता है।

मैं हँसा। यह हँसी ग्लानि और शर्म को फोड़ कर निकली थी। फिर पसीने से तर माथे को छुआ। नाक और होंठों के ऊपर भी पसीना था। हथेली से उसे पोंछते हुए मैंने एक लंबी साँस ली और फिर उतने ही लंबे-लंबे डग भरता हुआ चल पड़ा।

सबसे पहले मैं उस सड़क पर आया जो अपने गहरे, चमकीले कालेपन में मुझे हमेशा सुन्दर लगती थी। सड़क के आस-पास की दुकानों वाले मुझे जानते थे और यह ऐसा परिचय था जो रोज रोज एक-दूसरे को देखने से हो जाता है। बातचीत या खुलेपन के व्यवहार जैसा बीच में कुछ नहीं था। अपने आश्वासन के लिए मैं इसे सीधा-सपाट कहता था। पेड़-पौधों, मकानों, सूर्य, आकाश से हमारा बातचीत का रिश्ता नहीं होता, पर हम उन्हें जानते हैं और यह परिचय दूर तक साथ देने वाला होता है।

तीन दिन पहले इस सड़क पर से मैं कुछ लोगों के साथ गुजरा था। वे मेरे साथ हैं यह एहसास मुझे रास्ते भर गर्वित करता रहा। तीन दिन पहले मैं थका हुआ, पर गर्व भरा यहाँ से गुजरा था। मेरे कंधे झुके हुए थे। अर्थी के बाँस को उठाते ही मेरी नसें तन गयी थीं और मैंने उसके भारी शरीर को दुःख और हिकारत की निगाह से देखा था। वह मेरा भाई था। उम्र में मुझसे छोटा। डीलडौल के कारण लोग उसे मुझसे बड़ा समझते थे और वह इनकार नहीं करता था। मुख से मुसकरा देता था। सचमुच वह तगड़ा था। खूब खाता-पीता था। उसका हाजमा ठीक था। मुझे रात को इसबगोल की भुरकी लेते हुए देखकर वह हँसता था। उसकी हँसी में अपमान का भाव नहीं था पर आदर भी नहीं था।

बड़ी मुश्किल से मैंने अर्थी का बाँस अपने कंधे पर चढ़ाया और उसे रखते ही लगा कि वह सूखी चमड़ी को चीरता हुआ मांस में धँस जाएगा। मांस की हलकी-सी परत वहाँ थी। बाँस हड्डी में चुभने लगा। गरदन अकड़ गयी। त्वचा के खिंचाव से धीरे धीरे कराहता हुआ मैं चल रहा था। भजन गाने वालों के स्वर में मेरी आह्-उह् दब जाती थी। मैंने पाया कि अर्थी को सहारा देने वाले और लोग चालाकी कर रहे थे। वे **एक तरफ़**

पानी की

हटे हुए से चल रहे थे और ज्यादा-से-ज्यादा बोझ मुझ पर डालना चाहते थे। मैं बुरी तरह भुना हुआ हाँफ रहा था। यह भाईपन का नतीजा था। वे मुझे दु:खी और हताश देखना चाहते थे। उनकी इच्छा पूरी हो रही थी। घाटों तक पहुँचते पहुँचते मैं भरपूर सहानुभूति के लायक हो गया था। सिर फटा जा रहा था। आँखें जल रही थीं या शायद बुझ गई थीं—ठीक-ठीक याद नहीं है। लेकिन कंधे दर्द से सुन्न पड़ गये थे और रीढ़ की हड्डी न होने के बराबर हो गयी थी। मुझे थोड़ी राहत मिली थी तो केवल इस बात से कि श्मशान जैसी जगह का नाम लोगों ने घाटो रख छोड़ा था। इस शब्द का उच्चारण मैंने कई दफा किया। हर बार मुझे लगा कि मैं मुक्त हो रहा हूँ। दु:ख से तनाव से खीझ और पश्चात्ताप से। मुक्ति का एक रास्ता मैंने खोज लिया था और लगभग तटस्थ होकर भाई को जलते हुए देख रहा था। उसका शरीर कई हिस्सों में बँट गया था। चर्बी पिघलकर लकड़ियों के बीच में फैल गयी थी और कहीं-कहीं से उसने आग को बुझा दिया था। एक आदमी लाठी से अंगारों को इकट्ठा कर रहा था। वह भाई के छिटके हुए अंगों को भी बटोर रहा था और उन्हें जलने लायक स्थिति में पहुँचा रहा था।

उस वक्त मेरा मुँह थूक से भर गया था। थूक का स्वाद फीका और उबकाई भरा था। एक क्षण को लगा कि वह थूक नहीं अँधेरा है। मैंने लोगों की निगाह बचाकर पिचकारी छोड़ दी और मुँह पोंछने लगा। तभी पीछे से किसी ने उँगली गड़ायी क्या कर रहे हो? थूकते हो?

मैं सहमा काँप उठा। रोंगटे खड़े हो गये। मुड़कर कहने वाले को देखने की हिम्मत नहीं हुई। अपराधी-सा खड़ा रहा। भाई की अधजली खोपड़ी मेरे सामने थी।

यह तीन दिन पहले की बात है। दुपहरी में खाना खाकर सो रहा था कि गीता ने आकर जगाया। वह बेहद डरी हुई थी और ठीक से नहीं बोल पा रही थी। हकलाते हुए उसने बताया कि भाई को कुछ हो गया है। मैं उठा। लुंगी की गाँठ को कसा फिर पाँवों में चप्पलें डालकर गीता के कमरे में गया। भाई खाट पर औंधा पड़ा था और दोनों हाथों से छाती को

बुरी तरह मसल रहा था। पहले भी दो-एक बार उसकी छाती में दर्द उठ चुका था।

मैंने गीता की तरफ़ देखा, वह सहमी-सी खड़ी थी। पति का इस तरह तड़फड़ाना उससे बर्दाश्त नहीं हो रहा था। उसकी आँखों में अजीब-सी करुणा और याचना थी।

मैं वापस अपने कमरे में आया, टाँगों में पतलून फँसायी और रिक्शा लाने के लिए दौड़ पड़ा।

अस्पताल में प्रवेश करते समय वह बेहोश था। गीता उसकी बगल में सिर झुकाए बैठी थी। मैं बराबर में मार्गदर्शक पर था।

यह तीन रोज़ पहले की घटना है। भाई को दिल का दौरा पड़ा था। उसे दो साल से ब्लड प्रेशर भी था। वह बचा नहीं। गीता और मैं उसे फूँककर घर लौट आये।

मैंने महसूस किया सड़क पर आजू-बाजू के लोग मुझे घूर रहे थे। घूरना—यह मेरे मन में उपजा था। मैंने डरते डरते सिर उठा कर देखा, सब अपने काम में लगे थे। मुझे कोई नहीं देख रहा था। दो चार ने उचटती-सी निगाह डाली बस।

वह गली एक बड़े बही की तरह थी। स्याही के नुकीले आकारों में डूबी हुई। चलते हुए लगता कि मैं किसी मुनीम की तरह उसे बग़ल में दबाकर चल रहा हूँ। वह मुझ पर सवार है। जगह-जगह सँकरे गलियारे थे धाराओं की तरह फूटते हुए। गलियारे सदा उमस से भरे रहते थे और फिर सीलन से। चारों ओर एक घरेलू क़िस्म की गंध को मैंने महसूस किया। घरों के नहानघर बाहर थे और उनके आगे पत्थरों के चौखटे पड़े हुए थे। अधिकांश दीवारें उखड़ी हुईं। उनमें से ईंटों के लाल चेहरे झाँक रहे थे। इमारतें इस तरह थीं जैसे रेवड़ में कई भेड़ें सिर जोड़कर खड़ी हों। उनके भीतर से निकल कर आने वाली आवाज़ें मिमियाहट से अधिक कुछ नहीं थीं। रोग़न के धब्बे किसी पत्रिका के मुखपृष्ठ का मसाला जुटा सकते थे। दरारों में चूने के फुल्ले मुँह बाये पड़े थे। मुझे अपने भाई का चेहरा याद आया। मरने के बाद उसका मुँह जैसे किसी चीज़ को खाने के लिए खुला रह गया था और सामने के पीले दाँतों का साफ़-साफ़ नेत्र

जा सकता था। भोजन करने पर वह देर तक तिनकों से दाँत कुरेदता रहता था। बीच बीच में पिच पिच की आवाज़ें इस तरह छोड़ता जैसे उनके द्वारा कोई संगीत पैदा कर रहा हो। उसकी यह आदत खराब थी। मुझे बुरा लगता पर मैं चुप रहता और भाई के मुख पर संतोष की आभा देखने में मशगूल हो जाता। भाईपन के कारण मैं उसकी ओर अपनी कमजोरियों को तूल नहीं देता था और उन्हें ढकने की कोशिश करता। बस हम दोनों एक दूसरे से वाकिफ थे और ढँकने वाली स्थिति केवल गीता के सामने आती थी। यह वाकफियत इतनी आगे बढ़ी हुई थी कि अक्सर हम आपस में उपेक्षा का बरताव करते उपेक्षा का नहीं तो निस्संगता का।

गीता को हमसे कोई शिकायत नहीं थी। घर में वह अकेली औरत थी और पड़ोस में कहीं जाने का शौक भी उसे नहीं था। वह खामोशी से सब कुछ करती जाती। खाना बनाने से लेकर कपड़ों पर इस्तरी करने तक। कभी-कभी मुझे लगता कि गीता की चुप्पी सायास और दुर्भावनापूर्ण है। मुझे संकोच होने लगता था। मुझे यह भी महसूस होता कि गीता मुझसे कुछ भयभीत रहती है। भय की लकीर काफी लंबी खिंच गयी थी। इसके कई कारण थे और मुझे उन कारणों की तह में जाने पर कपकपी छूटने लगती थी। लगता, जैसे अचानक हड्डियों के जोड़ जोर-जोर से बजने लगे हैं और उनमें से एक पीला पदार्थ निकलकर शिराओं में समा गया है। रफ्ता रफ्ता वह पीला पदार्थ मेरे पूरे शरीर पर कब्जा कर लेता और मुझे अपने में से दुर्गन्ध आने लगती थी। मैं खाँसने लगता और बलगम के सहारे बार बार उस दुर्गन्ध को फेंकने की चेष्टा करता। खाँसते खाँसते मैं खीझ उठता और मुझे बुखार चढ़ आने का डर होने लगता था।

असल में यही बात सही थी। यह खाँसने और बुखार आने की बात। गीता की शादी पहले मुझसे होने वाली थी पर ऐन मौके पर डाक्टर ने कह दिया कि इनके फेफड़े क्षय से गलत जा रहे हैं। मुझे कतई विश्वास नहीं हुआ पर एक्स रे ने मेरे विकृत फेफड़ों को टूटे हुए पत्तों की तरह सामने प्रकट कर दिया था। फिर मैंने कुछ नहीं कहा। न डाक्टर से न गीता से। आने वाले दिनों में मैं काफी समझदार हो गया और अपने फेफड़ों के प्रति

मेरे मन में मोह या प्यार का-सा भाव जग गया। मुझे लगता कि मेरे फेफड़े गल रहे हैं और मैं उनसे प्यार कर रहा हूँ। खतम होती हुई चीज के प्रति किए गए प्यार की तुलना में नहीं रखा जा सकता, वह सब से ऊपर होता है—एक आदमी के कद जितना ऊपर।

गली आगे जाकर गोलाई में दाहिनी तरफ मुड़ती थी और वहाँ से छोटी-छोटी कोठरियों का सिलसिला शुरू होता था। ये कोठरियाँ फल बेचने वालों के गोदाम बनी हुई थीं। इन पर बड़े-बड़े जंग-लगे ताले झूल रहे थे। कुछ पुराने ताले तो किसी लोहे शिशु की तरह लग रहे थे—कुण्डों में हाथ डाल कर लटकते, पाँव पटकते हुए। कोठरियों के आगे घास-फूस दोने, टोकरियाँ, छिलके और कागज के टुकड़े फैले हुए थे। गली में मुड़ते ही फलों की मीठी खुशबू नथुनों में भर जाती और मन फड़कने लगता था।

गली थोड़े फासले के बाद खूब चौड़ी हो जाती थी। वहाँ जयपुरी ढंग का एक दरवाजा बना हुआ था जिसे पोल कहा जाता है। चाँदपोल सूरजपोल की तरह का ही यह एक अनाम 'पोल' था। इस का कोई नाम होगा भी तो मुझे मालूम नहीं था। दरवाजे में एक-दो गायें और गधे हर वक्त खड़े हुए मिल सकते थे। वे कोठरियों के आगे का घास-फूस उठा ले आते और तल्लीनतापूर्वक उसे चबाते रहते थे। दरवाजे की पुताई खाक-जमी हो चुकी थी। उस की बायी दीवार के कोने पर तीर का निशान बना था और उसके सामने नीले अक्षरों में उस प्रेस का नाम लिखा हुआ था जहाँ से मेरा साप्ताहिक अखबार छपता था। दीवार को छूती हुई एक नाली दूसरी तरफ सीधी चली गयी थी। नाली के किनारे बादामी रंग के हो गये थे, उन में प्रायः साबुन का पानी बहता रहता था।

मैं एक पाँव को आगे बढ़ाकर उछला और नाली को लाँघकर एक सुरंग-जैसी गली में घुस गया। वहाँ हल्का-सा अँधेरा और दलदल की-सी बू थी। पकी हुई स्थायी बू। प्रेस की मशीनों की खड़खड़ाहट के सिवा और कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। टीन के एक लहरीले दरवाजे को धक्का देकर मैं उस बाड़ेनुमा मकान में घुसा। सामने दालान था जिसमें रेत बिछी हुई थी और उसे उड़ने से बचाने के लिए पानी छिड़का गया था। गीली रेत पर चलते हुए मैंने पाँव के निशान छोड़े। एक लम्बे चौड़े चौबारे में सात

आठ कम्पोजीटर काम कर रहे थे। उनके सिर झुके हुए थ। हाथ जल्दी जल्दी उठ गिर रहे थे। खम्भे के पास लगे हुए खाने पर एक बूढा आदमी पेज भर रहा था। उसके कपडो पर जगह-जगह काले दाग लग रहे थ। उगलियाँ जहाँ तक काली पड चुकी थी और उनके पोर स्याही म भर गये थे। मैंने उसके पास जाकर पूछा आज दीनू नहीं आया क्या ?

उसने मेरी परेशानी को भाँप लिया। एक बार सिर उठाकर मेरे चेहरे को देखा, फिर बुदबुदाया दीनू !"

मैं कुछ देर वहाँ खडा रहा। बूढा मेरी उपस्थिति स बेखबर अपने काम म जुट गया था। वातावरण मे एक दहशत भरी स्तब्धता थी और उसम से टाइप रखने और उठाने की आवाजें उभर रही थी।

मैं चलने लगा तो वह बोला दीनू आज नही आया।

मैं रुका और उसकी ओर झुक गया तो लोकमच' का कवर-पेज कौन तयार करेगा ?'

मेरे सवाल के जवाब म वह बोला कवर पेज तयार हो गया है।'

मैं आश्वस्त हुआ। बूढे की पीठ पर हाथ रखकर मैंने कोमलता स कहा धन्यवाद।'

उसने चौंककर मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। उसकी फटी फटी-सी दृष्टि म सन्देह था। मैंने कहा 'आँखें फाड फाडकर क्या देख रहे हो ?"

वह उसी तरह देखता रहा। उसकी आखो मे लाल रेशे आपस मे घुलमिल गये थे। मैं हँसने लगा। अपनी झेंप मिटाने के लिए। मैं उसकी तीखी निगाहो के सामने झेंप रहा था। मैंने महसूस किया मेरे होठ बेवजह एक खोखली हसी मे खुल गये।

बूढे न धोती-बनियान पहन रखी थी। बनियान मे हाथ डालकर उसने एक छोटी सी पुडिया निकाली और उस सावधानी स खोलने लगा। उसमें भाँग की तीन मोटी मोटी गोलिया थी। बूढे ने एक गोली हथेली पर रखी और उसे गटक गया। गटकते हुए उसके गले की रगें उभर आयी। टेंटुआ एकबार गोलाकार होकर कापा फिर थिर हो गया।

मैं अब उसे पुडिया समेटते हुए और उसे बनियान के भीतर की जेब म खोसते हुए देख रहा था। मजाक करने के लिए मैंने कहा एक गोली

"नहीं।" उसने कठोरता से कहा। मैं तब तक उसकी छाती और खोपड़ी के सफेद बालों को देखने लगा था पर उसके रूखे स्वर ने मुझे छुआ और मैं एक बार फिर खीसें निपोरने के लिए विवश हो गया।

"कवर-पेज कहां गया है? मेकअप रूम में या मशीन पर?"

"मशीन पर।" उसने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

मैं कई कोठरियों को लांघता हुआ उस खुले कमरे में पहुंचा जहां प्रेस की दो मशीनें चुपचाप खड़ी थीं। एक तरफ ब्लाकों और बने हुए पेजों के फ्रेम रखे हुए थे। लोहे की बड़ी मेज पर दो छोकरे चेस कस रहे थे। उनमें से एक चाबी घुमा रहा था। चाबी घुमाते हुए उसका चेहरा सिकोना हो गया था। दूसरा थोड़ी देर ठोक-पीट करता रहा फिर ब्रश लेकर चेस को साफ करने लगा। मैंने देखा दोनों मशीनमैन उकड़ू बैठे हुए सिगरेट पी रहे थे। उनके काले हाथों में सिगरेट की सफेदी अजीब-सी लग रही थी। दाऊद जब सिगरेट पीता तो वह उसकी मूंछों में टंग-सी जाती। दाऊद हिन्दी की छपाई करता था। मुझे देखते ही उसने हमेशा की तरह ज़ोर से कहा 'नमस्ते, सम्पादक जी!' फिर वह मेरा चेहरा देखकर सकपका गया। शायद मेरा चेहरा बिगड़ा हुआ था उसमें किसी को सकपका देने वाला तत्त्व ज़रूर था।

'कवर-पेज छाप रहे हो?' मैंने जबरन मुसकराते हुए पूछा, पर तुरन्त ही मुझे लगा कि मेरी मुसकराहट दाऊद को अखर गयी है। वह गम्भीर हो गया था।

'कवर-पेज आज तो नहीं छपेगा।' कहता हुआ वह लोहे की मेज़ के पास चला गया और चेस को उलट-पलट कर देखने लगा। फिर उसने मुझे अपने नज़दीक पाकर कहा 'अभी तो मैं कॉलिज वाली किताब छाप रहा हूं।'

'देखो, कवर-पेज शाम तक छपना ही चाहिए। यह ज़रूरी है।' मुझे लगा, मैं गिड़गिड़ा रहा हूं, 'कवर पेज छपेगा तो मुझे पैसा मिलेगा। उसमें एक सरकारी विज्ञापन है। तुम जानते हो मेरी हालत इन दिनों बहुत तंग है।'

मेरे निवेदन का उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह बेरुखी से बोला
' लोकमंच का काम आज नहीं होगा सो व आप मालिक से बात कर
लीजिए।"

प्रेस का मालिक लड़का सा लगता था। उम्र तीस बत्तीस की होगी पर चेहरे पर दाढ़ी के बाल बहुत कम थे। उसका रंग जरूरत से ज्यादा गोरा था और वह हरदम इस अभिमान से भरा रहता था। मैं उसके कमरे में गया तो वह बिल बुक पर झुका हुआ था और हिसाब बना रहा था। वह अक्सर यही काम करता हुआ मिलता था। मैंने देखा उसकी भरी पूरी मेज पर एक तरफ लोकमंच के छपे हुए छह पेज पड़े थे। मैंने वे छह पेज उठा लिये और बेंच के एक कोने पर बैठकर देखने लगा। कमरे में तेज रोशनी थी। प्रेस मालिक के ठीक ऊपर ट्यूब लाइट जल रही थी।

नरेन बाबू, कवर-पेज आज ही छपना चाहिए। मैंने उनका ध्यान भंग करने के लिए कहा।

उसने एकदम मुझे देखा और हड़बड़ा कर उठ बैठा। फिर हाथ मसलते हुए दो-तीन बार बोला सुनकर मुझे दुख हुआ बड़ा दुख हुआ मैंने सुना तो बड़ा दुख हुआ।'

वह मेरे भाई की मृत्यु पर अफसोस प्रकट कर रहा था। मैं चुप रहा। वह थोड़ी देर खड़ा रहकर वापस बैठ गया। कुर्सी को आगे खिसकाकर उसने अपने हाथ मेज पर फैला दिये।

कवर-पेज छप गया नरेन बाबू ? मैंने अनजान होकर नये सिरे से बात शुरू की।

अभी तो नहीं छपा। उसने लापरवाही से जवाब दिया।

कवर-पेज आज छपना चाहिए।"

'आज तो नहीं कल शाम तक छपेगा।'

'कल शनिवार है। आज छप जाए तो मैं कल सरकारी विज्ञापन का पैसा ले सकता हूँ। वहाँ मेरी जान-पहचान के आदमी हैं। लेकिन कल छपने पर मुझे सोमवार तक इंतजाम करना पड़ेगा। इतवार को मेरे यहाँ कुछ मेहमान आने वाले हैं। भाई के कारण ।' मैं इस वाक्य को पी

गया। मेरी आवाज़ बिलकुल सूख गयी थी। मैं मुँह नीचा कर खाँसने लगा। खाँसी रुक गयी तो देखा, नरेन बाबू बिल बनाने में व्यस्त हो गये थे।

'सरकारी विज्ञापन कितने का है ?' सहसा उन्होंने पूछा।

'तीन सौ का।'

'आपको ढाई सौ रुपए हमारे भी चुकाने हैं।'

'हाँ मैं चुका दूँगा। यह अंक निकल जाने पर प्राइवेट विज्ञापनों की रकम भी तो आयेगी।''

'लेकिन कवर पेज तो कल ही छप सकेगा। आज तो दोनों मशीनें खाली नहीं हैं। कुछ अर्जेण्ट फर्मे छप रहे हैं।' उन्होंने निर्णय दे दिया। मुझसे नरेन बाबू बहुत कम बोलते थे और जब बोलते थे इसी तरह निर्णायक होकर बोलते थे। मैं उनकी बात का विरोध नहीं कर सकता था।

प्रेस से निकल कर मैंने फिर वही गलियाँ पार कीं। सड़क पर आया तो धूप उतरने का एहसास हुआ। मेरे कुरते की जेब में दो रुपए थे और कुछ रेजगारी। मैंने दो पान लिये। एक खुद खाया दूसरा पास खड़े एक पत्रकार को खिलाया। पत्रकार ने पहले ना-ना की फिर बीड़ा मुँह में दबा लिया और पान वाले से नब्बे नम्बर का जर्दा माँगने लगा।

फिर मैं उधार वसूल करने के लिए नगर-परिषद के दफ्तर गया। वहाँ के एक क्लर्क ने पन्द्रह-बीस रोज़ पहले मुझसे दस रुपए लिये थे। वह नहीं मिला बीमारी की छुट्टी पर था। दूसरे क्लर्क ने बताया कि बीमारी का तो बहाना है यह अपनी बीवी को लाने गाँव गया है।

घर पहुँचा तब तक शाम हो चुकी थी। मेरे हाथ में रूमाल की गठरी थी जिसमें सब्ज़ी बँधी हुई थी।

गीता रसोई में थी। मैंने उसे सब्ज़ी थमा दी। तीन दिन से हम दोनों की बोलचाल बन्द थी।

रात को मैं लिहाफ में मुँह ढककर देर तक रोता रहा। किसके लिए ? भाई के लिए गीता के लिए या अपने लिए ? मैंने स्वयं से पूछा और रोता रहा। रोते रोते खाँसी आने लगी और बुरी तरह हाँफने लगा तो मैंने सीधा

को आवाज दी। हमेशा की तरह।

वह भाई के कमरे में सो रही थी। उसने पानी का गिलास लाकर मेरे हाथ में थमा दिया। मैं गट-गट पीने लगा। हम दोनों के बीच पानी पीने की इस भावहीन आवाज के सिवा कुछ नहीं था। सब ओर वही आवाज थी।

हथेली

हल्की-सी आवाज़ हुई जैसे रबर की गेंद फ़र्श पर इधर से उधर लुढ़क गयी हो। पु० ने पीठ के बल लेटकर अपने हाथ गर्दन के नीचे समेट लिये। अचानक टाँगों पर एक टूटी हुई हुमक उभर आई। लग रहा था, माँस बर्फ़ के टुकड़ों की तरह फेफड़ों में जमती जा रही है। भीतर कई गाँठें बन गयी हैं। उसने धीरे से खँखारा और एक निश्वास छोड़कर साँस खींच लिये।

मेज़ पर तले हुए आलू-मटर रखे थे। मसाले की तीव्र गन्ध पु० के नथुनों में भर गयी।

वेटिंग-रूम काफ़ी लम्बा चौड़ा था। खिड़कियों के बन्द काले कपाटों पर मटमैले कुहासे की चिकनाई लगी हुई थी। चार नम्बर बिस्तर पर लेटा हुआ पु० एक बचकाना-सा इन्तज़ार कर रहा था, कि थोड़ी देर बाद कुछ दूसरे मुसाफ़िर भी यहाँ आ जाएँगे। और उसके आसपास का स्थिर वातावरण गतिमान हो उठेगा।

भोजन करते समय वह दफ़्तर के लोगों के बारे में सोचता रहा। श्याम और सक्सेना की बोलचाल कई दिनों से बन्द है। असिस्टेन्ट सुपर-वाइज़र का पद ख़ाली हुआ है। वे दोनों उसके लिए जी-तोड़ कोशिश कर

रहे हैं। कल ही गम बड़े मजे से बता रहा था कि सक्सेना ने किसी लोकल पेपर में दयाल की बुराई छपवाई है, उस चौदपोल का दलाल बड़ा है।

रेलवे-कैंटीन का लड़का चाय लेकर आया तो पु० उसे खोजती निगाहों से ताकने लगा। वह हाँफता हुआ दरवाजे के पास खड़ा था। उसकी भौंहें भूरे बालों में और आँखें शून्यता में डूबी हुई थीं। सिर असाधारण रूप से चौकोर था। नाक ठंड से छिलकर मिच हो रही थी और जब वह मुह खोल कर भाप छोड़ता तो गालों की नुकीली हड्डियाँ साफ चमकने लगती।

बाहर से किसी ने कड़क आवाज दी। लड़का हथेली से नाक मसलता हुआ भाग गया।

पु० ने महसूस किया इस एक क्षण में काफी-कुछ घट गया है। सूखी छाल-सी खामोशी तड़कने लगी है और मस्तिष्क में घुमड़ते हुए बेतरतीब खयालों का व्यतीत की गहरी जड़ें अपनी ओर खींच रही हैं। चाय के प्याले पर फड़कते हुए होंठ टिकाये वह कहीं दूर पहुंच गया।

धुले हुए कपड़ों का गीला और भारी गट्ठर लाकर बाऊ ने आँगन में पटक दिया है। माँ जल्दी-जल्दी एक खूंटी से दूसरी खूंटी तक रस्सियाँ बाँध रही है। वह कद से ठिगनी है इसलिए सारे काम उछल उछल कर करती है। उसके छोटे छोटे पाँवों का रंग गोरा है पर उसकी एड़ियाँ सदा मैल से गन्दी रहती हैं।

चार-पाँच साल का बच्चा रज्जू चटाई पर बैठा धूप सेंक रहा है। उसके घुटनों पर स्लेट रखी है जिसका सीधा हिस्सा पहाड़ों से भरा है। रज्जू की जुबान पहाड़े घोट रही है और दृष्टि माँ की गतिविधियों का मुआयना कर रही है। करीब आधा घंटा बाद ऊबकर वह स्लेट को जमीन पर रख देता है और बहती हुई नाक को दाहिनी हथेली से पोंछकर जोर जोर से सुड़की लगाता है। तभी उसकी कनपटियाँ झनझना उठती हैं। साबुन के झागों से भरे हुए बाऊ के सख्त हाथों की मार से वह परिचित है। उसकी नाक और भी तेजी से बहने लगती है और वह चीख मारकर जमीन पर लोट जाता है। किन्तु हथेली से दुबारा नाक पोंछने का साहस रज्जू नहीं जुटा पाता।

उस रोज माँ दिन भर भूखी रहती है और बच्चे को छाती से लगाये

सारी रात रोने धोने में गुजार देती है। बाऊ को जब-जब गुस्सा आता है दारू पीते हैं गली में चारपाई डालकर सोते हैं बड़बड़ाते हुए खाँसते रहते हैं। और थूकते रहते हैं।

सिरहाने की तरफ रखे हुए चमड़े के बैग और काठ के सन्दूक को एक नजर में सम्भाल कर पु० ने घड़ी देखी।

साढ़े छह बजने वाले हैं। लोहारू जाने के लिए दस चालीस पर मुझे गाड़ी मिलेगी। अभी वक्त पड़ा है और मैं नींद भी ले सकता हूँ।

यह सोचकर उसने एक पैर को सीधा किया। पैंट की जेब से सिगरेट निकाली और उसे जलाकर कम्बल में घुस गया। अनिश्चित ढंग से वह देर तक धुआँ उगलता रहा। तकिये पर एक कोने में उसका सिर धँसा हुआ था।

पु० को लगा वह एक खुली कब्र में बरसों से इसी तरह सो रहा है। धुएँ के कफन को कुछ क्षणों के लिए उतारकर वह कभी-कभी आकाश और धूप और मकानों और छतों को देख लेता है फिर उसी को अपने इर्द गिर्द लपेट लेता है।

एकाएक इस भयंकर स्थिति की जड़ता से मुक्त होने की चाहना पु० करने लगा। उसे घबराहट लग रही थी। उसने उन टूटे हुए सिलसिलों के बीच स्वयं को पाना चाहा जो आज तक उसके अस्तित्व को निरर्थक सम्बन्धों में जोड़ते रहे हैं और जिन्हें वह अनावश्यक रूप से चुनौतियाँ बना रहा है। हर चीज को टटोल-टटोल कर जानने और उससे भी अधिक पहचानने में उसने कितना कुछ खो दिया है।

बहुत-सी बातें फालतू होती हैं पर हम उन्हें अनजान ही अलग-अलग आकारों को सौंप देते हैं और वे मन पर मकड़ी के जाले की भाँति महत्त्व पा लेती हैं। नये-नये मौकों के अनुसार अपने आपको बदलना कितना कठिन होता है कितना पीड़ाजनक !

वह कुनमुनाया और करवट बदलकर दीवार की ओर मुड़ गया। उसकी एक बाँह पलंग की पाटी पर झूल रही थी और अँगुलियों में सिगरेट की लाल चिनगी टँगी हुई थी। गले में ऊपर तक कम आयी ग्लानी को उसने जबड़ों में पी लिया और उन ध्वनियों को सुनने की कोशिश करने लगा

समय की क्रमहीन सीढ़ियाँ। पता ही नहीं चलता कौन आगे निकल गया है कौन पीछे छूट गया है?

आवश में पु० कुहनियो के सहारे अधबठा हो गया। उसकी आँखो म विरक्ति और थरथराहट थी। होठों म कसावट। निजी अनुभूति की तीव्रता के समक्ष कभी-कभी शब्द कितने ओछे कितने पराये हो जाते हैं!

अपनी दाइ हथेली को पु० ने पूरी तरह फला लिया और वेटिंग-रूम की धुधली अचेत रोशनी म उसे अपलक घूरन लगा।

'रेखाएँ अब भी उलझी हुई हैं।' उसने मन ही मन कठोरता से कहा।

सहसा उसकी हथेली की उलझी हुई अस्पष्ट रेखाएँ घनी झुर्रियो म परिवर्तित हो गयीं और माँ के रुग्ण उदास चेहरे को अपन सामन देखकर वह काँप उठा।

एक मुर्दाबाद आदमी

दिन-दोपहर दफ्तर म अँधेरा था।

बिजली चली गयी थी और उजास सिफ रोशनदानो के पास टँगा हुआ था। हाल क भीतर कुर्सियो और आलमारियो के बीच एक टेढी मेढी सँकरी गली पार करता हुआ वह अपनी जगह तक पहुचा।

फिर उसने आसपास एक सरसरी निगाह डाली।

भयावह खामोशी थी। किसी कागज के फडफडाने तक की आवाज नही।

वे एक बडी मेज को घेर कर बठे थे। निश्चल। मानो बुत।

वह सोचता रहा व क्या सोच रहे ह ? इस कदर गुमसुम कि एक दूसर से बोलना तक भूल गय है।

उसने गहरी साँस ली और जेब स एक सूखा आवला निकाल कर कुट कने लगा। पिछल हफ्त ही मुह म बत्तीसी जडवायी थी। गाल भर भरे और रग खिला खिला गुनगुनाते हुए उसने चेहरे पर हाथ फेरा और मुसकराया।

भु नीलाल मेजा पर मोमबत्तियाँ रख रहा था। उजाले क धब्बे इधर-

उधर लपलपाने लगे थ।

उसके सामने भी रोशनी का एक टुकड़ा बिछा दिया गया। मेज़पोश का तरह।

वह गौर से चीजों को देखने और सभालने लगा।

कतरनों की फाइल आ गयी थी। वह पढ़ने लगा। आंखों पर ज़ोर पड़ा तो चश्मे को साफ किया, कुरते की किनारी स। फिर अक्षरों पर नज़र साध कर एक आसन म जम गया।

तभी फर्श पर एक साथ कई पांव बजे। उसे लगा, बड़ी मेज़ हँस रही है।

सिर उठा कर उसने देखा।

'कुत्ता!' कोई फुसफुसाया और हसी सिरे ■ गायब हो गयी।

अह ऽ ■ '—उसके जबड़े कस गये।

उन्होंने अपना खेल शुरू कर दिया है। वे सब मुझ पर हसेंगे। दुहरे अर्थों वाले वाक्य बोलेंगे। आहें भरेंगे। नथुने फुलाएँगे। होंठ पिचकाएँगे और एक मोर्चा बनायेंगे।

वह बेचैन हो उठा। पीकदान की ओर झुककर उसने आँवले की लुगदी थूक दी। फिर पुकारा सागर!'

भक्क! एकाएक तमाम बत्तियाँ जल उठीं।

उसकी नसों म एक सनसनी-सी लहरा गयी। ऊपर से नीचे तक। अगले ही क्षण सब कुछ थिर हो गया।

हल्का-हल्का शोर हवा म फिसलने लगा।

थोड़ी देर बाद पिछवाड़े म मशीन की खड़खड़ाहट आरम्भ हो गयी। टेलीप्रिंटर एकतान बजने लगा।

'सर! आपने बुलाया था?

उसके दाहिने सागर खड़ा था। दुबला-पतला। बुझा-बुझा-सा। उम्र चौबीस-पच्चीस के करीब। आवाज़ एकदम जनानिया। सब उसका मज़ाक बनाते थ। चावला एक रोज़ शोभाचन्द से कह रहा था चीफ साब ने तो चोला ही बदल लिया। मुश्किल स चालीस के लगते हैं। बाल डाई करा लिये। दाँत नये लगा लिये और एक लड़की स्टेनो रख ली ।'

वह दैनिक समाचार-पत्र का कार्यालय था। औरतों के लिए एक भूख यहाँ हर वक्त मँडराती रही थी। मालिक महिलाओं का सम्मान करता था। उसने किसी भी स्त्री को अपने यहाँ नौकरी देकर अपमानित होने से बचा लिया था!

लेकिन सागर!

सर आपके लिए आवास मंत्री का फोन आया था।'

फिर नारी-कंठ तरंगित हुआ।

"अच्छा!" उसके स्वर में चीफ का रौब था। जैसे मेघगर्जना हुई हो।

'शंकर बाबू से बोलो लोक सभा की आज की कारवाई का ब्यौरा दे जाए।'

जी सर!'

सागर चला गया।

नारी कंठ! नीलकंठ के वजन पर यह नाम उसके भीतर उपज आया था। वह अपनी सूझ पर खुश हुआ।

हलो मिस्टर अग्रवाल!'

जुनेजा सिगार का धुँआ उड़ाता हुआ खड़ा था।

हलो!" उसने धीमे से कहा। मिस्टर अग्रवाल! यह सम्बोधन उसके कानों में चिमटे की नोक सा चुभ गया था। इस जुनेजा को छोड़कर सब उसे 'चीफ स्साब' कह कर पुकारते थे। लेकिन जुनेजा तो इधर खुद चीफ बनने के लिए जोड़-तोड़ कर रहा था। उँह यह घोड़े के से मुँह वाला प्रधान संपादक बनेगा! उसके भीतर अचानक कुछ तन गया। धनुष-डोर की तरह।

'कल आपने जो टिप्पणी दी थी तमिलनाडु पर उसकी बड़ी चर्चा है।"

जुनेजा भी अपने तरकश के तीर निकाल रहा है! ठीक है। ताड़ना पड़ेगा।

मैंने जो कुछ लिखा है उसकी हमेशा चर्चा हुई है। वह कुर्सी पर सीधा होकर बैठ गया "जब ज्वाइन किया था मैंने तो सर्क्युलेशन था बीस

हजार आज दो लाख से ऊपर चला गया है।

जुनेजा ने कुछ कहने के लिए होंठों पर से सिगार हटाया पर उसे रोकते हुए अग्रवाल ने हाथ हिलाया "कागज काले करने के लिए हम नहीं बने हैं। फिर सम्पादकीय अगर हलचल मचाने वाला न हुआ तो अगली बार पेट बैठ जायगा।"

कूलर की भनभनाहट के बावजूद वह अपने स्वर की 'गूंज' से सन्तुष्ट था। समूचा माहौल एक उत्सव की तरह लगने लगा, उस क्षण। पिछले अठारह बरसों से वह इस 'उत्सव' में शामिल था।

'लेकिन मालिक नाराज थे।'

'क्यों ?'

'उनका विचार था कि आपने तथ्यों की उपेक्षा की है और ...।'

और क्या ?'

उसकी भौंहों के नीचे सिकुड़न होने लगी।

'और यह कि आप सनकी होते जा रहे हैं।'

जुनेजा पाँवों को नृत्य-गति में घुमाता इतराता-सा वहीं मेज के पास जा खड़ा हुआ और रिपोर्टरों से बातें करने लगा। ठहाके छूटने लगे।

उसका चेहरा तमतमा उठा। ऐसा महसूस हुआ जैसे वह घिर गया है। सब ओर से।

वह शंकर बाबू का इन्तजार करने लगा।

नारी-कंठ जहाँ जाता है अटक कर रह जाता है। मुंह में आँवला डालकर वह कतरनों की जाँच करने लगा। शायद कुछ हाथ लग जाये।

बड़ा नीरस मामला था। नहीं शंकर बाबू से विवरण लिये बिना गाड़ी नहीं खिसकेगी। वो विशेष संवाददाता है। काबिल आदमी हैं। जरूर खास मसाला जुटा कर लाये होंगे संसद भवन से।

तभी शंकर बाबू और सागर ऊपर के तल्ले से उतरते हुए नजर आये। पीछे-पीछे जुनेजा। धम्म धम्म सीढ़ियाँ पार करता हुआ।

तीनों कैंटीन की तरफ चले गये।

वह चिन्ता में डूब गया। नुकीले पंजों वाला एक कीड़ा माथे में रेंगने लगा। लेकिन उसने जल्दी ही स्व... ो सभाल लिया। एक कतरन ने

बोलो क्या बात है ?

शोभाचन्द ने एक आँख दबाकर उसकी कमर में हाथ डाला।

बात यह है कि सागर के अनुसार " जुनेजा ने एक कश लिया और धुआँ उगल दिया मिस्टर अग्रवाल हर इतवार को इस अपने कमरे में बुलाते हैं और तंग करते हैं। आज यह मेरे पास आया और रोने लगा।

बी० एल० अग्रवाल ! बी० एल० अग्रवाल ! बी० एल० अग्रवाल ! अन्धकार। अग्रवाल !

मिस्टर जुनेजा ! ' वह लगभग चीख उठा सागर !

एक पल के लिए सन्नाटा खिंच गया।

खैर ! मुझे क्या लेना-देना ? जुनेजा अपनी कुर्सी पर जाकर बैठ गया यह मिस्टर अग्रवाल और सागर का प्राइवेट अफेयर है।

फोन घुर्राने लगा यकायक। घुर्राता रहा। अन्धकार। अग्रवाल। अन्धकार।

वह जड़ हो गया था। न कुछ देख रहा था। न कुछ सुन रहा था।

चीफ साहब फोन ! चावला ने कहा।

वह लौटा। उसी दुनिया में। नफरत से बोझिल। थका हुआ। घायल। हुना !

उधर मालिक थे।

उसके भीतर भाप के भभकारे उठने लगे। कुछ शब्द उसके कानों के समीप भिनभिनाये। रपटते रपटते वह भिनभिनाहट के परे चला गया। दूर बहुत दूर एक अनदेखे जंगल में। वहाँ एक पेड़ के नीचे सुस्ताते हुए उसने कहा हाँ मैं बूढ़ा हो गया हूँ !

नहीं ऐसा मत बोलिये। मालिक अपने खास लहजे में कह रहे थे, आप तो भीष्म पितामह हैं। हमें आपका आशीरवाद चाहिए। जुनेजा तो चीफ एडीटर ही होगा। अखबार चल्लेगा तो आपकी सल्लाह से। वश भी अब आपको आराम की जरूरत है। उम्मर काफी हो गयी है ।

हाँ। अच्छा ! हाँ। अच्छा ! हाँ। अच्छा ! हाँ ।

वह बोलता रहा। जैसे घिसे हुए रिकार्ड पर सुई अटक गयी हो। फिर

हँसने लगा। बी०एन० अग्रवाल। मैदान। हरी घाटी। काली चट्टान। मरा हुआ पक्षी।

भीष्म पितामह! धिक्कार है तुम्हें!

उसने स्वयं से कहा। फिर पुकारा, 'शिखंडी!'"

आवाज़ सागर की तरफ गयी और खो गयी। वह खाँस कर गले का बलगम छाँटने लगा। सागर एक ज़ंग-लगी चाबी से मेज़ पर पड़े स्याही के दाग को खुरच रहा था। अनिश्चित और असम्बद्ध।

वह सागर को, जुनेजा को, चावला को, शोभाचन्द को और उस हाल को हैरत भरी नज़रों से देखता रहा। फिर उठा। अजायबघर से बाहर निकला। बोला, चलो भीष्म! अब अपने लिए कहीं घर खोजो और घर वाले हो जाओ! ज़िन्दगी भर तुम शरशय्या पर ही लेटे रहे, कुछ दिन और सही। बी० एल० अग्रवाल! मुर्दाबाद!' वह मुसकराया, अपने ख़िलाफ़ हवा में हाथ उठाकर और मुसकराता रहा।

स्वय

एक क्षण के लिए ग० की साँस रुक-सी गयी। फिर उसने सूअर की तरह मुह फाड दिया। हवा के कई बदबूदार गोले बाहर निकले और गुम हो गये। उसे लगा, इन गोलो ने फेफडो को बुरी तरह छील दिया है। पसलियो म हल्के-हल्के दद का खिचाव शुरू हो गया था।

सभी तरह की आवाजों म अब शाम जसी रगीन खुशबू नही थी— कुछ गरम भाप की भाँति धुधुआ कर उडती हुई कुछ अँधेरे व ज्वरग्रस्त खोल म ऐसे पिघल रही थी जस मास।

उसने झुककर सामने के पौधे की तीन चार पत्तियाँ नाच ली और पहाडी के नीचे किसी चौखटे म धँसे हुए शहर को पनी निगाहो स घूरने लगा। शहर जवान कमी की तरह कसमसा रहा है या पागल समुद्र की तरह गरज रहा है ऊपर रोशनियों के रगीन बुलबुल और झाग नीचे जल ज तुओं की व्यापक हलचल— वाह!'

तुम मुझ कुछ तो दो।

ग० चौंककर पीछे मुडा। तब उसे कुछ याद-सा आया और भीतर कही बफ गलने लगी। होठो पर चाशनी से भीगी हुई एक शुद्ध मुसकराहट

एठने की हुई पर अचानक उसने पाया कि मामला इतना आसान नहीं है, कि वह गलत ढंग से सोच रहा है और इस तरह सोच लेने-भर से स्थितियां उसके काबू में नहीं आ जायेंगी।

गुमसुम पेड़ों के पीछे एक सुखद रहस्य ढँका हुआ था। एक ऊंची कब्र और चारों ओर पसरी हुई मुलायम दूब कब्र की ओट में दूब पर लेट जाना और ।

मुझे यहां डर लगता है।' वह पूरी देह में कँपकँपी भर कर बोली थी, 'लगता है बगल में एक मरा हुआ आदमी सो रहा है शायद अपनी आत्मा की आंखों से हम देख भी रहा है।'

सुनकर ग० ठठाकर हँस दिया था। उसने जान लिया था कि वह इस क्षण ऐसी ही बातों के दौरान कुछ चाहती है। यह चाहना अपनी जगह पर बेठीक नहीं था। वह देने के लिए तैयार हो गया यद्यपि इस देन की व्यथता ने किसी कोन पर उसे बहुत उदास कर दिया था। बियर की आधी बोतल का होंठों में भींचकर उसने कई घंट एक साथ लिये। उत्तेजित होकर अपने मुंह में भरा हुआ एक घूंट ग० ने उसके खुले मुंह में उड़ेल दिया। वह उसे पीकर मुसकरायी और एक उमड़ती हुई लालसा को आंखों में बांधकर उसकी तरफ देखने लगी। ग० को यह शुरुआत अच्छी लगी। उसने दूसरा फिर तीसरा, फिर चौथा घूंट उसे इसी तरह पिलाया और खाली बोतल को उसकी औंधा कर बीच में फँसाकर बहुदगी से हंसने लगा।

ग० को इस स्मृत्याभास से रोमांच हो आया लेकिन वह अधिक देर तक स्थिर न रह सका और ढीला पड़ गया। नहीं कुछ नया नहीं। सब-कुछ हर बार जैसा ही। भीतर की अन्दर के शेष तनाव को रौंदकर उसने अपने आपको एक खोखली जिद में बन्द किया। मन जब किसी अठोस भूमि पर कमजोर पड़ने लगे तो बनने या बिगड़ने वाले फैसला को स्थगित कर देना ही ठीक है इससे धुंध छँटती है और निश्चितता आ जाती है। उसने बेतरतीब ढंग से सोचा और सोचकर थोड़ा-सा खुश हो गया

मैंने दोपहर से कुछ नहीं खाया। क्या तुम मुझे रुपया डेढ़ रुपया भी नहीं दे सकते?'

ग० उसके चेहरे की सुती हुई मायूसी से सहम गया। नरमी से बोला

मरी पट नेकर आओ।"

और इतनी देर बाद अपनी बालो भरी टाँगो को नय सिरे से पहचान कर उसने मलिन सी तप्ति का अनुभव किया। हर दिन का अपना एक स्वतन्त्र जीवन होता है और उसम सब कुछ अपूर्ण हो यह आवश्यक नही। सुबह से आग सुलगने लगती है। शाम को उडने वाली राख म किसी भा शब्द को आवाज को पकड पाना सभव नही। एक मस्त, काला आकाश लोगो के टूट हुए क धा पर हहरा कर गिर पडता है और वे किसी भी नतीजे पर पहुचन म असमर्थ हो जाते हैं।

खाकी रग की पट जिसका पिछला भाग घिसकर बदरग और पतला पड चुका था उसके हाथ म थी। वह उस मसखरेपन से आगे-पीछे झुलाने लगा। आहा यह मैं हू य मरी टाँगें है काश कोई इसी तरह गदन पकड कर मुझे हवा म झुलाता। इस हरकत स उसम हल्कापन आ गया और वह एक खुरदरी-सी हसी म हिनहिनाने लगा।

मुझे देर हो रही है।

उसकी आवाज बिलकुल कोरी थी या फिर रानी सी।

अभी तो साढ आठ बजे है।'

'लेकिन मुझे जाना है।'

स्वर की रुखता से वह अकबका गया। अपने फालतू होने की बात भी दिमाग म उभर आयी। पट की जब म हाथ डालकर जल्दी-जल्दी पस गिनने लगा। फिर दाहिनी हथेली पर उसन कुछ सिक्के फैला लिये आठ आने और दो आने दस आने हैं। लो।'

वह खामोश थी। पड और अधेरे की चुप्पी म उसका शरीर ठूठ की तरह खडा था। अडिग बेजान।

मेरे पास दस आन ही है।

उसने सिक्को को हथेली पर हिलाया बच्चो की तरह किंचित उत्साह से।

इतना तो रिक्शा का किराया हो जाता है।"

वह कठिनता से बोल पायी। उसकी आवाज म पछतावा था, दु ख भी।

तभी कहीं धमाका हुआ, जसे व दूक चली हो। घबरा कर उसने इधर-उधर देखा, झपट कर ग०के हाथ से पसे छीन लिये और भागती हुई-सी चली गयी।

मैं इसकी मा को जानता हूँ। वह मुस्त और चालाक है। मैं इसकी मा की सब चालाकियां से वाकिफ हूँ और अब इसका स्वाद भी जान गया हूँ।

उसके जाते ही ग० अकेला रह गया। आखो के डोरे भनभना रहे थ। वह इतमीनान से पट पहनने लगा और बटन बन्द करते-करते सडक पर आ गया। कमीज बाँह पर से फट गयी थी और उसे छुपाया नहीं जा सकता था। ढलान म लुढकने के ढग स चलते हुए उसे मजा आया। एक खयाल यह भी उपजा कि वह अभी ज्यादा दूर न गयी होगी और दौडकर उसे छुआ जा सकता है या अँधेरे म आवाज पैदा करके डराया जा सकता है। पसे भी छीन जा सकते ह। उसके मुह म अचानक जसे किसी ने सडा हुआ अनन्नास ठूस दिया हो। वह नाक म बल डालकर थूकने लगा और अगल-बगल थूकता हुआ चलता रहा। पीछे से धक्के लग रहे थे, हवा धकेल रही था या कोई और।

सडक के काले गड्ढो, गुथी हुई झाडियो और अस्पष्ट परछाइयों स बराबरी का व्यवहार करता हुआ वह लगातार सोचता रहा कि उस वक्त एकाएक बन्दूक कहाँ छूटी थी? शहर मे कोई दगा तो नहीं हो गया? जुलूस वुलूस म सिर फुटौवल तो नही हो गयी?

धीरे धीरे रोशनी के पहिये नजदीक आ रहे थे। एक कडवी सी चका-चौंध उसकी पुतलिया पर ठिठक गयी। परद फाडे जा रहे हो, ऐसा अस्त व्यस्त कोलाहल। उसे धीमा सा एहसास होने लगा कि वह रोज घूम फिर कर इसी जगह लौट आता है। या फिर दुनिया गोल है। गोल-गोल गोल। उसने कई बार दुहराया। स्यात नशा चढने लगा है। उसने सही-सही हालत जानने की कोशिश म सिर झटकाया। नशा-नशा-नशा। और वह मुसकराने लगा। एक सूजी हुई मुसकराहट, कुछ इस वजह से भी कि उसका चेहरा इस वक्त पसीने से भीगकर फल गया था। टाँगें लडखडा रही है। टाँगें-टाँगें-टाँगें। नशा-नशा-नशा। वह जरा जोर से बडबडाया तो पास से गुजरते हुए आदमी ने ठहर कर उसकी ओर देखा। वह और

ज़ोर से बड़बड़ाया। टाँगें टाँगें-टाँगें।' उसे मजा आने लगा था। मैं मैं-मैं। वह आदमी दो कदम दूर हटा फिर तेज़-तेज़ चलकर गायब हो गया।

'मेरा एक दोस्त है। वह रोज़ पीता है। उसे चढ़ती नहीं है। मैं कभी कभी पीता हूँ। मुझे चढ़ जाती है।"

उसने पुकार कर कहा। उसी क्षण यह महसूस किया कि वह बहकने लगा है और ज़बान काबू में नहीं रह पा रही है।

बिजली की बत्तियाँ चमक रही थीं या तलवारें वह जान नहीं पाया। ग० प्यारे ग० तुम बुद्धू हो।

मेमना की तरह कुछ सफेद झक बच्चे एक जगह जमा थे और कौतूहल भाव से मस्जिद के नजदीक खड़ी एक बैलगाड़ी को देख रहे थे। वह पहले बच्चों के पास गया, फिर बैलगाड़ी के पास। वहाँ अच्छी-खासी भीड़ थी।

इतने लोग अब तक कहाँ छुपे हुए थे? ग० को आश्चर्य हो रहा था लेकिन वह उनमें शामिल हो गया और स्वयं को सुरक्षित महसूस करने लगा। लोग-लोग-लोग। लोगों को मैंने कवच की तरह पहन लिया है। कवच-कवच-कवच। तत्काल उसे अपने बहकने का ध्यान हो आया और उसने दाँतों से जीभ काट ली। ग० यार, ग० तुम एकदम फूहड़ हो, फूहड़ और असभ्य!

कुर्सियाँ। पलंग। दरियाँ। आइने। सन्दूक। कम्बल। काँच की तश्तरियाँ। पर्दे। दीवार घड़ी। ये सब चीज़ें बैलगाड़ी पर।

'तीस-तीस-आगे बोल-आगे बोल बत्तीस-आगे पतीस !

एक खूब लम्बा-तगड़ा आदमी सबसे आगे खड़ा था और चीखता हुआ हवा में हाथ हिला रहा था।

ग० को लगा वह गुस्से में है और उसी को देखकर हाथ हिला रहा है। सब लोग गुस्से में हैं।

उसने सिर झुका लिया जैसे अपना अपराध स्वीकार कर रहा हो जैसे बड़ी-से बड़ी सजा भुगतने के लिए स्वयं को तैयार कर रहा हो। लोग सचमुच आवेश में थे और एक दूसरे को धकिया रहे थे।

ग० को नींद आ रही थी। छोटी बहिन ने बिस्तर लगा दिया था

और वह उस पर सोने जा रहा था। माँ हमेशा की तरह बक रही थी और वह हमेशा की तरह बहिन के भभकते हुए अगो को मुग्धता से देख रहा था। बहिन को उसके पति ने छोड दिया है। क्या छोड दिया ? वह होता तो कभी नही छोडता ।

एकाएक एक कोई गला फाडकर चिल्लाया तो ग० चौंक गया और उसने पूरी ताकत से आँख खोल दी। चुप खडे हुए लोग नथुने फुला फुला कर सबसे आगे के लम्बे तडग आदमी को घूर रहे थे।

ग० ने एक व्यक्ति से पूछा क्या बात है?"

किसी रडी का सामान नीलाम हो रहा है।

उसने पिटे हुए चेहरे पर प्रसन्नता लाते हुए कहा और बोली सुनने म व्यस्त हो गया।

ग० उकताने लगा तो वहाँ से खिसक गया। एक सँकरी गली म चलते हुए उसने महसूस किया कुबडी दीवारो ने उसके समूचे अस्तित्व को दबोच लिया है और वह कभी न खत्म होने वाली इस यात्रा से जीवन भर छुटकारा न पा सकेगा। पसीने मे तर कमीज बदन पर चमगादड की तरह चिपकी हुई थी। जल्दी जल्दी पाँव घसीटते हुए ग० ने उस पुराने मकान की पेंचदार सीढ़ियाँ पार की। उतावली मे दरवाजे को भडभडाया।

कौन है ? आती हूँ!

आवाज उसी की थी। थकी थकी।

अरे ऐ तुम ?

वह किवाडों पर झूल-सी गयी। फिर रास्ता छोडकर अन्दर हो गया।

मैं जानती थी, तुम आओगे। तुम्हे जब मालूम पडेगा तुम जरूर आओगे।" वह बोलते-बोलते हाँफ रही थी और मेकअप के अभाव म आज एकदम बुढिया लग रही थी।

तुम तयार नही हो ?

ग० ने पूछा पर तुरत उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। वह मुसकरायी। यह मुसकराना आदत म शामिल था। वह किसी बात का बुरा मानती है तो भी मुसकराती है इसी तरह।

मन ठीक नही था। फिर फिर नही जानती थी कि कभी यह

व्यर्थ

वह अपने सारे दाँत दिखलाकर हँसती है। जब उसके होंठों का फैलाव कानों तक पहुँचकर एक निश्चित आकार ग्रहण कर लेता है तो लाल मसूढ़े बाहर निकल आते हैं और चमकने लगते हैं। तुम कुछ नहीं कर सकते। तुम्हें अपने पर विश्वास है?

अँधेरा इतना गाढ़ा था कि उसे चीरकर चलते हुए डर लग रहा था। वह एक बदबूदार गली थी।

मैंने दबे हुए गुस्से और असन्तोष को झटकने के लिए मुड़कर देखा। पीछे उसका घर काफी दूर छूट गया था और एक पीले भद्दे धब्बे की भाँति टिमटिमा रहा था। अद्भुत-सा लगा इतनी मामूली बात मेरी समझ में पहले क्यों नहीं आयी?

गर्दन पर मफलर की गाँठ ढीली पड़ गयी थी। उसे दोनों हाथों से कसने लगा। हल्की ठंड महसूस हुई। अगर इस गाँठ को मैं कसता ही जाऊँ तो चंद क्षणों में मेरा दम घुटने लगेगा।

चप छप-चप चप। थोड़ी देर बाद मुझे अपनी पदचाप सुनाई देने लगी। उसका एहसास कुछ इस तरह का था, जैसे मैं अकेला किसी सुनसान

दरिया को पार कर रहा होऊँ। चारों ओर पानी काला पानी। काले पानी की सज़ा किसे मिलती है ?

नपथ्य में कहीं सिलाई मशीन चल रही थी। बगल के मकान की दूसरी मंजिल पर बिजली का स्विच आन हुआ। क्च्च ! रोशनी का एक अस्त-व्यस्त चतुर्भुज पालतू कुत्ते की भाँति भागता हुआ मेरे पावों के समीप आया और धूल में लोटने लगा। मैं ठिठका। वह उसी तरह उछाह से लोट पोट हो रहा था। क्च्च ! कुत्ता गायब हो गया। हवा के झोंकों से काँपता हुआ अंधकार आंखों में एकदम घुप्प हो गया।

सड़क पर आकर मैंने रिक्शे की खोज में इधर उधर नजर दौड़ाई। *पोलो विक्ट्री के आगे भीड़ का बिखराव था। आखिरी शो खत्म हुआ था।* कुछ सोचकर, थके पावों को घसीटता हुआ मैं चांदपोल की तरफ चल दिया।

पेड़ों की रहस्यमयी मुद्राओं को देखकर प्रतीत होने लगा कि समूची दुनिया मुद्दत से एक चिपचिपी धुंध में उल्टी झूल रही है। वर्जनाओं, आशंकाओं और अपशकुनों से घिरे हुए लोग मूर्च्छा तोड़कर जागते हैं तो खम्भों से शरीरों को रगड़ते हैं, उखड़ी हुई दीवारों पर बाँह कसते हैं और पिघलते लाट पर होठ टिकाकर फिर सो जाते हैं।

चौराहे पर फुव्वारा छाप बीड़ी बेचने वाले का एक छोकरा जनाना कपड़ों में अपनी गेंद वाली छातियों को बुरी तरह मटकाता हुआ नाच रहा था। उसे घेरकर ढोलक हारमोनियम वाले ऊँचे सुर में रेंक रहे थे।

सहसा मेरी बगल से गुजरती हुई एक स्त्री ने जोर से छींका और साड़ी के पल्लू से नाक रगड़ती हुई अपने साथ के पुरुष से सटकर चलने लगी। *फिर वह खीज और बेचैनी भरी महीन आवाज में कुछ बड़बड़ाई।* उत्तर में पुरुष ने एक कंधा उचकाया और बोला, 'तुम्हें जुकाम हो गया है।'

उसका स्वर रूखा और विरक्तिपूर्ण था।

बन्द दूकानों के तख्तों और छज्जों पर रह रहकर कबूतर फड़फड़ा उठते थे। रात के जूठे बेजान होठ हवा की तीखी मार से थर-थराने लगते थे। मेरे सिर पर उजाले की कई निस्तेज रेखाएँ एकमेक होकर हिल रही थीं। एक चंचल आकृति बार-बार मेरी आँखों के सामने आकर खड़ी हो

व्यय,

जाती और हसने लगती। तुम कहाँ जा रहे हो ? मैं तुम्हें देख रही हूँ। यही अन्त है, यही ठहराव। तुम किसी की खाल उधेड़कर उसके अन्दर झाँकना चाहते हो ? नहीं तुम कुछ नहीं कर सकते। गन्दे बुजदिल ! तुम पर कौन भरोसा करेगा ? हूँ हूँ !

एक उद्धत, गर्वपूर्ण भंगिमा। एक चिड़चिड़ी बुढ़ी हुई आवाज।

मेरी टाँगें काँपने लगीं। भूख और थकान से माथा चकरा रहा था। पें-पें मचाती हुई एक जीप को ज्याही मैंने साइड दी घंटाघर की घड़ी गिड़गिड़ाती हुई सी बोलने लगी—टनन टनन !

जाकेट की भीतरी पुश्त में हाथ दबोचकर मैं अपनी पसलियों को टटोलने लगा। सूखी नुकीली हड्डियाँ हथेली में चुभ रही थीं।

माँ का नाटा दरिद्र चेहरा मेरे निकट खिंच आया। वह अब तक फर्श पर टाट बिछाकर सो चुकी होगी। स्टोव के पास कटोरदान में खाना रखा होगा और उस पर चूहे कूद रहे होंगे।

गीली लकड़ियों की भाँति चट चट करता हुआ एक चित्र मेरे मस्तिष्क में जलने लगा और धुएँ से मेरी आँखें उबलने लगीं। तुम कुछ नहीं कर सकते। कुछ नहीं !

अचानक एक आदमी तेजी से दौड़ता हुआ मेरी पीठ से टकराया और बिलबिलाकर भीड़ के कच्चे रास्ते में घुस गया। उसकी भयातुर दृष्टि मेरे रोम रोम में कौंध गयी और मैं अगले कई क्षणों तक उसी के बारे में सोचता रहा। कि मेरी कमर में किसी ने कसकर घूसा चलाया और मैं जरा सभलूँ इससे पहले ही मुझे गर्दन दबोच कर सड़क पर गिरा दिया गया।

अपने को छुड़ाने के लिए मैं छटपटाने लगा। वे संख्या में अधिक थे और गालियाँ बकते हुए मुझे लगातार पीट रहे थे तेरी भन भाग के जाता है स्साले !

चमड़े के मोटे जूतों से मेरी खोपड़ी का भुर्ता बनाया जा रहा था। लोहे की तीखी कीलें चुभ रही थीं खच्च-खच्च। लेकिन दर्द कई हिस्सों में बँट गया था। उनमें से किसी ने मुझे बालों से पकड़कर दूर तक घसीटा। किसी ने पूरे बल से घुटने मरोड़े। तभी दारू की तीव्र गन्ध मेरे नथुनों में सुलगने लगी। एक भारी भरकम जबड़ा मुझ पर झुका हुआ था और गर्म उबलती

टूट साँसें छोड रहा था। चित्त पडे हुए मैंने मुश्किल से अपने नाखून सीधे किये और उसे नोच लिया। उसकी भौंहों के बाल गुच्छे गुच्छे मेरी मुट्ठियों में आ गये। अब उन्होंने नये सिरे से मेरी छाती और कनपटियों पर वार किये। मैं सज्ञाशून्य सा होकर पडा रहा।

मुझे सडक के किनारे डालकर वे लोग चले गये।

हॅफ-हॅफ हॅफ   रात हाँफ रही थी। खून और पसीने से लथपथ मैं बिजली की बत्तियों को घूर रहा था। अधमुदी आँखो की दरारों में प्रकाश के रंग बिरंगे टुकडे फँसे हुए थे। बार बार एक चचल आकृति उनके बीच से उभर आती और मुझे चिढाती हुई-सी हँसने लगती।

चन्द्र-ग्रहण

अगर मैं एक छलाँग म बाड लाँघ जाऊ तो पेमनी बरी वाली भाडी के पास पहुँच सकती हूँ उसन सोचा। घर म उसका दम घुट रहा था। आक और खीप से गुथी हुई छप्पर की छाजन बार बार बजबजा उठती थी। उसम घुमकर मँडराती हुई हवा बेतरह हाँफ रही था।

जुगनी न मुडकर देखा जिज्जा की तरफ। उनकी आँखें बन्द थी। अम्मल लने क बाद शायद झपकी आ गयी थी। एक पाँव दोवन क बीच भूल रहा था और तह किये हुए खेसन पर उनका सिर बजान-सा पडा था। जाने कैसा अघड उटता है जिज्जा के फेफडो म। खाँसी आती है तो साँस साँय साँय करने लगती है। देर तक हँफनी चली रहती है और चेहरा गरम तवे सा भभक पडता है।

कुछ क्षणो तक जाने किस सोच म डूबी हुई वह जिज्जा के अजर पजर शरीर को ताकती रही। अगो का सत्त सूख गया था एकदम और बची हुई थी एक ठठरी। जुगनी पलट पडी, उसकी पलको म नमी उतर आयी थी।

बाड के सामने रुककर, वह पल भर के लिए ऊँचाई का अदाज़ा

लगाती रही फिर ऊपर उचक गयी। उसके छोटे-से घाघरे का घेर छतरी की भाँति हवा म तन गया। ओढ़नी पतवार की तरह खिंच गयी और धम्म ! जुगनी दूसरी ओर की बालू मे गिर पड़ी। थोड़ी-सी रेत मुह-आँखो म चली गयी। औंधी हथेलियो स आखें मलते हुए उसन पिच पिच्च थूक दिया हालाँकि गला म किरकिराहट का स्वाद बना रहा।

पमलीं नेरा वाली भाड़ी जुगनी की खास सहेली भायली थी। जब उसका मन अमूजने-उकताने लगता, वह इस भाड़ी के पास चली आती थी और पता नहीं, क्या-क्या बतियाती रहती थी। भाड़ी भी एक-एक डाल उसकी बातों को गौर से सुनती और सिर हिला देती थी।

कित्ती गर्मी पड रही है आजकल ! बाप र, दोपहरी म तो आगी बरसती है आगी। फिर भी जिज्जी जाने कहाँ कहा चक्कर लगाती रहती है ! इत्ती तबीत खराब है जिज्जा की, पर जिज्जी तो जब देखो घर से गायब। एक घडी भी घर नही टिकता है अपने छप्पर मे।'

वो सिराम का छोकरा है न बित्तू—बहुत खराब है। मुझसे कहता है ब्याह करूँगा तो तुमसे ही। भला अभी ब्याह की उमर कहा हुई है मेरी ? बारहवां साल लगा है पिछले चैत म। जिज्जा बोलते हैं मोटर-मास्टरा की तरफ सासरा ढूँढूगा तुम्हारे लिए। उधर पानी खब है नहेर का, दस न्त न्त नेलियों म बहता रहता है इत्ता साफ कि मुँह देख लो। हा ऽऽ यही ठीक है बिना पानी के गाँव म तो जिनगी नरक हो जाती है। सुब-शाम लात रहो घडे मटके। कुएँ की जगत कमर तो न्ती है।'

'अच्छी बात है यह गारानिया ढाणी भी तो ऐसी ही है। मरद खेती-पाती डगर-ढोर सभालते है और लुगाइयाँ परीडे म पानी भरत भरत बुढिया जाती है। क्या सुख मिला गिरस्थी म ? छै सात ढाणियो के बीच एक कुआँ। आधी रात के बाद ही चडस चलने लगता है। औरतो के गोट जमा हो जाते हैं और ववात राड-तकरार मचती है।'

न भई अपने को तो यह पसन्द नही। जिज्जा का सोचना सही है। सासरा पानी वाला होना चाहिए। लकिन राम दुहाई जिज्जा की देही तो गलती जा रही है। चमडी का रग बिलकुल पीला पड गया है। मैंने राम-देव बाबा का टोटका भी किया था पर कुछ लाभ हुआ नहीं। बसू कहता

है, पाबूजी को पड बँचवाने की मानता बोलो। मैं कैसे बोलू, मेरी एसी औकात कहाँ ? जिज्जी बोल दे मानता तो अच्छा रहे पर जिज्जी को कौन समझाए उसका ध्यान तो सत्तर बखारियो में भटकता है—बस अपने घर में ही नही रमता।'

जुगनी ने ओढनी की झोली में काफी बेर जमा कर लिये थे। जो बेर पककर नीचे गिर गये थे, वह सिर्फ उन्हीं को चुन रही थी। झाडी की जडो में चूहों ने बिल खोद रखे थे। एक चूहा तेजी से बाहर आया। सहसा ठिठककर इधर उधर का मुआयना करने लगा। फिर कुछ दूर तक दौड लगायी, एक बेर को जरा-सा कुतरकर धीमे धीमे बिल में लौट गया।

शाम की उमस भरी उदासी वृक्षो के आर-पार फैल गयी थी। जुगनी ने थकान-सी महसूस की और एक साफ सुथरी जगह पर बैठ गयी। कहीं से चलकर आती हुई गिलहरी ने अपनी चंचल नजरो में बाँधकर उसे देखा फिर पूछ फटकारती हुई आगे बढ गयी। धूप अब कुछ नरमाई बरत रही थी और सिलटी आसमान में इक्के-दुक्के पखेरू उडने लग गये थे।

जुगनी ओढनी सिरहाने लगाकर अधलेटी हो गयी। उसे लगा कोई चीज है बहुत मुलायम और तरल सी जो आहिस्ता-आहिस्ता उसके भीतर आँखें खोल रही है। जुगनी उस चीज को पहचानती है। उसके रोमांकुरो मे एक लय, जैसे कहीं जलतरंग बज रहा हो पसरने लगती है और वह अचानक अवश हो उठती है। सचमुच, इस लय को मन के किसी कोने में सहज कर समेट कर नही रखा जा सकता है। वह उगती है उमडती है और चली जाती है। उसके गुजर जाने के बाद जुगनी खाली-खाली हो जाती है एकदम रीत जाती है। वह रीतापन उसे एक अव्यक्त घृणा के पोखर में फेंक देता है। चौतरफ जलन है, ताप है पर जुगनी को लगता है उस पोखर के बीच में कुछ ठडक है। वह दलदल का उबटन की भाँति शरीर पर लेपने लगती है। वाकई बाहर भीतर शांति मिलती है।

भौं भौं !

जुगनी ने अकबका कर आसपास देखा। अहो एक कुत्ता बिल्ली के पीछे भागता हुआ भौंक रहा था। जुगनी समझ नहीं पाती है वह सो गयी

थी क्या ? मरज डूब चुका था। अंधेरे का छत्तर तनने लग गया था ढाणी पर। शोरगुल भी बढ़ गया था। वह उठना चाहती थी पर अंग अंग म आलस लहरा रहा था।

जुगनी !"

तभी एक रीस भरी पुकार ने उसे चौंका दिया।

यह जिज्जी की आवाज थी। घर मे जुगनी को न पाकर जिज्जी नाराज हो उठी थी और लगातार हेले दे रही थी।

जुगनी ने पोटली के बेर सम्भाले और उठ खडी हुई। एक नजर बीच की बाड पर डाली। अब उस पर से छलांगना ठीक नही होगा ! जिज्जी अगिया रानी हो जायगी, ऐसी हरकत पर। वह चुपचाप दरवाजे की तरफ चल दी।

सात आठ घरो के आगे घुमाव देती हुई एक गली थी। जुगनी लम्ब लम्ब डग भरकर उसे नाप गयी।

जिज्जी यों ही आजू-बाजू झाड फटकारती हुई बडबडा रह थी। उसे देखत ही चिहनायी कहाँ मर गयी थी खसमखानी !'

जुगनी चुप रही। जानती थी कि होठ हिलत ही झाड पडेगी।

'गाली क्यो देती हो साँझ के वखत।' जिज्जा ने कराहत स्वर म टोका।

तो क्या लाड करूँ इसका ? माँ-बाप तो मेरे सर खप गय, पर यह काली आफत बाँध गये। कब तक बोझ ढोऊँ इसका ? मटरगश्ती करती फिरती है दिन भर।'

या चीखने से क्या होगा ? ' जिज्जा बोले।

तुम्हीं न तो मरये चढा रखा है इस। तुम्ह क्या पता क्या-क्या भुगतना पड़ता है मुझ ! पडे-पडे खाट की मूज तोड्न रहत हो। इस मरी ब म्मारी न तो मेरी नाक म दम कर दिया। क्या-क्या देखू क्या-क्या सभालू !

जिज्जा खामोश हो गये। जुगनी के एकबारगी दिल म तो आया कि वह दे तुम्ही कौन-से कारज सॅवार देती हो ? जब से जिज्जा का रोग न दबाया है, खेती-बाडी किस्म पर द रखी ह दूसरों को। नाज-पात समय पर

आ जाता है मौज लग गयी है तुम्हार ' लेकिन उसके मुह से बोल नहीं फूटे।

पटवारी आया था आज।' जिज्जी न दो डोई भर कर खीच काँसी थाली म डाला और जल्दी-जल्दी खान लगी। वह भूखी थी।

जुगनी ने लक्ष्य किया जिज्जी के स्वर म कहीं कोई पछतावा नहीं था न अपराध भाव, सिर्फ सफाई थी हल्की-सी।

'कुछ खास कहा उसने ?' जिज्जा न उदासीनता स पूछा। कदाचित वह जानते थे कि जिज्जी झूठ बोल रही है। जुगनी ने लकड़ियो की फावट तोड़कर चूल्हे म डाल दी। फिर बटलोही पर ढक्कन रख दिया। वह जिज्जा के लिए कुछ जड़ी-बूटियो का काढ़ा उबाल रही थी।

कहता था खाता ठीक नहीं है।' खीच स ठँसा हुआ जिज्जी का मुह जरा सा खुला। नाक भर आयी थी। जिज्जी ने उसे ओढ़नी के पल्लू स पोंछ लिया भद्दे ढग से एक सिनक लगा कर। जुगनी न हिकारत से आँखें फेर ली।

खाता तो ठीक होना चाहिए। लगान वक्त पर जमा कर दिया था।

तो क्या हुआ ? कुछ गड़बड़ी रह गयी होगी।'

मवेशियो के चरन के लिए छोड़ी गयी जमीन के बारे म भी मैंन उसे पूरा ब्यौरा दे दिया था।

दे दिया होगा तुमने ! जिज्जी को अपनी बात के बीच म यह ख्वाम खाह की दखल दाज़ी बुरी लग रही थी। उसका तो कायदा है कि जो कुछ वह कहे उसे चुपचाप सुन लिया जाये और किसी किस्म की पूछताछ न हो।

तो खाता सुधारन के लिए क्या करना होगा ?' आग की रोशनी म भी जिज्जा की आवाज़ बेहद अधूरी और निर्जीव लग रही थी।

मैं जाऊगी अभी, पचात म। वहीं ठहरा हुआ है वह। और लोग भी आएँगे, अपने खेतो की खतौनी मालूम करने के लिए। कुछ लालच देना होगा पटवारी को। पटा तो पुरजा ही है उसका, नहीं तो क्यो काम करेगा ?'

जिज्जी ने थाली में और खीच भर लिया। फिर उस पर नमक मिर्च बुरकने लगी।

कर-कुमटिया का अचार है क्या ?" उसने अँगुलियां चाटते हुए पूछा।

जुगनी ने ताक पर से हाँडी उतार कर उसके सामने रख दी।

'खाने लायक नहीं रहा यह। जिज्जी ने हाँडी को सूंघ कर होंठ बिचका लिए। जिज्जी के होंठ सुन्दर हैं, खूब गहरे सुर्ख और भरे भरे जुगनी ने सोचा। तेल क् मारने लगा है। कल धूप दिखला देना इसे।'

'काचरी की चटनी ले लो थोड़ी-सी।' जुगनी ने कहा।

रहने दे।"

कीं कीं करता हुआ कोई पक्षी ऊपर से उड़ गया।

'दूध गरम है क्या ?' जिज्जा ने पूछा

'हाँ। खूब कढ़ा हुआ है। जुगनी बोली।

'एक कटोरे में डाल कर अपनी जिज्जी को दे दो। जिज्जा के स्वर में कोमलता था प्यार से भीगी हुई।

नहीं अब मैं नहीं लूंगी दूध वूध। जिज्जी ने इनकार में सिर हिलाया मन नहीं है।'

अच्छा थोड़ी मलाई ले लो। खाने के बाद रंगत आ जाएगी।' जिज्जा ने मनुहार की।

जिज्जी को चुप देखकर जुगनी ने दूध मलाई से कटोरा भर दिया।

तुम बहुत जिद करते हो।' जिज्जी ने एक साँस में कटोरा खाली कर दिया फिर उठ खड़ी हुई। जिज्जा की खाट के पास जाकर बोली कल पूल बेच दूंगी मैं। मोहल्ले में एक आदमी आया हुआ है खरीदने के लिए।'

ऐसी क्या जल्दी पड़ी है ? जिज्जा ने सिर के नीचे दबा हुआ हाथ निकाल कर साफे में एक ढील पटटे को कस लिया।

'पैसे-टके की जरूरत है मुझे।

भाव-ताव पूछ लिया है ?

हाँ पिछले साल से कुछ ज्यादा ही है।

तब ठीक है।'

'तुमने आज दिन भर म खाया कुछ ?

ग्लिया खाया था बाजरी का।

खाँसी का उठाव कैसा है ?'

पहले जितना नहीं है। आज तो नींद भी आयी मुझे।

मबर रखो थोड़ा और हिम्मत साध लो! रामजी न चाहा तो चंगा हो जाओगे जल्दी ही। जिउजी न जिउजा के माथे को सहलाया कुछ क्षण फिर पूछा बुखार तो नहीं आया ?'

मामूली हरारत बनी रहती है बस।

सब ठीक हो जाएगा। तुम जब तन्दुरुस्त हो जाओगे ता रणेचा की जातरा पर चलेंगे। बड़ा आनन्द रहेगा। मुझे तो भरोसा है मेरी इच्छा जरूर पूरण होगी। गोमती की मायो कह रही थी औरत का सुहाग पवित्तर हो तो कोई कुछ नहीं बिगाड सकता। जिउजी ने झुककर जिउजा के पाँव गोद म भर लिय। फिर उन्ह भौंहों स छुआया।

'क्या करती हो!

तुम्ह क्या पता कितना बोझ है मेरे दिल पर! तुम्हारी बम्मारी ने ता घुन लगा दिया है मेरी जान को। वो ऽ हरी गोली खायी थी तुमन दोपहरी म ?"

हाँ ले ली थी मक्खन के साथ। बहुत कडवा सुवाद है गोली का।

ऐसी खराब बम्मारी की गोली तो कडवी ही होगी। मनसा लाया है बाडमेर के किसी बद से। धरम का भाई हो तो ऐसा! बहुत चिन्ता रखता है तुम्हारी। मुझम पूछता रहता है।

भला है मनसा। हारी-बेम्मारी म ऐस लोग ही काम आते है।

ऊट खरीदना चाहता है वो। पूल अच्छे भाव बिक गये तो कुछ रुपय उस दे दूंगी।

दे देना। किसाण की आधी ताकत तो ऊँट मे ही होती है।'

तोऽऽ अब मैं पचात म जाऊ ? पटवारी को मनाना होगा किसी तरह नहीं तो खाता बिगाड देगा।

"हाँ, जाओ। देर न करो। इस काम को निपटाना ही है।"

जुगनी काढ़ा छान रही थी। धुएँ का धुंधला वातावरण में तैर रहा था। आकाश में तारों की जगमगाहट थी, मानो काँच के टुकड़े बिखेर दिए हों किसी ने। जिज्जी के जाने के बाद जुगनी राहत महसूस कर रही थी। मुन्नू ने पत्र खोल लिये थे। रह-रह कर पड़ोस का बढ़ई काठ में कुछ ठोका-पीटी कर रहा था। जुगनी परेशान थी इस बढ़ई से। दिन में तो वह आँगन में मारा मारा फिरता था पर ज्यों ही रात का परदा फैलने लगता उसका कसूखा राग उठता था। कभी उधर से कील ठोंकने की कभी आरी चलने की तो कभी गिर्री घरघराने की आवाज़ कानों को बधने लगती थी।

"एक चिलम भर दोगी मेरे लिए?"

जुगनी ने पुतलियाँ सिकोड़कर जिज्जा की तरफ देखा। उनके पैर एक दूसरे पर चढ़े हुए थे और हाथ घुटनों को खुजा रहे थे।

"तम्बाकू नुकसान करेगी। खाँसी उठ आएगी तुम्हारे।"

"तुम तो मेरी अम्मा बन गयी हो, जुगनी!" जिज्जा हँसे, फिर कुछ देर रुककर बोले, "तुम्हें पता नहीं है तम्बाकू का मज़ा लेने के लिए मैंने कैसे-कैसे करतब किये हैं।"

जिज्जा खाट पर बैठ गये। जुगनी ने तामचीनी के पियाले में काढ़ा उनकी ओर बढ़ा दिया और खुद खाट की पाटी पर टिक गयी।

"मैं अपने बाप की कोथली में से तम्बाकू चुरा लिया करता था। एक टूटी हुई चिलम की नलकी भी कहीं से हाथ लग गयी। वह जो घर के आगे नगुए का पेड़ है न, इस पर लंगूर की तरह टगर-टगर चढ़ जाता था और डालियों में छिप कर चिलम पिया करता था।"

"तभी तो आज यह हालत हो गयी है" जुगनी बड़ी-बूढ़ी औरत की तरह बोली। असल में जिज्जा से बतियाते हुए उसकी उम्र एकदम बढ़ जाती थी।

"कभी तम्बाकू नहीं मिलती थी तो मैं सरकंडे का पोला कर उसमें पीपल सीकर और सेजड़े के सूखे पत्तों का चूरा भर लेता था, फिर चाभी की तरह सुलगा कर पीता था।"

मुझे तो मिचली आने लगती है तम्बाकू की गंध से, सौ बुराइयों की एक जड है यह।"

'मैंने जिंदगी म जाने कितनी बुराइयाँ और कितनी अच्छाइयाँ देखी हैं जुगनी ! तुम्हे भी बहुत कुछ देखने को मिलेगा। यह दुनिया है ही ऐसी। किसी को बख्शती नहीं। सब पर थोडा-बहुत रग-रोगन लगा देती है।

'इस काढे को ठडा मत करो।"

पीता हूँ मेरी माई पीता हूँ !' जिज्जा गुनगुनाये हाय कितना गाढा बनाया तूने काढा ! और गट गट पी गये।

जुगनी हँस पडी। जिज्जा ने खाली पियाले को उसके सिर पर रख लिया और फिर बालो की चुटनी को पूँछ की तरह मरोड लिया।

'अई, क्या करते हो !' जुगनी ने चुटली छुडाकर आँखें तरेर दी।

जिज्जा बच्चो की तरह ताली पीट कर हा हा-हा करने लगे।

अच्छा अब तुम मुझे अम्मल की टिकडी दे दो कुछ देर बाद मैं सो जाऊँगा।'

नींद लाने के लिए जिज्जा इन दिनों अफीम खाने लग गये थे।

बार-बार अम्मल का नशा !'

अहो जुगनी ! इतनी तीन पाँच मत करो। नींद आने से खाँसी का जोर कम हो जाता है।'

जुगनी ने एक पोटली म से अम्मल की टिकडी निकाली और जिज्जा की हथेली पर रख दी।

अब अपना मुह बन्द !" कहकर जिज्जा ने टिकडी जीभ पर रख ली। फिर धीमे-से आह भरकर लेट गये और खेसले को फैलाकर ओढ लिया।

जुगनी अन्यमनस्क अपने म डूबी-डूबी दरवाजे की चौखट तक आयी और बाहर देखने लगी। चाँद उग आया था और उसके उजास ने ढाणी के कच्चे पक्के घरो पर एक पीली चादर डाल दी थी। हमेशा की तरह विस्मय से भर कर जुगनी ने चाँद की डयोढी पर नजर डाली—भूरा दाढी वाला बूढा वहाँ बैठा था और ढेरा कात रहा था। माँ कब मरी जुगनी को याद नहीं पर बापू का चेहरा उसकी स्मृति म टगा हुआ है

धुंधला-सा। उनके भूरी दाढ़ी थी, छाती तक लहराती हुई। ठुड्डी पर कंघी काढ़कर वह दो लटों को अलग छाँट लेते थे और फिर गूँथकर मानो वे गिरह लपट रखते थे। जिज्जा ने एक बार चाँद को देखकर बताया था, तुम्हारे बापू अब चाँद की ड्योढ़ी पर बैठते हैं और 'ढेरा' कातते हैं। जुगनी ने बापू को ढेरा कातते हुए देखा था, इसलिए जिज्जा की बात पर विश्वास कर लिया था। वैसे वह जानती थी, जिज्जा बहुत-सी बातें उसे खुश करने के लिए कह देती हैं यों ही। ममसरी करने की उनकी आदत है। एक रोज बोलीं—तुम बड़ी होकर खूब सुंदर निकलोगी।"

जुगनी मुसकरायी, जिज्जा जोतसी हो गयी हैं क्या, जो आगा-पीछा बतला देती हैं? हुँह, खूब सुंदर निकलोगी! सिराम का छोकरा बित्तू तो जब-तब ठेंगा मार कर चिढ़ा देता है— गोरी गोरी गोरकी गँवार बनके डाल र!' बित्तू को जवाब दिया था एक दिन, जुगनी ने— 'गोरी तो मेरी जिज्जी हैं, दूध भी मैला लगे उसके सामने!" बित्तू ने त्योरियाँ चढ़ाकर कहा था—गंदी है तुम्हारी जिज्जी एकदम छि छि—तुम्हें कुछ मालूम नहीं है।

उस वक्त तो जुगनी बासपट्टी लेकर बित्तू को मारने दौड़ी थी और वह हिरन की तरह कुलाँचे भरता हुआ भाग गया था, पर बाद में उसे लगा था कि चाहे ऊपर से दिखायी न दे, पर जिज्जी के भीतर गन्दगी तो है! जब कभी जुगनी को उस गंदगी का एहसास होता था घिन छूटने लगती थी।

चौखट पार कर जुगनी गली में—फिर जानवरों के बाड़े में आ गयी। गोबर और मूत की गंध ने उसे घेर लिया। एक गाय तनिक कसमसा कर रंभायी और कान उठाकर जुगनी को देखने लगी। एक जगह जुगनी फिसल कर गिरते गिरते बची। पाँव तले की माटी गीली और रपटन भरी थी। जोर से एड़ी लगने पर कुछ छींटे घाघरे की पटलियों और पिंडलियों को भिगो गये।

जहाँ भूसे के बोरे पड़े थे, जुगनी एक जगह अनमनी सी बैठ गयी। कितना-कुछ उसके अंतस में घुमड़ रहा था। एक लहर के बाद दूसरी लहर उठ—

आती थी। एक आवाज के बन्द होते ही दूसरी आवाज कलेजा चीरने लगती थी। एक दृश्य मिटता था और दूसरा दृश्य उस मद भरे माहौल म कई-कई छायाओं को समेटकर थरथराने लगता था। जिज्जा न एक बार टोका था तू बहुत जल्दी सयानी हो गयी है जुगनी! सयानापन तकलीफ देता है।

नजदीक ही पुआल का ढेर था। उधर कुछ खटका हुआ। डोकों के टूटने और चरमराने के साथ खुसर-पुसर। जुगनी के जी म आया कि पूछे कौन है उधर पर अन्दर-ही अन्दर सब ओर से इतनी उदासीन थी वह कि चुपचाप ताककर रह गयी। बातचीत का एक टुकड़ा उछल कर आया—

यहाँ से मुझ यहाँ स चूमो! स्त्री का स्वर।

नीचे और नीचे हो जाओ।' हाँफते हुए पुरुष के शब्द।

चिट चिट चिट डोकों का टूटते रहना—टूटते रहना—टूटते रहना! फिर एक खामोशी और तेज-तेज साँसों की ढलान पर उतरते हुए दो पशु।

हरी गोली ले रहा है वो?'

हाँ।

सात दिन तक नशा रहे ध्यान रखना तुम।"

'ले लगा दो। उसे तुम पर भरोसा है।'

हफ्ते भर की बात है। माया के जंजाल से पिंड छूट जाएगा उसका।

तुम्हारे गुण गा रहा था। कह रहा था भला आदमी है।'

पुरुष हँसा अगले जनम म भी गुण गाएगा क्या?

स्त्री भी हँसने लगी फिर बोली 'पुआल चुभता है।

इधर आ जाओ। यहाँ सूखी दूब का कट्टा है।'

लोभ मत दो।'

'आओ तो सही।

नहीं, अब मैं थक गयी हूँ।

कुछ क्षण चुप्पी।

'अई नाचते क्यों हो! आ रही हूँ।

जुगनी को लगा, जैसे किसी ने उसका समूचा शरीर अलाव म झोंक

दिया है। अग-अग झुलस रहा है। आग की लपटो न उसके रोम रोम म गरम सुइयाँ चुभाना शुरू कर दिया है और वह मूरत बनी हुई है। सब-कुछ सह रही है। इतना ताप इतना अपमान इतना विष! नहो, वह कुम्हार के हाथो घडी गयी मिट्टी का पुतला नहीं है जिसे लगातार बिना बोले अगन म पकते रहना है। क्या वह कभी कुछ नही कर सकेगी? जिज्जी की दृष्टि म वह ज्यो-ज्यों सयानी बनती जा रही है, अपनी निगाह म गिर रही है। उसकी नस नस म तिलमिलाहट भर गयी।

"कौन है वहाँ पुआल के पास?"

जुगनी को आश्चर्य हुआ, अपनी आवाज पर—लेकिन यह भी महसूस हुआ कि भीतर कुछ जमकर सख्त-सा हो गया है।

पुआल के ढोक बजे। एक आदमी तेजी से बाड़े के बाहर चला गया। कुछ क्षणों के बाद औरत भी जाने लगी।

जुगनी ने पुकारा, "जिज्जी!"

औरत ठिठकी। फिर उसकी ओर मुडी।

"तू क्या कर रही है यहाँ?" जिज्जी के स्वर म भय था क्रोध था अटपटापन था।

"मैं तुम्हें ढूँढने आयी थी।" कहकर सहसा जुगनी को लगा कि उसके भीतर उठती हुई चिनगारियाँ यकायक बुझने लगी हैं और राख होती जा रही हैं।

"अच्छा घर चल!"

आगे-आगे जिज्जी थी पीछे-पीछे जुगनी।

दरवाजे से कुछ दूर, जिज्जी रुक गयी।

"जा तू परीडे से दो खाली घडे उठा ला। कुएँ से भर लाते हैं।"

"इतनी रात को?" जुगनी को ताज्जुब हुआ।

"सवेरे औरतो की बहुत भीड हो जाती है। बेकार की भिक भिक म कौन पड़े? अभी हम दोनो ले आएँगी पानी।"

जुगनी छप्पर म गयी और घडे लेकर लौट आयी।

कुएँ की ओर जाने वाला रास्ता गाँव के बीच म से कटता था। जुगनी ने देखा कि घरो म अभी 'जागर' की साग माय नहीं थे।

'चन्दरमा का ग्रहण है आज। मब जाग रहे हैं।' जिज्जी ने कहा।

'मैं भी देखूँगी ग्रहण।"

'ता ला घड़े मुझे द दे।"

जुगनी न सिर उठाकर देखा, थोड़े स हिस्से को छोड़ कर पूरा चाँद काला पड गया था। चाँदनी एकदम कजला गयी थी।

अधिक मत दखो उधर अपशकुन होता है।'

जुगनी ने पलकें झुका ली, पर तभी उसे खयाल आया बाप का उनकी भूरी दाढ़ी का छेरे' और कसाई का—सब कुछ गुम हो गया था।

'ग्रहण के बाद मौत जरूर आती है इस ढाणी म। जिज्जी कह रही थी पिछले दफे समदे का ताऊ मरा था। इस बार जाने किसकी बारी है।

जुगनी की पसलियों के नाचे मानो किसी ने चाकू रख दिया। वह काँप उठी। क्या मतलब है जिज्जी की इस बात का? मौत हरी गोली तो क्या इस बार जिज्जा ?

पुआल के पास कौन था मर साथ तुमने देखा था। जिज्जी के सवाल ने उसे फिर अस्त व्यस्त कर दिया।

'हाँ मनसा।'

कहना मत किसी स। जिज्जी की आवाज थरथरा गयी।

अच्छा नहीं कहूँगी।

अपने जिज्जा स भी नहीं। एक औरत को दूसरी औरत का भेद छुपा कर रखना चाहिए। कुछ बरसों बाद तुम सब समझ जाओगी।

कुआँ आ गया था। खेलिया के पीछे कुछ कोठडियाँ थी, जिनम अलग अलग घरों के रस्से पडे रहते थ। जुगनी न पूछा अपना रस्सा ल आऊँ?

'रुको जरा।

जिज्जी घड़े रख कर जगत पर बठ गयी।

जुगनी न कुएँ म झाँककर देखा घुप्प-अँधेरा था। दिन म पानी की गोल-गोल सतह चाँदी के थाल की भाँति चमकती हुई नजर आती थी। एक ढेला उठाकर जुगनी न कुएँ म डाल दिया। पल भर बाद गूंज ऊपर आयी—डब्बSSम!

एसा मत कर।" जिज्जी ने खीजकर कहा 'पाप लगता है।"

पाप! जिज्जी के मुह से यह सुनकर जुगनी को हँसी आ गयी।

"दाँत क्या निकाल रही है ?" जिज्जी चिढ़ गयी।

"तुम भी पाप-पुन मानती हो जिज्जी ?' जुगनी न दूसरा ढेला उठाकर ठहाका लगाया, 'मनसा तो तुम्हारा धरम का भाई ?'

मैंने बरज दिया था न तुम्हे कि यह बात कहना मत किसी से।" जिज्जी की चिढ़ गुस्से म बदल गयी।

'मैं और किसी से कहा, तुम्ही से कह रहो हूँ।"

'बकवास मत कर ज्यादा।

'सारा गाँव चरचा करता है तुम्हारी ? किसी से छुपा हुआ है कुछ ? जुगनी न ढेला फिर फेंक दिया कुएँ म। फिर पहले जैसी ही गूज हुई।

'मुझसे जबान लड़ाती है तू ?

'तुम जो कुछ कर रही हो वह गलत है। जुगनी की आवाज मे एक निर्णयात्मक दृढ़ता थी।

तो इस तरह पख निकल आय हैं तुम्हारे !' जिज्जी न दाँत पीसे, 'एक मिनट म ये रग-ढग ठिकाने लगा दूगी समझी !'

तुम अपन रग-ढग अच्छी तरह समझ लो जिज्जी !

झोंटा पकड़कर सात जूते लगाऊँगी चुड़ल ! मुझे तग मत कर।'

अडबड मत बोलो जिज्जी ! नहीं तो ।'

तू धमका रही है मुझे ?

जिज्जी फनफनाती-फुफकारती हुई जुगनी की ओर बढी। जुगनी भाग कर कुएँ की सेलियो के बीच जा खडी हुई।

मुझे मारने के लिए अगर तुमने हाथ चलाया तो तुम्हारे तन म कीडे पड़ेंगे कीडे ! सत्यानाश होगा !'

जुगनी दूर से मन की भड़ास निकाल रही थी। तभी उसने देखा कि जिज्जी उधर लपकी उसका एक पर चडस मे उलझा, वह गिरी और दूसर ही क्षण उसका शरीर समा गया कुएँ म। धम्म एक चीख की दम घोटती हुई वह गूज ऊपर आयी और फिर शान्ति। साँय-साँय सन्नाटा।

चन्द्र-ग्रहण

जुगनी को काठ मार गया। स्थिति के इस अप्रत्याशित मोड़ ने उसकी बुद्धि को कुंद कर दिया। फिर उसे लगा कि वह अपने-आप पर से नियंत्रण खोती जा रही है। जैसे कोई बेहोशी में नींद में चलता हो वह चडस के निकट जाकर कुएं में झांकने लगी। न कुछ दिखलाई दिया न कुछ सुनाई दिया। उसने चाहा कि किसी को पुकार या रोने ही लगे पर वह न रो सकी न पुकार सकी। भय और आतंक ने उसे जड़ कर दिया।

काफी देर बाद नशे की सी हालत में जब जुगनी घर लौटी तो जिज्जा और मनसा आंगन में खड़े बातें कर रहे थे।

जुगनी ने मनसा को जलती हुई निगाहों से देखा। हां अब वह स्थिर थी। उसकी खोयी हुई शक्ति शिराओं के सहारे फिर से जमा होने और खौलने लगी थी।

तुम यहां क्या कर रहे हो?' जुगनी इस तरह बढ़ी मनसा की तरफ मानो उसका मुंह नोच लेगी।

मनसा ने कोई उत्तर नहीं दिया अलबत्ता सहमकर एक कदम पीछे हट गया।

'मैं मनसा को बतला रहा था चन्दरमा और इस ग्रहण के बारे में।' जिज्जा बोले।

निकल जाओ इस घर से! जुगनी पगलाई हुई सी मनसा पर टूट पड़ी फिरर मनसा का कुर्ता फट गया।

आइन्दा तुम्हें देख भी लिया मेरे दरवज्जे की तरफ, तो याद रखना आंखें फोड़ डालूंगी। जिन्दा नहीं छोडूंगी तुम्हें! वह चिल्लायी फिर जमीन पर गिरकर बेतरह रोने लगी सब कुछ खत्म हो गया जिज्जा!'

चन्द्र ग्रहण पूरा हो चुका था। आसमान और धरती के बीच काजल का चूरा बिखर गया था। ढाणी में उठते हुए शोर और जुगनी की सिसकियों के उफान के बीच जिज्जा चुपचाप खड़े थे हमेशा की तरह अकेले और अनुपस्थित।

विस्फोट

कौए की एक खास आवाज होती है। लगता है जैसे उसके गले की बरहमी मे चीरती हुई बाहर निकली है। मैं उस आवाज को पहचानता हूँ मुझे बाबा का दोनो हाथो से कान पकडना और जमीन पर मत्था टेकना याद आता है। वह डर जाते थे। भरी दुपहरी मे किसी कौए की इतनी खुदगर्ज, खाली और एक तीखी नस मे सुई की तरह चमकती हुई आवाज का सीधे-सीधे बरदाश्त करना उनके लिए मुश्किल था। वह सोचते थे कुछ होने वाला है। एक अपरिचित अशुभ घटना पर जमी हुई काई की परत टूटने वाली है।

प्रेम करने के बाद मैं ज्यो ही नीचे उतरा और अपने-आपको सहने की कोशिश करने लगा मैंने वह आवाज सुनी लगा कि अभी कुछ देर पहले एक काला कौआ मेरे भीतर चोंच मार रहा था सहसा चीख कर उड गया है। शायद कुछ होने वाला है। खिडकी का आधा कपाट खुला था।

घने पेड। अनमने बादल और धूप के तिकोन फैलाव का एक लद्धड-सा दृश्य जबरन अदर घुस आया था। उसे देखते-देखते साँस लेना कठिन था। मैंने मुह फेर लिया। नही यहाँ कभी कुछ नही होगा।

वह वही पर थी ग्लानि के एक लबे क्षण की तरह पसरी हुई। चूल्हा के नीचे दवा हुआ तकिया निकाल कर उसने परे रख दिया। सुख के असदीय रोमाच का जो अतिम हिस्सा उसके शरीर से चिपका हुआ था, वह सदन की कारवाई में निकाल दिया गया और वातावरण पुन शात हो गया। उसकी आँखें अब मेरे चेहरे पर थी और मेरा चेहरा नय-पुरान जख्मों से इस कदर लथपथ था कि उसकी शिनाख्त करना मेरे लिए भी दिक्कत-तलब हो गया था।

मैं जानता था उन आँखो म भय लगा हुआ है। दरख्त की डाल पर लटकते हुए मुरदे को अपने कधो पर झेलने के बाद विक्रमादित्य की आँखो म भी यह भय लद गया था। आसपास के सवालो पर निरतर चुप रहने का अर्थ है मुरदे को ढोने की पुख्ता तयारी करना। वह अरसे से चुप थी और उस चुप्पी के सहारे असख्य कमजोरियो म बिखरे अपने नगे हिस्सो को ढँकने की कवनी से गुजर रही थी।

मैंने पुकारा शहरबानो!'

शहरबानो प्रेम करने के बाद पूरी तरह खामोश थी।

अपने अधूरेपन को खामोशी के पूरेपन म बद किया जा सकता है। खामोशी उस मतबान की तरह है जो।

सुनो!'

मतबान का ढक्कन ऊपर उछला। मैं इतजार करने लगा।

'नही कुछ नही।" वह फिर कोसो दूर हो गयी।

समय का नग और भद्दे शरीरो का कपडो से ढँकना गया।

अक्सर सब कुछ यू ही बिना किसी फैसले के निरर्थक हो जाता है, मैंने कमीज के बटन बद करते हुए सोचा और उसे स्कर्ट का कमरबद कसते हुए देखने लगा। यह देखना अपनी आँखो का अधेपन की ओर ले जाना था। नजर के सामने हर नुक्ता साफ था फिर भी सब-कुछ न होने के बराबर था।

तुमने कभी मुरदा नही ढोया?

'नही।' शहरबानो की आवाज फँसी हुई थी।

ढो सकती हो?'

"नहीं।" मैं इस जवाब से वाकिफ था। वह माँ बना से डरती थी क्योंकि उसे अपनी माँ से सख्त नफरत थी।

उसी रोज जब शाम का अखबार हाथ में आया, तो मुखपृष्ठ पर प्रकाशित बड़े-बड़े अक्षरों वाली एक खबर ने मुझे चौंका दिया। एस०एम० गांगुली से विधानसभा में इस्तीफे की माँग की गयी थी। विरोधी दल उनके खिलाफ उमड़ पड़े थे। यही नहीं कांग्रेस के भी कुछ युवा विधायकों ने गांगुली के आचरण की कटु आलोचना की थी। कई गंभीर आरोप लगाये गये। कहा गया कि गृहमंत्री के रूप में गांगुली बनई असफल रहे हैं।

"पुलिस और असामाजिक तत्त्वों में स्नेह-संबंधों को बढ़ावा दिया है।"

"महँगाई और मिलावट को लेकर राजधानी में जो प्रदर्शन हुए उन्हें क्रूरता से कुचला गया। गांगुली ने स्वयं कुछ नौजवान नेताओं की सूची बनायी और गोली-कांड से पहले ही दिन किसी-न-किसी बहाने उन सबको भून देने का आदेश दिया।"

"ऐसे तथ्य मिले हैं जिनसे साबित होता है कि गांगुली को सेठियों, जमाखोरों और तस्कर-व्यापारियों से निश्चित धन मिलता है।

"पत्नी की मृत्यु के बाद गांगुली महोदय ने एक रखैल जन्नत बेगम को घर में डाल रखा है। वह सी० आई० ए० की एजेंट है।"

गृहमंत्री ने कुछ उच्च अधिकारियों को गलत प्रमोशन देकर मन माने ढंग से तबादले किये हैं।"

"लगभग तीन फर्लांग जमीन घेरकर गृहमंत्री आजकल एक आलीशान बंगला बनवा रहे हैं। वहाँ पहले झुग्गी झोपड़ी वालों की बस्ती थी पर उन्हें रातोंरात बदामल कर दिया गया। उनके बच्चों और कनस्तरों को उठा-उठाकर फेंक दिया गया। स्त्रियों के साथ सिपाहियों ने बलात्कार किया। एक खूबसूरत औरत को गृहमंत्री की खिदमत में भी पेश किया गया" आरोपों की एक लम्बी फेहरिस्त थी।

मेरी आँखों के आगे गांगुली का चेहरा उभर आया। आरोपों की बौछार में वह कैसा हो गया होगा? उसे लौहपुरुष कहा जाता रहा है और वह है भी ठस्स। कुर्सी पर सदा एक ही आसन में बैठता है। फर्श पर इस तरह धमकता हुआ चलता है मानो पाँव नहीं, मुगदर पटक रहा हो। तोप

की गडगडाहट म बोलता है। किसी भी फाइल हो, कितना ही बडा नोट लगा हुआ हो वह सिर्फ हाँ या ना लिखकर दस्तखत डाल देता है। वह बातें करते-करते सो जाता है और सोते-सोते मात्र बडबडाहट के द्वारा सैकडो मसले निबटा देता है।

मुझे सचमुच अफसोस होने लगा कि जब मैं शहरबानो के साथ कोतवाली के पीछे वाले क्वाटर मे प्रेम कर रहा था, तो विधान-सभा के बाहर हजारा छात्र 'गागुली मुर्दाबाद' के नारे लगा रहे थे।

शहरबानो को भी पता नही था। कूल्हा के नीचे तकिया रखने और देह की राजनीति का कुशल सचालन करने के बावजूद वह उस प्रबल विरोध से अनभिज्ञ थी, जिसका सामना उस वक्त उसके पिता को करना पड रहा था। वह आरामदह ढग से अपने कम फल को भोग रही थी और विधान सभा मे पिता अपने कम फल को।

छात्रो का वक्तव्य था कि गहमत्री इस वष दीक्षात-समारोह म ज नत प्रगम से भाषण कराना चाहते थ पर उपकुलपति ने यह मजूर नही किया। गहमत्री नाराज हो गये और ज्यो ही हडताल हुई उन्होने विश्वविद्यालय म पुलिस को प्रवेश का हुक्म दे दिया कल पुलिस न उपकुलपति का निवास जला दिया और कहा कि यह काम असतुष्ट छात्रो का है।

सदन म कहा सुनी होती रही। गहमत्री न स्पष्टीकरण देने से इनकार कर दिया। आखिर दबाव इतना ज्यादा बढ गया कि मुख्यमत्री को खडे होना पडा। उन्हाने शाति बनाये रखने की अपील की। विधानसभा के अध्यक्ष ने भी सदस्यो को मर्यादाओ का ध्यान दिलाया।

तभी अ दर समाचार पहुँचा कि छात्रो ने फाटक तोड दिया है और वे पुलिस का मुकाबला करत हुए अ दर घुसने का प्रयत्न कर रह है।

मुख्यमत्री घबरा गये। छत्तीस वर्षों म एसा कभी नहीं हुआ था।

उ ह लगा गद्दी गयी। वह बाहर आये और हाथ उठाकर छात्रो के उफान को रोकने लगे।

छात्र रुक गये। चिल्लाये उस बूढे को मन्त्रिमडल से निकालो।"

"कौन बूढा?"

गागुली! गागुली!

मुख्यमत्री मुसकराये। उन्होंने कहा, ' मैं आरोपो की जाँच कराऊँगा।"
'कोई जाच-वाच नहीं! गागुली—इस्तीफा दो!"
छात्रा का गुस्सा बढ गया।
"आरोपो को सही पाया गया तो मैं उचित कदम उठाऊँगा।"
"तेरे कदम की ऐसी-तैसी!'
' ओय भडवे, गागुली स इस्तीफा माग!"
"हम नया खून चाहते हैं!"
' मुख्यमत्री का—नाश हो!" एक नारा हवा मे फटा और मुख्यमत्री बुझ गये। एक पत्थर उनकी कनपटी के पास से निकला और उनके भीतर सनसनी फल गयी। मन ही मन उन्हान कुछ तय किया। तय करना जरूरी था। यह उबाल अब मुख्यमत्री के नाश की शक्ल ले सकता था। वह आगे आये, दो कदम आगे। पिंडलियाँ काँप रही थी।

"मुख्यमत्री—भाड मे जाओ!" छात्र चिल्लाये।

मुख्यमत्री ने ऐलान किया ' मैं जनमत का हमेशा सम्मान करता हूँ। गहमत्री गागुली अडतालीस घटे म इस्तीफा दे देंगे।"

छात्र एकता—जिंदाबाद!"

चौतरफ खुशी की लहरे मचलने लगी। जुलूस वापस मुड गया। सिपाहियों के सिर पर से लोहे के टोप उतार लिये गये और उन्हे डफली की भाँति बजाया जाने लगा।

यह हाल हवाल अखबार म खूब रग और रौनक लेकर छापा गया था। साथ में दो कार्टून थे—एक म, मुख्यमत्री गिडगिडाते हुए गागुली से इस्तीफे की याचना कर रहे थे। दूसरे म, जन्नत बेगम गागुली के इस्तीफे का पान की तरह फैलाकर चूना और कत्था लगा रही थीं।

मैं जब बँगले का दालान पार करता हुआ दरबारे-खास म पहुँचा तो वहाँ दोनो कार्टून मौजूद थे। रात अँधेरे म जाग रही थी। मुख्यमत्री कर पात्र फलाये त्यागपत्र की भिक्षा माँग रहे थे गागुली महाशय स। जन्नत बेगम पानदान खोल अँगुली पर लगा हुआ गुलकद चाट रही थीं। उन्होंने मुख्यमत्री से पूछा, "आप कैसा पान लेंगे?'

मुख्यमत्री के गले म घरघराहट हुई ' इस्तीफा दे दो।"

मुझे देखते ही गागुली ने तोप छोडी, शहरवानो कहाँ है ?'

मैंने एडिया मिलाकर सल्यूट मारा। इस वक्त मैं वरदी म था। जूतो की आवाज रात के सन्नाटे म गूज गयी।

तुम शहरवानो की जिंदगी बरबाद कर रहे हो !"

मैंने कोई उत्तर नही दिया। शायद वह सही था एक पिता के रूप म। शायद मैं गलत था एक प्रेमी की भूमिका म।

कौन किसी की जिंदगी बरबाद करता है ! ' जन्नत बेगम ने गागुली को झिडका 'तुम खामखा गुस्सा हो जाते हो ! शहरवानो भीतर है। वह तो हफ्ते भर से कहीं गयी ही नहीं। कहती है बेचारी मुझे तो घर ही अच्छा लगता है।'

मैं चकराया। जन्नत बेगम की आवाज सपाट थी। उसमे कुछ तलाशना कठिन था। मुझे अपने पर अविश्वास होने लगा। भरी दुपहर मे मैं किसके साथ सोया था ? क्या वह शहरवानो नही थी ?

विषयातर मत करो। मुख्यमत्री अभी भी ऐसे बोल रहे थे जसे विधानसभा का माइक सामने हो त्यागपत्र तो तुम्हे देना ही होगा, गागुली ! यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है !

तुम्हारी कोई प्रतिष्ठा नही है !" गागुली ने धमका दिया।

' ऐसा मत कहो मैं मुख्यमत्री हूँ !"

मेरे साथ अट्ठावन विधायक है। अगर मैं तुम्हे समथन देना बद कर दू तो कल से तुम मुख्यमत्री नही रहोगे ! '

हाई कमान के लोगो का मुझ पर भरोसा है।

मैं उन लागो को अपने अडरवियर म रखता हूँ !'

मुख्यमत्री खिसिया गये और ही ही करने लगे।

जन्नत बेगम ने फिर पूछा आप कसा पान पसन्द करेंगे ?'

वह बोले, "इस्तीफा दे दो इसी मे हम सबका हित है।'

तुमने मेरा अपमान किया है ! तुमने मुझसे बिना पूछे मेरे इस्तीफे की घोषणा कसे कर दी ? गागुली के नथुने फूल गये, 'अब मैं तुम्हारा अपमान करूँगा !

जन्नत बेगम का दुपट्टा नीचे खिसक गया और पेट का फुलाव औंधे घड़े की भाँति झाँकने लगा। वह पूरे महीनों पर थी।

मैंने अचकचा कर जन्नत बेगम की बड़ी बड़ी आँखों में कुछ ढूढ़ना चाहा वैसा ही भय जो शहरयानो की आँखों में था। नहीं, जन्नत बेगम निश्चिंत थी। कोई चिह्न नहीं था वहाँ। न खतरा न खौफ। जब शहरयाना माँ बन जायेगी, तो वह भी इसी तरह बेखबर और बेखयाल हो जायेगी, मैंने सोचा हालांकि यूं सोचना बुरा लगा।

'मेरा अपमान प्रजातन्त्र का अपमान होगा!

मैं जब चाहूँगा प्रजातन्त्र की ऐसी तैसी कर दूंगा! वह मेरा क्या उखाड़ लेगा? मैं तो लौहपुरुष हूँ!'

तुम अब बूढ़े हो गये हो! अब तुममें वह बात नहीं रही!" मुख्य मन्त्री ने भी पैतरा बदल लिया।

'क्या बात नहीं रही?

पहले वाला दबदबा नहीं रहा तुम्हारा।"

'मेरे पास पुलिस का महकमा है। जब पब्लिक के सामने तुम्हारी लीद निकलने लगती है तो मेरा ही विभाग आगे आता है और एक एक जन के सिर को तीन तीन बार फोड़ता है।'

'मैंने दिल्ली बात की है। कुछ रोज ठहर कर वे तुम्हें केन्द्र में ले लेंगे। वहाँ बूढ़े लोग चल सकते हैं।"

'लेकिन बूढ़ा है कौन?"

"छात्र तुम्हें बूढ़ा कह रहे थे। उनकी माँग थी कि अब नये खून को मौका मिलना चाहिए।'

'तुम्हारी उम्र क्या है?'

'छियालीस बरस।'

मैं अड़सठ साल का हूँ। मुझसे पंजा लड़ाओगे? अभी पता चला जाता है कि कौन जवान है? कहकर गांगुली ने दायाँ हाथ आगे बढ़ा दिया। जन्नत बेगम मुसकरायीं। शहरयानो की मुसकराहट में यह नरमाई और गरमाई क्या नहीं है? मैंने सोचा और उसकी एक बात याद कर कि 'तुम मेरी माँ पर मरते हो उस रंडी पर' चुपके-से हँस दिया। मुख्यमन्त्री

गांगुली ने पर्चे को देखकर पसीने म नहा गये।

यह पर्चा ही फ़ैसला करेगा कि इस्तीफा मुझे देना है, या तुम्हें!" गांगुली गुर्राया।

"चोप्प!"

तभी एक दबा-सा स्वर सुनाई दिया पर वह अजीब और भयानक था मानो दीवार की इटें घिसवाकर फूटा हो।

'कौन है?" गांगुली ने मेरी ओर देखा, 'दरवाजे पर इतनी रात गये कौन आवाज दे रहा है? जाकर देखो और टाल दो, सुबह ही मुलाकात हो सकेगी।'

मैं चलने लगा कि फिर वही स्वर उछला "रुको, मैं यहीं हूँ!"

कौन है यह अहमक!" गांगुली गरजा और पर्चा समेट कर इधर उधर देखने लगा। मुख्यमन्त्री ने राहत की साँस ली।

'यह आवाज मेरे भीतर से आ रही है। जन्नत बेगम ने हकलाते हुए कहा, 'मेरे पेट म से!"

गांगुली चौंका फिर उछल कर पेट के ठीक सामने खड़ा हो गया।

यूँ घूर घूरकर क्या देख रहे हो बे लौहपुरुष!" वही स्वर सुनाई दिया मैं अभी गर्भ म हूँ। बाहर आऊंगा तब तुम्हारी हुलिया दुरुस्त करूँगा!'

जन्नत बेगम काँपती हुई अपना पेट सहला रही थी।

कौन हो तुम? गांगुली चीखा। उसने मुट्ठियाँ तान ली।

'अगर तुम मेरी माँ को तंग न करो तो बतला दूं?'

'हाँ, हाँ, बोलो!"

'मैं मुख्यमन्त्री का लड़का हूँ!' इस बार स्वर म व्यंग्य का पुट था 'रखैल रखने से ही कुछ नहीं होता, समझे!

जन्नत बेगम बेहोश हो गयी।

'आग लगे तुम्हारे इस अड़ियल बुढ़ापे म! गर्भस्थ बच्चे ने कहा, 'तुमने मेरी माँ की जवानी मिट्टी म मिला दी! अब खच्चर, इस्तीफा दे रहे हो कि कुछ और कहूँ?'

गांगुली भौंचक गया उसने इस्तीफा लिखकर मुख्यमन्त्री को दे दिया।

गिरती हुई वर्फ

तब वह उसके चेहरे का रंग बुझे कोयले सा हो गया और माथे की बायीं ओर सीधी खड़ी हुई नस ज़ोर ज़ोर से फड़कने लगी।

असल में वह निरन्तर बढ़ती थकान के दबाव में आकर ऊबने लगा था। उसने हाथ-पावों में सूखे पत्तों की चरमराहट-सी टूटन और उदासी महसूस की। दिल में धीरे धीरे कोई जलती हुई चीज़ घर कर रही थी। वह आँखें बन्द कर सुस्ताने लगा। "बचने के लिए कोई रास्ता नहीं है" उसने कहा।

यह दुपहर की बात है। आकाश में बादल छा रहे थे और वह गर्म गर्म समोसे खाकर कैंटीन से लौट रहा था। काफ़ी की भाप उसके शरीर की जकड़नों को आहिस्ता आहिस्ता खोल रही थी। वह अपने ढंग से खुश था।

"बारिश नहीं होगी मैं शर्त लगा सकता हूँ।" साथ चलते हुए वर्मा ने सिर हिलाकर कहा। फिर उसने अपने गोल-गोल नथुने फड़फड़ाये।

वह रोज़ की तरह तटस्थता से मुसकराया। उसे मालूम था, वर्मा किसी भी बात पर शर्त लगा सकता है।

कमरे में घुसा तो मेज़ के पास चपरासी फोन पकड़े खड़ा था।

और परेशानी से उसका चेहरा गरदन से अलग होकर फूल आया था।

'क्या बात है ?" उसने लापरवाही से पूछा और फोन ले लिया।

'हलो, हलो हाँ, मैं राठी बोल रहा हूँ।"

बड़ी बुरी खबर है सा'ब' —यह उसके पड़ोसी की आवाज़ थी चिथड़े की तरह तार-तार फटी हुई, 'गुसलखाने मे आपकी बीवी मरी हुई पड़ी है। जितनी जल्दी हो सके आप घर आइये।

'मुझे पता था, वह एक दिन आत्महत्या कर लेगी।" कहते वक्त उसका स्वर जरूरत से ज्यादा ठडा था।

'क्या कहा ? आपको पता था ? उधर से प्रश्न उभरा।

उसने फोन रख दिया। फिर चुपचाप खड़ा होंठ काटता रहा। चपरासी थर थर कॉप रहा था।

गुसलखाने के दरवाजे पर पुलिस के आदमी जाँच-पड़ताल कर रह थे। मुहल्ल के और भी लोग जमा हो गय थे। उसने उनके कधो पर से उचक कर देखा, पत्नी घुटने मोडकर बड़े असभ्य ढग स पड़ी हुई थी।

'ज़हर खा लिया है।" किसी ने उसके कान म कहा।

अचानक आहट हुई। वह आँखें खोलकर चारो तरफ देखने लगा। बरामदे म एक छोटा सा बल्ब जल रहा था। बाहर अधकार काफी गहरा हो गया था, शायद पानी भी पडने लगा था। उसे बन्ना की याद आई। वह हसा। तभी उसन थोडी दूर पर एक सिपाही को चहलकदमी करते हुए देखा। वह उठा। उसके पास गया।

क्या बात है ? सिपाही ने तीखेपन स पूछा फिर उस पहचान कर बोला, लाश पोस्टमाटम के लिए गयी है।

वह पराजित और अपमानित-सा लौट आया। गले म टाई की गाँठ कसने लगी, वह उस खींचकर ढीली करने लगा।

हफ्ते भर पहले एक शाम पत्नी ने उससे पूछा था, 'तुमने बर्फ को गिरते हुए देखा है ?

वह चौंक गया। चेहरे का पसीना पोंछते हुए बोला, 'नही।"

उसन लिखा है कि आजकल यहा बर्फ गिर रही है।" पत्नी खिडकी से बाहर खजूर का पेड देखने लगी।

'किसने ?' किसने लिखा है ?"

उसने तेज़ी से पूछा। पत्नी ने कोई जवाब न दिया। वह कुछ सोचने लगा।

'क्या श्याम का पत्र आया है ?'

"हां।' पत्नी खोयी-सी बुदबुदायी।

श्याम उसका एक मित्र था जो पिछले साल छुट्टियों में उसके पास रहने के लिए आया था। वह अक्सर शिमला के बारे में बातें करता और विस्तार से बताता कि वहां रहकर उसने अपनी कम्पनी को कितना मुनाफा दिया है। पत्नी से उसकी खूब पटने लगी थी।

रात को पत्नी की नींद टूट गयी। वह हड़बड़ा कर अपने बिस्तर पर उठ बैठी और सब तरफ घूर घूर कर देखने लगी। उसकी लम्बी-लम्बी सांसें सुनकर वह जाग गया था और चुपचाप उसकी ओर देख रहा था। सहसा वह चीखी, 'देखो, बर्फ गिर रही है।'

"कहां ?' उसने पूछा।

'यहां।" पत्नी ने दोनों बिस्तरों के बीच में छूटे फासले की तरफ इशारा किया।

'क्या सचमुच तुम्हें यहां बर्फ गिरती हुई दिखलाई दे रही है ?

"हां।' उसने डूबते हुए स्वर में कहा और सीधी लेट गयी।

दूसरे दिन जब वह दफ्तर जाने के लिए तैयार हो रहा था, उसने देखा कि पत्नी नाखूनों से दीवारों का रंग खुरच रही है। वह कभी बैठक में दौड़कर जाती कभी सोने के कमरे में।

'क्या कर रही हो ?' उसने हैरान होकर पूछा।

'यहां बर्फ चिपकी हुई है।" पत्नी ने दीवार के प्लस्तर को बुरी तरह उखाड़ते हुए कहा।

एक अधेड़ औरत रोती हुई उसके पास आयी और फर्श पर बैठकर सिसकने लगी। उसने साड़ी से मुंह ढंक रखा था। वह दुविधा में पड़ गया। उसकी इच्छा उस औरत से बात करने की होने लगी। वह कोई सुराग खोजने लगा। तभी औरत ने मुंह पर से कपड़ा हटाया और उसकी तरफ गहरी हिकारत से देखा। वह डर गया और दूसरी ओर देखने लगा।

औरत उसकी पत्नी की माँ थी।

जब उसे पूछताछ के लिए अन्दर बुलाया गया, वह एक कटी हुई टाँगवाले मेंढक की तरह छटपटाने लगा था। हाल में आठ-दस आदमी थे। उन्होंने मटक मटक एक साथ कई सवाल किये।

वह हक्का-बक्का रह गया। फिर उसने आगे के दाँतों से होंठ चबाते हुए कहा, "क्या आप लोगों ने बर्फ का गिरना देखा है? हाँ, यह सच है कि गिरती हुई बर्फ को रोका नहीं जा सकता।"

घाव

खाने म चाबी घुमाते समय उसे लगा कि नल खुला रह गया है। फर्श पर टप-टप पानी गिरने की आवाज हो रही है। किवाड़ो को धकेलता हुआ वह तेजी से अन्दर गया।

रौशनी करने के बाद बहुत ध्यान से उसने सब ओर देखा। मेज पर रखे बेतरतीब कागजो के साथ एक भारी भरकम किताब पड़ी थी। वह इन दिनों भाषा विभाग के सक्रेटरी की मेहरबानी स रूसी पुस्तकों का अनुवाद कर रहा था—'मयेरस्क्या लितिरतूरा'। कोने म स्टोव बाल्टी चारपाई के नीचे पुराने जूते, अखबार की रद्दी, मैले कपड़े दीवार पर काले फ्रेम म जड़ी हुई उसकी तस्वीर—वह बी० ए० की डिग्री हाथ म थामे जबरन मुस्कराने की चेष्टा कर रहा है आँखें बाहर निकल आई है और मोटे होंठ कनपटियों तक फैल गये हैं।

कमरा बन्द कर वह सड़क पर आ गया।

आसपास के मकान एक जैसे ही थे। उनका अलग कोई रंग नहीं था। उड़ती हुई धूल धूप से गँदला गयी थी और उसने समस्त वस्तुओं से एक अविश्वसनीय सम्पर्क स्थापित कर लिया था।

ोछे स हान सुनकर वह ठिठका, फिर किनारे की तरफ हटकर चलने

ादियो से भरी हुई जस की गाडी उसकी बगल से गुज़र गयी। एक
त्तेजित घरघराहट को उसने कुछ देर तक विरक्त भाव से महसूस
वह उन लागा के बारे म सोचने लगा जो गाडी म बैठे हुए थे
ाँह पहचानने की दृष्टि स देखा था क्या सज़ा पाय हुए व्यक्तियों
: एक से होते है ? शायद हाँ नही लो ?
ही ग्रामोफोन बज रहा है। घिसे हुए रिकाड पर सुई अटक-अटक
ा रही है। उखडा उखडा स्वर सगीत ।
मने से पोस्टमन को आते हुए देखकर वह बेचन हो उठा। पहले
ा चिट्ठिया का इन्तज़ार करता था। कितन ही दोस्त थे । अब तो
ार भाभी की दो चार पक्तियाँ आती हैं। वही पूछताछ नौकरी
नही ? शादी के बारे म क्या सोचा ? इस तरह कब तक चलगा ?
टमन अपना थैला घसीटता हुआ दूर निकल गया तो उसन राहत
ली।
ज़ियम की लाल इमारत गम रेत स ढँकी हुई ऊघ रही थी और
मनहूस पष्ठभूमि म रामनिवास बाग क लम्बे दरख्त थे। भरी
ास पर सार्गे भरता हुआ पतझर और मुडा-तुडा स नाटा
ा काव-कांव करता हुआ अजमेरी गेट की तरफ चला गया चन्द
बाद एक कौवा उसी दिशा म पख फडफडाता हुआ उड गया ।
और थकान से हहूकर वह एक पेड की छाया मे बैठ गया। ठेले
ले को उसने इशारे से बुलाया।
ा लाऊ साब ?'
छ भी। वह मुश्किल से कह पाया। गला सूख रहा था।
ी बडे आलू छोले गोल-गप्प ? '
छ भी। उसन खीजकर कहा।
ेरा सकपका गया।
: की झाडियो के नज़दीक एक बूढा मूज की टोकरियाँ बुन रहा
ी छोटी रस्सियाँ। पानी म भिगो भिगोकर वह उनम गाँठें

लगाता। तीलियाँ जोन्ते वक्त उसको बड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी। हथेलियाँ काँपने लगती, साँस फूल जाती और बिना दाँतों वाला मुँह पिच पिचा उठता।

लू शरीर झुलसाने लगी थी। पीले पत्ते इधर-उधर उड़ रहे थे।

जल्दी जल्दी पेट भरकर उसने पैसे चुकाए। जीभ पर तेज मिर्च का स्वाद था। आँख-नाक रगड़ता हुआ वह पीठ के बल लेट गया।

क्षण भर के लिए उसके मस्तिष्क में एक विचार आया यदि वह गीता से शादी कर लेता तो आज उसके पास एक बीवी और तीन बच्चे तो जरूर होते। करवट बदलकर उसने बूढ़े की तरफ देखा। वह चुपचाप सिर झुकाए टोकरियाँ बुन रहा था। उसकी आधी खोपड़ी गंजी थी और कानों के निकट सफेद बालों के दो गुच्छे थे।

एक-दो-तीन चार वह गिनने लगा। बूढ़े ने चार टोकरियाँ तैयार कर एक तरफ रख छोड़ी थी। पाँचवी टोकरी के लिए वह मूंज काट रहा था।

लेटे-लेटे वह अपने कुछ सपनों को याद करने लगा, जो अक्सर उसे परेशान करते थे। एक श्वेत वस्त्रधारी साधु था जो नींद के पहले दौर में ही उसके सिरहाने आ खड़ा होता और क्रोध में भरकर गालियाँ बकता रहता। उसकी आँखें धधकती रहती। अधिक उत्तेजित होने पर वह उसके मुँह पर थूकने लगता। एक पहाड़ उसमें एक गुफा। वह उस गुफा में घंटों चलता जाता। उसका कहीं अन्त नहीं था। बार-बार वह किसी चीज की झनझनाहट सुनता जैसे काँसे की थाली ऊपर से गिर पड़ी हो या कोई नाचता हुआ रुक जाता हो और फिर नाचने लगता हो।

एक औरत उसके समीप आकर बैठ गयी। गर्मी से उसके चेहरे पर हल्का सा तनाव था।

वह अधखुली आँखों से औरत का मुआयना करने लगा।

तम्बाकू सा रंग। पसीने से तर छींट के कपड़े। उसका दम फूल रहा था। काफी दूर से चलकर आयी होगी।

वह पेड़ के तने से टिककर बैठ गया। उसे प्यास लगी थी। ठेलेवाले छोकरे से उसने पानी माँगा। वह गिलास ले गया।

औरत ने खखार कर उसकी तरफ देखा। फिर उसन टखनो तक साडी उठाई। उसके पांवो मे कई ताजे घाव थे। उन पर खून चिलक रहा था।

वह एकटक उसकी तरफ देख रहा था।

औरत धीमे से हसी। बोली, "दाद हैं। साल भर हो गया, ठीक नही हो रहे।'

इनमे खुजली होती होगी ?" उसने जसे पूछने के लिए पूछा। उसे इस औरत से घिन हो रही थी।

वह घावो को खुजलाती हुई बोली, "खुजली ? हाँ, खूब होती है।"

बूढे ने छ टोकरियाँ बना ली थी। लाठी के सिरे पर उन्हे लटकाकर वह खडा हो गया और उबासियाँ लेने लगा। उसके पोपले मुह के लाल मसूडे अजीब ढग से हिल रहे थे।

मुहनी !" बूढे ने खरखरे कठ से पुकारा।

"क्या है ?' औरत ने तीखेपन से जवाब दिया।

चलोगी नही ? बूढा चलकर उसके नजदीक आ गया।

कहा ?' औरत ने घावो को नाखूनो से सहलाते हुए प्रश्न किया।

घर बूढे का स्वर सधा हुआ था।

औरत ने साडी नीची की और खडी हो गयी।

वह उन दोनो को जाते हुए देखता रहा। औरत आगे आगे थी, बूढा पीछे।

धुधला-सा सूरज आसमान मे लुढकने लगा था। वह अनमना-सा खडा हो गया। पांवो के चप्पलो को सीधा करते हुए उसे औरत के घावो का खयाल आया। बहुत चाहकर भी वह बूढे के चेहरे का कोई स्पष्ट चित्र अपने मस्तिष्क मे न बना सका। अचानक उसे लगा कि वह उस औरत के चेहरे को भी भूल गया है।

सत्यवान

मैं बड़ी देर से आँखें खोले पड़ा था, हालाँकि एक पीले परदे के सिवा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। कभी वह दूर हट जाता था, कभी एकदम पास आकर धीमे-धीमे हिलने लगता था।

'तुम्हें आक्सीजन दी गयी थी।'

किसी ने कहा। आवाज़ जानी-पहचानी थी।

किंतु—मैं तो ऊपर उठ रहा था। हवा में। पंख-सा हल्का होकर।

याद आया, बचपन में बंगाल देश के एक जादूगर का करिश्मा देखा था। उसने उन्नीस-बीस साल की लड़की को शून्य में अधर टाँग दिया था। ज़मीन से दस-बारह गज़ ऊँचाई पर। लोग मुँह बाये एकटक ताकते रह गये थे।

'चुप क्यों हो? मुझसे बातें करो।'

सामने एक औरत। भरा-भरा गोरा चेहरा। तीखे नाक-नक्श और ताज़ा उँडेलती हुई मुस्कराहट। ओह, यह तो कपिला है! उस खास मुस्कराहट की वजह से वह तुरंत पहचान में आ गयी। लेकिन मैं उसे भूल कैसे गया?

औरत ने खँखार कर उसकी तरफ देखा। फिर उसने टखनों तक साड़ी उठाई। उसके पाँवों में कई ताज़े घाव थे। उन पर खून चिलक रहा था।

वह एकटक उसकी तरफ देख रहा था।

औरत धीमे से हँसी। बोली, "दाद है। साल भर हो गया, ठीक नहीं हो रहे।"

'इनमें खुजली होती होगी?' उसने जैसे पूछने के लिए पूछा। उसे इस औरत से घिन हो रही थी।

वह घावों को खुजलाती हुई बोली "खुजली? हाँ, खूब होती है।"

बूढ़े ने छः टोकरियाँ बना ली थीं। लाठी के सिरे पर उन्हें लटकाकर वह खड़ा हो गया और उबासियाँ लेने लगा। उसके पोपले मुँह के लाल मसूढ़े अजीब ढंग से हिल रहे थे।

मुन्नी!" बूढ़े ने खरखरे कंठ से पुकारा।

'क्या है?" औरत ने तीखेपन से जवाब दिया।

'चलोगी नहीं? बूढ़ा चलकर उसके नज़दीक आ गया।

'कहाँ?' औरत ने घावों को नाखूनों से सहलाते हुए प्रश्न किया।

'घर' बूढ़े का स्वर सधा हुआ था।

औरत ने साड़ी नीची की और खड़ी हो गयी।

वह उन दोनों को जाते हुए देखता रहा। औरत आगे-आगे थी, बूढ़ा पीछे।

धुँधला-सा सूरज आसमान में लुढ़कने लगा था। वह अनमना-सा खड़ा हो गया। पाँवों के चप्पलों को सीधा करते हुए उसे औरत के घावों का खयाल आया। बहुत चाहकर भी वह बूढ़े के चेहरे का कोई स्पष्ट चित्र अपने मस्तिष्क में न बना सका। अचानक उसे लगा कि वह उस औरत के चेहरे को भी भूल गया है।

सत्यवान

मैं बड़ी देर से आँखें खोले पड़ा था, हालांकि एक पीले परदे के सिवा कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। कभी वह दूर हट जाता था, कभी एकदम पास आकर धीमे धीमे हिलने लगता था।

'तुम्हें आक्सीजन दी गयी थी।'

किसी ने कहा। आवाज़ जानी-पहचानी थी।

किंतु—मैं तो ऊपर उठ रहा था। हवा में। पंख-सा हल्का होकर।

याद आया, छुटपन में बंगाल देश के एक जादूगर का करिश्मा देखा था। उसने उन्नीस-बीस साल की लड़की को शून्य में अधर टाँग दिया था। ज़मीन से दस-बारह गज ऊँचाई पर। लोग मुँह बाये एकटक ताकते रह गये थे।

'चुप क्यों हो? मुझसे बातें करो।'

सामने एक औरत। भरा भरा गोरा चेहरा। तीखे नाक-नक्श और सवाद उछलती हुई मुस्कराहट। ओह, यह तो कपिला है! उस खास मुस्कराहट की वजह से वह तुरंत पहचान में आ गयी। लेकिन मैं उसे भूल कैसे गया?

'डॉक्टर ने कहा है होश में आते ही कह देना।'

वह मर गन में कुछ डाल रही थी। चम्मच से।

उसकी आँखों में उदासी थी। घनी पलकों में दुःख की छायाओं को उतारा गया था। वैसे उसका बनाव सिंगार हमेशा की तरह अपनी चुनी हुई जगहों पर कायम था और कोटा डोरिया की फूलदार साड़ी से एक विलायती महक फूट रही थी।

मैंने हँसना चाहा पर अन्दर मितली घुमड़ने लगी और एक कुहराम को कोई दावत देते हुए मैं कै करने लगा।

थोड़ा-सा कफ गिरा। मैं हाव-होव करता रहा। और कुछ भी था नहीं मेरे भीतर उगलने के लिए।

हाँफता हुआ तकिये पर ढेर हो गया।

साँस तेज़ी से चल रही थी और उतनी ही तेज़ी से मैं सब चीज़ों को एक जगह इकट्ठा कर साफ साफ जानने-समझने की चेष्टा कर रहा था।

नर्स आयी। गील भाप भरे तौलिए से उसने मेरा मुँह पोंछा।

'मैं अस्पताल में हूँ और अभी तक ज़िन्दा हूँ।' इस ख़याल ने चींटी की भाँति रेंग कर मुझे एहसास कराया फिर अपने नुकीले पंजे चुभा दिये। मैं तिलमिला उठा।

'वो ऽ ' आये थे।' कपिला ने धीमे से कहा।

कौन ? मैं पूछना चाहता था पर होंठ हिले तक नहीं। शायद निगाह में सवाल खिंच गया था, इसलिए कपिला ने उसका उत्तर दिया।

'उद्योगमन्त्री जी।'

एकाएक मेरे रोम रोम में सुइयाँ चुभ गयीं। मैं करवट बदलना चाहता था, लेकिन लगा कि भय ने समूचे शरीर को बर्फ़ की भाँति जमा दिया है। कुछ नहीं हो सकता था। मैंने जैसे बिल्ली को सामने पाकर कबूतर आँखें मूँद लेता है और स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है वैसे कर पलकें भींच लीं।

'वो तुम्हारी तबीयत जानने आये थे।'

कपिला का स्वर कई छोरों में बँट गया था।

'कितने व्यस्त रहते हैं वो ऽऽऽ, लेकिन यहाँ आने की तकलीफ

उन्होंने उठायी यह उनकी कृपा है, उदारता है।'

लॉंग प्लेइंग रिकार्ड की तरह कपिला ने उद्योगमंत्री के आगमन का प्रमाण बजाना शुरू कर दिया।

उन्होंने खुद डाक्टर से बात की। निर्देश दिये। कहा कि प्रोफेसर गुप्ता वस्तुतः बड़े फिलासाफर हैं। देश को उन पर गर्व है। उनके इलाज में कोई कमी न रह, यह देखना और समुचित व्यवस्था करना सरकार का फर्ज है।"

कपिला के शब्द मानो किसी भाषण के खोखले मनबान से बाहर गिर पड़े थे। वह मजीदगी से मतवान को उलट पुलट रही थी।

उन्होंने एक वक्तव्य भी दिया है तुम्हारे लिए। खूब प्रशंसा की है। तुम्हें बर्ट्रेंड रसेल के बराबर बतलाया है। कई अखबारों ने छापा है उसे।

अखबार! मेरी रीढ़ के नीचे एक ठंडी लहर कँपकँपा कर थिर हो गयी। आतंक से अधमरा होकर मैं एक दैनिक पत्र के कार्यालय में घुस गया था। मैं चीख रहा था, मुझे बचाओ! तुम जनतन्त्र जिन्दा रहने के अधिकारों का समर्थन करते हो। मेरी रक्षा करो!'

कुछ रिपोर्टरों ने मुझे घेर लिया था। मेरे होठों में झाग भर गये थे। उन्होंने मुझे कुर्सी पर बिठाया।

मैं चिल्लाता रहा। मैं पूरा जोर लगा रहा था यह अन्तिम प्रयत्न था, पर मेरी आवाज बुझ रही थी।

'वे ऽ ऽ मुझे मार डालेंगे। यह देखो उन्होंने मुझे जबरन पकड़ कर इंजेक्शन दिलवाया है। ऐसा कई दिनों से हो रहा है। खड़े-खड़े क्या देख रहे हो तुम लोग? मेरा बयान लिखो। मैं कहाँ और किससे कहूँ अपनी बात? वे ऽ ऽ मुझे जहर दे रहे हैं धीरे धीरे। उन्हें खतरा है कि मैं उनके खिलाफ हो जाऊँगा सारे गुप्त भेद दूसरों को बतला दूँगा।

फिर मुझ पर बेहोशी छाने लगी। मैंने अपनी बाँह उनके सामने खोल दी थी, जिस पर उन सुइयों के निशान थे जो रोज मुझे दी जा रही थीं। मेरे चेहरे पर रोशनी चमकी। फोटो लिया गया था। वे उत्तेजना में बातें कर रहे थे। मुझे झकझोर रहे थे। लेकिन—मैं धुंध में लिपटता चला जा

रहा था और बडबडाता जा रहा था।

"पुलिस को खबर करो।'

मैंने अस्पष्ट ढग से सुना। कोइ गुस्से म बाल रहा था।

'इ हे अस्पताल ल चलो।

उद्योगमत्री एक विद्वान की जान ले रहा है।'

'स्साला, कमीना!

हम उस नगा कर देंग। लीड स्टोरी बना कर छापेंगे।'

वे क्षण गुजर चुके थे लकिन अभी भी हवा म बिखरी हुइ आग की चिनगारियो की भाँति चिटख रहे थे।

सहसा एक घटा घनघना उठा और मैं स्मति-पदको से बाहर निकल आया।

"कुछ गरीब मरीजो को यहाँ मुफ्त खाना दिया जाता है यह उसी के वक्त का सकेत है।"

कपिला ने कहा, सोच म डूबते-उतराते।

वह मेरा माथा सहलाने लगी।

'शुरू म तुम्हे इमरजेन्सी वाड दिया गया था। अ दर स कितना गन्दा है वह! उद्योगमत्री जी की मेहरबानी से यह 'डिलक्स रूम' मिला है।

मैं उसे देखता रहा। कितने सालो स यह स्त्री मेरे पाछे लगी हुई है? क्यो ऐसी बीवी चौगिद बियाबान रचने लगती है और बबूल की झाडी बन कर तमाम अ तसम्ब धो को निममता से छलनी कर देती है? श्रीमती कपिला शुक्ला! ओपफो ऽऽऽ!

'कितना कुछ किया है उद्योगमत्री जी न फिर भी तुम उनकी मिट्टी पलीद करने पर तुले हुए हो।'

मैं।"

मेरे होठ एक सकपकाहट म काप।

'हा तुम!

'लेकिन मैं तो मर चुका हूँ।"

'अब यह दशन बघारना छोडो। ब्रह्म आत्मा और न जाने क्या-क्या विश्वविद्यालय म पढाते-पढाते तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।

एक सुन्दर, कोमल नाक! रीस की वजह से वह अब लाल पड़ती जा रही थी। कपिला क्या करती है ऐसा? स्वयं को बदसूरत बना लेती है।

'तुमने मुझे भी बदनाम कर दिया है। सोचो अपनी पत्नी को! कुछ तो शर्म करो।'

मैं एक भयावह पाताल में धँसता चला जा रहा हूँ। इस पतन का अन्त कहाँ है? मैं पत्नी से पूछना चाहता हूँ, पर घबरा गया हूँ।

'लोग कहते हैं उद्योगमंत्री जी से मेरे ऐसे-वैसे ताल्लुकात हैं।

ऐसे-वैसे?।'

फिर मेरी जुबान में हरकत हुई।

'हाँ खराब-खराब सम्बन्ध।'

'ठीक है।

क्या ठीक है?'

क्रोध का एक फव्वारा मेरे चेहरे पर गिरा।

'नहीं गलत है।

तुम हमेशा ऐसे ही रहोगे। अड़ियल और मूर्ख!'

लेकिन मैं तो खत्म हो चुका हूँ।'

उसने कुछ नहीं सुना। अपनी धुन में बोलती गयी।

क्या गये थे तुम अखबार के दफ्तर में? बताओ मुझे! उन्होंने फ्रण्ट पेज पर नमक मिर्च लगा कर सब-कुछ छाप डाला। और तुम्हारे जीवन की रक्षा के लिए अपील भी निकाली!"

कपिला की मुखमुद्रा व्यंग्य से विकृत हो उठी।

'जानते हो क्या हो रहा है उसके बाद? यूनिवर्सिटी में स्ट्राइक हो गयी है। पार्टी के चेयरमैन ने जाँच-कमेटी नियुक्त कर दी है। चीफ मिनिस्टर ने उद्योगमंत्री जी को बुलाकर बुरा भला कहा है और वो अग्रवाल बेईमान का बच्चा भड़वा!"

वह घटिया और अश्लील होती जा रही थी।

भड़वा!'

मेरे माथे पर मानो किसी ने डण्डा बजाया।

हा हाँ भड़वा ! वो ऽऽ अग्रवाल शिक्षामंत्री क्या बन गया, स
साहब समझता है अपने को। उद्योगमंत्री जी के तो विरोधी गुट क
या उसे बढ़िया मौका मिल गया है अब बक-बक करता फिर रहा है।
वह रोने लगी।
मेरा तो तुमने सत्यानाश कर दिया ऽऽऽ मुझे राज्य सभा के लि
टिकट मिल रहा था। उद्योगमंत्री जी दिल्ली में सब तय कर आये थे
किसी ने आहिस्ता से दरवाजा खटखटाया।
कौन है ?'
कपिला ने नकियाते सुर में पूछा और रूमाल को थपथपा कर जल्
जल्दी आंसू पोछ डाले।
एक गंजे सिर ने अन्दर झांका। फिर वह सदेह प्रकट हुआ।
प्रोफेसर सत्यवान प्रसाद शुक्ला यहीं है ?
जी हाँ ! लेकिन—आप बाद में आइये। वो अभी सो रहे हैं।
कपिला घबरायी हुई सी मुझे आड़ दे कर खड़ी हो गयी।
आऽप ?'
इससे आपको क्या मतलब है !
वह झुंझला उठा।
'देखिये मैं इन्क्वायरी कमेटी का मेम्बर हूं।'
मुझमें अचानक कहीं से रक्त का संचार हुआ।
आप इधर आ जाइये।
'अच्छा ! तो आप जाग गये हैं। मुझे खेद है प्रोफेसर शुक्ला मैं
दोपहरी में आ कर आपकी नींद में खलल डाला। लेकिन आपके स्वा
स्थ्य को लेकर सभी हलकों में चिन्ता प्रकट की जा रही है और मुझ
कहा गया है कि मैं मामले की सही जानकारी हासिल करूं ।'
'हमारे खिलाफ गहरी साजिश हो रही है।'
कपिला ने स्थिति में प्रवेश करते हुए और उसे निजी रंग देते हु
कहा। गंजे को कुर्सी पर आदरपूर्वक बिठा कर वह भौंहों का पसीन
पोछने लगी।
प्रोफेसर साहब बहुत भोले हैं। इन्हें फँसाया गया है।

फिर उसने गजे की प्रश्नात्मक दृष्टि को समझते हुए कहा मैं मिसेज़ शुक्ला हूँ।'

ओह! तो आप हैं वोऽऽ!'

गज का चेहरा पीला पड़ गया।

'मैं एक सीधी-सादी घरेलू किस्म की औरत हूँ।"

मैंने तो सुना है कि आप राजनीति में भी अच्छा-खासा दखल रखती हैं। उद्योगमंत्री आपकी सलाह के बिना पानी का घूंट तक गले के नीचे नहीं उतारते हैं!

तभी धड़ाक से किवाड़ खुले। पुलिस की वर्दी में एक अफसर और शिक्षामंत्री तेजी से अन्दर आये।

शिक्षामंत्री मुझे देख कर मुस्कराये। उनके होंठ कानों तक फैल गये और फैलते चले गये।

फिर उन्होंने एक खा डालने वाली निगाह से कमरे का मुआयना किया।

मिसेज़ शुक्ला, मुझे यह कहने के लिए क्षमा करें आप थोड़ी देर के लिए बाहर चली जाइए। हमें कुछ गंभीर और गोपनीय वार्तालाप करना है।

पाँव पटकती हुई कपिला चली गयी।

शिक्षामंत्री ने अपनत्व भाव से मुझे छुआ। जहाँ जहाँ उनकी अंगुलियाँ गयीं लम्बी-लम्बी जोंकें मेरे शरीर से चिपक कर लटकने लगीं। शुरू में पीड़ा का बोध हुआ पर ज्यों-ज्यों वे खून पीती गयीं, मेरी नसों में एक अजीब मीठी सनसनी बहने लगी।

"एस० पी० साहब हैं। आप बेहिचक इन्हें सब कुछ बतला दीजिये।

शिक्षामन्त्री ने खाकी वर्दीधारी की ओर इशारा किया।

मैं एक एक को ठिकाने लगा दूँगा, प्रोफेसर शुक्ला! आप घबराइये मत। डटे रहिये। शिक्षा विभाग के किसी व्यक्ति पर कोई ज्यादती होती है तो आरोप मुझ पर आता है। मैं उद्योगमन्त्री की और उसकी रखैल की ऐसी-तैसी कर दूंगा।'

एस० पी० को भी शह मिली। बोला आप तलाक के लिए भी

हा हा, भडवा ! वो ऽऽअग्रवाल शिक्षामंत्री क्या बन गया, लाट साहब समझता है अपने को। उद्योगमंत्री जी के तो विरोधी गुट को बढ़िया मौका मिल गया है अब बक-बक करता फिर रहा है।'

वह रोने लगी।

मेरा तो तुमने सत्यानाश कर दिया ऽऽऽ मुझे राज्य-सभा के लिए टिकट मिल रही थी। उद्योगमंत्री जी दिल्ली में सब तय कर आये थे ।'

किसी ने आहिस्ता से दरवाजा खटखटाया।

कौन है ?"

कपिला ने नकियाते सुर में पूछा और रूमाल को थपथपा कर जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ डाले।

एक गंजे सिर ने अन्दर झाँका। फिर वह सम्पूर्ण प्रकट हुआ।

प्रोफेसर सत्यवान प्रसाद शुक्ला यहीं हैं ?'

'जी हाँ !' लेकिन—आप बाद में आइये। वो अभी सो रहे हैं।'

कपिला घबरायी हुई सी मुझे आड़ दे कर खड़ी हो गयी।

आप ? '

इससे आपको क्या मतलब है !

वह झुंझला उठा।

देखिये मैं इन्क्वायरी कमेटी का मेम्बर हूँ।

मुझमें अचानक कहीं से रक्त का संचार हुआ।

आप इधर आ जाइये !

अच्छा ! तो आप जाग गये हैं। मुझे खेद है प्रोफेसर शुक्ला मैंने दोपहरी में आ कर आपकी नींद में खलल डाला। लेकिन आपके स्वास्थ्य को लेकर सभी हलकों में चिन्ता प्रकट की जा रही है और मुझसे कहा गया है कि मैं मामले की सही जानकारी हासिल करूँ ।

हमारे खिलाफ गहरी साजिश हो रही है।'

कपिला ने स्थिति में प्रवेश करते हुए और उस निजी रंग देते हुए कहा। गंजे को कुर्सी पर आदरपूर्वक बिठा कर वह भौंहों का पसीना पोंछने लगी।

प्रोफेसर साहब बहुत भोले हैं। इन्हें फंसाया गया है।"

फिर उसने गजे की प्रश्नात्मक दृष्टि को समझते हुए कहा, "मैं मिसेज़ शुक्ला हूँ।"

'ओह! तो आप हैं वो ...!"

गजे का चेहरा पीला पड़ गया।

"मैं एक सीधी सादी घरेलू किस्म की औरत हू।"

"मैंने तो सुना है कि आप राजनीति में भी अच्छा-खासा दखल रखती हैं। उद्योगमंत्री आपकी सलाह के बिना पानी का घूट तक गले के नीचे नहीं उतारते है।"

तभी धड़ाक से किवाड़ खुले। पुलिस की वर्दी में एक अफ़सर और शिक्षामंत्री तेजी से अन्दर आये।

शिक्षामंत्री मुझे देख कर मुस्कराये। उनके होंठ कानों तक फैल गये और फिर सिमट गये।

फिर उन्होंने एकखा डालने वाली निगाह से कमरे का मुआयना किया।

"मिसेज़ शुक्ला, मुझे यह कहने के लिए क्षमा करें। आप थोड़ी देर के लिए बाहर चली जाइये। हमें कुछ गंभीर और गोपनीय वार्तालाप करना है।"

पाँव पटकती हुई कपिला चली गयी।

शिक्षामंत्री ने अपनत्व भाव से मुझे छुआ। जहां जहां उनकी अँगुलियाँ गयीं लम्बी लम्बी जोंकें मेरे शरीर से चिपक कर लटकने लगीं। शुरू में पीड़ा का बोध हुआ, पर ज्यों-ज्यों वे खून पीती गयीं, मेरी नसों में एक अजीब मीठी सनसनी बहने लगी।

"ये एस० पी० साहब हैं। आप बेहिचक इन्हें सब कुछ बतला दीजिये।"

शिक्षामन्त्री ने खाकी वर्दीधारी की ओर इशारा किया।

"मैं एक एक को ठिकाने लगा दूंगा, प्रोफेसर शुक्ला! आप घबराइये मत। डटे रहिये। शिक्षा विभाग के किसी व्यक्ति पर कोई ज़्यादती होती है तो आरोप मुझ पर आता है। मैं उद्योगमन्त्री की और उसकी रखैल की ऐसी-तैसी कर दूंगा।"

एस० पी० को भी शह मिली। बोला, "आप तलाक़ के लिए भी

अर्जी द दीजिए।"

'वकील का खर्चा मैं उठाऊँगा।"

शिक्षामन्त्री ने पजा फना कर अगुलियो म पुखराज और नीलम की अगूठियो को देखा।

'लेकिन मेरी एक बात है। आप मुभम कुछ भी छुपाएँगे नही। और कपिला के साथ उद्योगम त्री के कुछ फोटो तो जरूर होगे ही वे भी आप मुझे देंगे।

दो युवक धडधडात हुए भीतर चल आय और मेरी तरफ लगभग दौड पडे। वे मेरे छात्र थे।

'सर सर! आपको क्या हो गया है सर?

सर हमन पपर म पढा कि आपको जहर दिया जा रहा था कई हफ्तो स।

सर हम बतलाइय हम आपके लिए क्या करें?

हम जुलूस लेकर वाइस चासलर की कोठी पर गय थ।

हमने उनके बरामदे मे रखे गमले तोड डाल।

हम आपके साथ अ याय नही होन दग सर!

कमरा आवाजो से भर गया और मेरा दम घुटन लगा। मैंने एकाध बार कोशिश की कि उनस कुछ कहू, पर भाषा ने साथ नही दिया। सदा की भांति आज भी वह पराया थी और दूसरो क पीछे चल रही थी।

डोलर फूल की तरह एक गाल मेरे म मेरा पलग चक्कर खाने लगा।

उसी समय कपिला आयी डाक्टर के साथ।

देखिय कितनी भीड लगा रखी है यहाँ! और मुझे इन लोगो ने बाहर निकाल दिया। डाक्टर साहब! मरे पति को बचा लीजिए। वो मौत के मुह म है उनकी जान खतरे म ह और य तमाशबीन मजमा लगाय हुए ह ।

वह सिसकियाँ भरन लगी।

धीर धीरे कमरा खाली हो गया।

मैं मर चुका था पर डाक्टर मेरी जाच कर रहा था। उसन नब्ज देखी। रक्तचाप की परीक्षा की। पलक उलटकर मेरी पुतलियो को

घूरता रहा।

"सिस्टर!"

उसने पुकारा और हाथ मसलने लगा। एक चंचल-सी लड़की खट-खट करती हुई आयी। डॉक्टर ने उससे कुछ कहा। वह पास के स्टूल पर बैठ गयी और एक गाढ़ा घोल मेरी छाती पर मलने लगी। उसकी मुलायम अँगुलियाँ वीरबहूटियों की तरह चल रही थीं।

कपिला की सुश्रूषा का अन्त नहीं था। शाम हो गयी। फिर रात। बीच में उसने दो बार उठ कर उद्योगमंत्री जी को फोन किया और फिर पलंग से आँख-नाक रगड़ती हुई एकतान रोने बैठ गयी। सिस्टर से भी एक सवाल किया—"तुमने कानों के बुंदे कहाँ से खरीदे?"

'महारानी मार्केट में।'

'बड़े प्यारे लग रहे हैं। इतवार को एक जोड़ी मैं भी लाऊँगी।"

अंतिम दृश्य में जब उद्योगमंत्री हाथी की तरह झूमते हुए अपनी सूंड के नीचे वाले दो दाँत दर्शाते हुए पधारे तो कपिला की रुलाई ने ज़ोर पकड़ लिया।

उद्योगमंत्री एक साप्ताहिक पत्र के प्रधान सम्पादक भी थे। उस पत्र का संवाददाता और फोटोग्राफर उनके साथ अंगरक्षकों की भाँति खड़े थे। कैमरा लट्टू जल रहा था।

मिसेज़ शुक्ला रो रही हैं। उनका फोटो न लो।"

फोटोग्राफर काम में लग गया। कपिला ने मेरे गले में बाँहें डाल दीं, मेरे वक्ष पर सिर रख लिया, मेरे पलंग पर झुक कर बैठ गयी, मेरे पाँव दबाने लगी... इस तरह कई पोज़ लिये गये।

फिर उद्योगमंत्री खाँसते-खँखारते हुए संवाददाता की ओर मुड़े और कपिला की तरफ से बयान लिखवाने लगे—

मैं बहुत दुःखी हूँ। मेरे पति मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं। उनके प्राण बचाने के लिए मैं सर्वस्व होम दूँगी। जानने वाले जानते हैं कि प्रोफेसर शुक्ला एक कमज़ोर चरित्र के व्यक्ति हैं। पिछले छह वर्षों से उनका अनैतिक सम्बन्ध शिक्षामंत्री जी की पुत्रवधू से रहा है। वेश मेरे घर में ही रँगरलियाँ मनायी जाती रही हैं पर मुझे उसके बारे में कुछ नहीं कहना

है। मैं भारतीय नारी हूँ और पति के अवगुणों की चर्चा को पाप मानती हूँ। पता नहीं शिक्षामंत्री जी के यहाँ प्रोफेसर शुक्ला को क्या खिला दिया गया कि उनका मानसिक संतुलन नष्ट हो चुका है। उन्हें होश में लाने के प्रयत्न हो रहे हैं। फिर मैं शुक्ला जी को लेकर रांची जाऊंगी।'

एक स्टेटमेंट, कुछ प्राध्यापकों की ओर से तैयार करो कि उन लोगों ने प्रोफेसर शुक्ला को पागलखाने में रखकर इलाज कराने के लिए चंदा इकट्ठा किया है। वो फिजिक्स वाला गुप्ता है न अपना खास आदमी है, जरूर कुछ यार-दोस्तों से दस्तखत करा लायगा।'

कपिला मुस्करायी। आश्वस्त होकर।

अगले ही क्षण उसकी मुस्कराहट पर उद्योगमंत्री की मुस्कराहट चिपक गयी।

फोटोग्राफर और संवाददाता पुतलों की तरह कमरे से निकल गये। सिस्टर पहले ही जा चुकी थी।

उद्योगमंत्री ने मुझे घूंसा दिखलाया।

सत्यवान सूअर हरामी की औलाद!

कपिला ने उन्हें रोका।

'क्या कर रहे हैं? अभी नहीं अभी उसे जिंदा रखना है।'

वह उद्योगमंत्री के गले में बाँह डाल कर उनकी तोंद की ढलान पर लौकी की तरह लटक गयी।

त्वमेव माता

पडा की डालियो म रह रहकर बल खाती हुई सरमराहट के सिवा और और कोई आवाज सुनायी नही दे रही थी। सूर्यास्त के बाद पाँव पसारते हुए अँधेरे म बालू क टीले क शिखर पाल पवद म नजर आ रह थ। मेरी चिलम म अभी तम्बाकू का आखिरी स्वाद शेष था बिलकुल एक गहरी-गहरी गध से जुडा हुआ श्वास अमला! मैंने साफी का कपडे म लपेटा और हथेलियों की मुट्ठी बनाकर लंबा कश अन्दर खींचा। धुआँ अपनी जानी-पहचानी सुरग का ताप और गुन-गुनाहट से रोमाचित करता हुआ बाहर लौट आया। बाहर सब-कुछ सुनसान था। बहुत दूर स जहाँ बनासर राणी थी कभी-कभी कोई स्वर बूटे मार की तरह पख फडफडाता हुआ उड जाता था।

दिन भर धुन पर काम करने बाद व लोग लौट गये थ अपनी-अपनी कच्ची-पक्की छतों के नीचे। कल सुबह होते ही फिर आ आयेंगे और मोटा-चूना-माटी से जूझने लगेंगे। अकेलेपन की खोह म पडा हुआ मैं जाने क्या सोच रहा था भीतर ढेर-सा राख जमा थी और जैसे कोई गुरार कर रहा हो। एक कुचली हुई लय मन म उमड रही थी।

मिस्तरी ! '

एक हाँफती हुई आवाज मेरे निकट आकर ठिठक गयी। मैंने पीछे मुड़कर देखा और उस क्षण में मुझे लगा कि पीछे मुड़कर देखना कितना कठिन, कितना दुःख भरा अनुभव रहा है मेरे लिए।

वह आठ-दस साल का लड़का था, तन पर गमछे की भाँति एक धोतिया भर और शरीर की हड्डियाँ तो इस तरह बेतरतीब मानो वे उससे जुड़ी हुई न हों। कोई औजार था उसके हाथ में, जिसे वह चुपचाप ताक रहा था।

तुम्हीं मिस्तरी हो ? उसने पूछा और फिर मेरे उस छोटे-से झूले को देखने लगा जिसे एक महीने पहले अस्थायी तौर पर खड़ा किया गया था।

हाँ बोलो क्या काम है ? '

मैंने खटका दबा कर लालटेन सुलगाई। वह एकदम भकभक करने लगी और काँच के गोल में कालिख पुत गयी।

इसे नीचे रख दो।' लड़के ने कहा, तेल बत्ती के आसपास जमा हो गया है। थोड़ी देर में ठीक लौ बन जाएगी।'

मिट्टी के तेल की तीखी बू हवा में तर गयी।

मैंने लालटेन एक तरफ रख दी।

सर्दी बढ़ गयी थी। मेरे हाथ-पैरों में ठंड जमने लगी तो मुझे लड़के का ध्यान आया। उसने तो नाम मात्र को ही कुछ पहन रखा था। सिगड़ी के तसले में थेपड़ियाँ और घास फूस जमा कर मैं आग जलाने की तैयारी करने लगा।

हटो मैं सिगड़ी ठीक कर देता हूँ।

लड़का मेरे सामने आकर घुटना बल बैठ गया।

जब आग की रोशनी तेज होने लगी तो मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा। सूखे हुए गालों के बीच पेयली बेर की भाँति रखी हुई नाक और ऊपर का होंठ कुछ लम्बा, भूरे बाल और उनकी छाजन के नीचे गहुए रंग की अलग सी जगमगाहट देती हुई आँखें।

तुम तीसरे मिस्तरी हो यहाँ," वह बोला 'कोई टिकता नहीं।

पहले जो दो आय थे, जल्दी ही ऊब गये। तुम्हें पहाड़ अच्छे लगते हैं?"

'हां, मुझे पसंद हैं।"

'तब तो तुम रह लोगे?'

तुमने अपने बारे में कुछ बताया नहीं।"

मैं बल्ली हूं। दोनों पुराने मिस्तरी भी जानते थे मुझे।"

'यह हाथ में क्या ले रखा है तुमने?'

बसूला है। लकड़ी की कुछ मामूली चीज़ें बना लेता हूं—यही कड़छी, खूंटियाँ खाट के पाये, डेरा ।

'अच्छा!" मुझे बल्ली से बातें करने में आनंद आ रहा था। अंदर जो गाली-गाढ़ी धुंध जम गयी थी और जिसके रहते समूचा समय मुझसे परे पड़ गया था, अब धीरे धीरे निकास पा रही थी।

ऐसे वक्त यहां चले आये तुम, बल्ली!

अम्मी ने कहा चलो नये मिस्तरी के पास और मैं चल दिया। वह भी कुछ देर में पहुँच जाएगी। मुझे धीमे धीमे, पांव घसीटते हुए चलना पसंद नहीं। मैं तो दौड़ता हूं। बाखर में अपनी छप्परी से निकल कर भागना शुरू किया तो बस तुम्हारे पास आकर ही रुका। अम्मी तो औरत है न भागमभाग में मेरा मुकाबला थोड़े कर सकती है!'

सिगड़ी के पास खिसक आओ। तुम्हें जाड़ा लग रहा होगा।'

'ना मुझे तो छूता ही नहीं जाड़ा। एकदम नंगड़ घूमता हूं—जंगल में टीलों और पहाड़ियों पर—पाले की मार मुझ पर नहीं चलती। वो तो तुम्हारे पास आना था न इसलिए अम्मी ने यह धोती पहना दिया। देखो न, कैसे फंस गया है टांगों में चुभता है?

आज हवा कैसी चल रही है एकदम बर्फ?

अरावली पर दैऊ बाबा ने डेरा डाला है।'

'क्या मतलब?

हां अम्मी कहती है जब दैऊ बाबा अरावली पर डेरा डालते हैं तो सर्दी आती है और जब उनका डेरा उठ जाता है तो, गर्मी।

यह कंबल तो ज़रा घुटनों पर डाल लो!

ना भई मेरा तो इसे देखने से दम घुटने लगता है।' फिर बल्ली

ने अँधेरे में घूर कर कुछ देखा, अम्मी आ गयी!"

मैं भी उधर देखने लगा। पहाड़ी पर चाँद निकलने से पहले का उजास था। एक काली आकृति ताड़ के दरख्त के नजदीक आ कर ठिठक गयी।

अब मुझमें अनमनापन नहीं था। खुशमिजाज और मुक्त बल्ली ने मेरी उदासी के तमाम धब्बों को धो लिया था। सामने अधबना पुल था लोहा-लक्कड़ और ईंटों के ढेर थे भारी और बढ़ी हुई दाढ़ी वाले बरगद के पेड़ थे। कभी-कभी कोई लोमड़ी बोल उठती थी तो उसकी आवाज़ ऐसी लगती थी मानो दो बाँसों के बीच तनी हुई किसी रस्सी पर नटनी चल रही हो!

अम्मी आ जाओ मिस्तरी का मैं तुम्हारे बारे में बतला चुका हूं।"

वह आकृति बल्ली की पीठ से सट कर बैठ गयी। चुप।

मिस्तरी तुमने बाघ देखा है कभी? बल्ली ने पूछा। वह सिगड़ी में से एक अंगारे को हथेली पर ले कर नन्हीं गेंद की भाँति उछाल रहा था।

'नहीं।

'मैंने भी नहीं देखा चूल्या काका कहता है एक बार बाघ घुस आया था बगासर में। बाड़े में से भेड़ को निकाल कर मुंह में उसे दबाये-दबोचे वह वापिस जा ही रहा था कि अम्मी ने उस पर कुल्हाड़ी चला दी। फिर क्या था हो गयी डिगमडिगार हर हर गंगा! अम्मी ने उसका जबड़ा तोड़ डाला मर गया स्साला तड़फड़ा के! तुम कभी हमारे गूप में आओगे तो मैं तुम्हें उसकी खाल दिखलाऊंगा।

बत्तूनी बहोत है यह स्त्री ने कहा।

चूल्या काका कहता है बत्तियों का बेटा तो बत्तूनी ही होगा। तुम्हें नहीं मालूम मिस्तरी! मेरी अम्मी का नाम बत्तिया है।

इस बार स्त्री ने मेरी ओर चेहरा घुमाया। उसके होठों पर कोमल-सी मुस्कराहट थी। गोरा और खुला-खुला चेहरा। आंखों में हल्की-हल्की व्यग्रता का भाव, जिसे सहेज कर रखने वाले भरे भरे सुख होठ।

"यह चूल्या काका कौन है, बल्ली?

अरे, तुम उसे नहीं जानते, मिस्तरी? तुम्हारे नीचे पुल पर ही तो

मजूरी करता है वह। पूरे गाव का वही तो चौधरी है। खतरनाक आदमी है। क्यो अम्मी, तुमने बतलाया था न, कि पिछले साल उसने डगदोणा गाव मे दो आदमियो का खून कर दिया—दिन दहाडे।"

"अब अपनी बकर बकर बद करो बल्ली।" स्त्री के स्वर म नाराजगी थी।

बकर बकर क्या, सच्ची बात है। तुम्हे भी तो धौल धप्पड मारता है घरत धूरया काका! क्या पिटती रहती हो तुम उससे? भला वह कोई तुम्हारा खसम है? खसम तो अपनी लुगाइया का है। उन्हे मार।

"अच्छा, तुम ज्यादा जबान मत चलाओ!" स्त्री अचानक अस्त व्यस्त हो उठी।

ठीक है मैं कुछ नही बोलूगा। बल्ली एक जलती हुई चपटी को उलट-पलटन म लगा। "तुम मिस्तरी के साथ सोन के लिए यहा आई हो न? जाओ झूपे के अदर चली जाओ।"

एकाएक मेरे चारो ओर का अँधेरा मरघट के कांटो स भर गया और मेरे रोम रोम म गडन लगा। फिर लगा, मेरा शरीर छोटे छोटे सूराखो के कारण छलनी जसा हो गया है। नही, व सूराख नही बिल है और उनम असख्य चूहे मिलकर बरसों स एक ही चीज को कुतर रह हैं—लगातार एक छाया है जो सारे सबधो के बीच भुतनी की भाँति डोलती रहती है। और मैं उस भुतनी को पकडन की कोशिश करता हुआ दिन-ब दिन अधिक लाचार अधिक बूना, अधिक नि सग होता जा रहा हूँ। किंतु किस अन्यय हाथ के सब, घिनौने तावूत चुभे हुए है मेरे और दूसरो के विवश, नि सग जीवन म कौन है वह जो मुझको एक ओर एक अघर टिके हुए मरुस्थल का आहिस्ता आहिस्ता दुगध भरे दलदल सा ढँकने की चेष्टा कर रहा है?

बयस म रोये नोच-नोच कर ताकते हुए मैंन उस स्त्री की तरफ निगाह उठा कर देखा, जिसकी आँखें नीचे झुकी हुई थी और नाक की अगली नोक पर रह रह कर कपन-सा हो उठता था। पपन कथा म धँस गयी थी और उसन निचल होठ का दाँतो स दबा लिया था। एक दिन के लिए मुझे महसूस हुआ वह चेहरा एक चुनौती है—मेरे लिए, एक हाहा

कार है ! कितनी बड़ी दुनिया है इस हाहाकार की, अतहीन !

एक पहर ! दो पहर ! रात का रथ रुका नहीं ! अश्व दौड़ते रहे। मैंने आसमान की ओर देखा—तारे थे बादल थे और अधकूप में खाली डोलची की भाति लटकता हुआ-सा चाँद था। मन में एक विचार आया कि अगर मैं आँखें मूद लू तो यह सब मुद जायेगा लेकिन क्या इतनी आसानी से खत्म हो जाता है सब-कुछ ? कहाँ समाप्त होगी यह लड़ाई ? कभी क्लर्क कभी चौकीदार कभी फैक्टरी का हाजिरी-मास्टर और अब राजगीरों का मिस्त्री ! कहाँ जाना चाहता था मैं और कहाँ चला आया !

तभी एक हौलनाक-सी आवाज सुनायी दी मुझे जाने कहाँ से ! और लगा कि मैं असुरक्षित हू—अकेला नहीं उन सब लोगों के साथ जो मार-खाये लफ्जों पर भरोसा करते हुए गरम लावे की ठंडी सतह पर चल रहे हैं बेआवाज ?

और तब मुझे सामने बैठी हुई उस स्त्री का चेहरा सहसा याद हो आया और अपना बहुत निकट लगने लगा। बत्तियाँ ! हाँ मैंने उसे कितने ही गाँवों और कस्बों और शहरों में देखा था—सैकड़ों बार भूल कर भी सैकड़ों बार याद करने के लिए !

'बल्ली !' गले की खराश से जूझते हुए मैंने पुकारा।

'सो गया है यह" स्त्री ने कहा। उसके स्वर में जड़ता थी जैसे कोई चट्टान जरा-सी हिली हो।

'इसे झूपे में सुला दो। मैं सिगड़ी अदर ले चलता हू।

हाँ बाहर सर्दी बढ़ गयी है।'

लालटेन के मद मद उजाले में उभरती हुई गटमड परछाइयाँ और झूपे की गरमास ! नसों में एक आँच जमने लगी। मैंने सिगड़ी को उपलों से भर दिया। इससे पहले कि मैं फूक दू बत्तियाँ उसे पल्लू से हवा देकर सुलगाने लगी। बल्ली को उसने दरी पर सुला दिया था कबल ओढ़ा कर।

बत्तियाँ !'

उसने फटी फटी आँखों से मेरी तरफ देखा—एक सहमा हुआ भाव एक बेजान सा उत्तर।

'तुम और वल्ली कहाँ जा रहे थे ?"
'यहां आये थे।"
'किस काम से ?'
'मैं पहले भी आ चुकी हू यहाँ।"
रात को ही ?"
हाँ, उन दोनों मिस्तरियों के पास, जो तुमसे पहले पुल का काम देखते थे।'
मेरे कंठ में फिर खुश्की सी पैदा होने लगी।
'मैं उनके साथ सो चुकी हूँ, कई बार।' वत्तिया ने कहा, 'मेरा यही राजी है। गाँव में बसे धूल्या चौधरी मालिक है लेकिन उसकी तो अपनी ही तीन औरतें हैं—ब्याहता।'
तुम्हारा ब्याह नहीं हुआ ?"
'नहीं! मैंने सोचा तुम्हें मेरी जरूरत होगी। पर तुम और ही मिट्टी के बने हुए हो!"
'क्या नहीं हुआ तुम्हारा ब्याह ?'
ऐसे ही! ब्याह से पहले यह वल्ली हो गया एक फौज के आदमी से। अहमद नाम था उसका। उदियापुर में रहता था लेकिन धूल्या का मित्तर था और तब कुछ दिनों के लिए उसके पास छुट्टियाँ बिताने आया था। मैं तो भील जात, बे माँ बाप की छोकरी। धूल्या के जानवरों की बाड़े में सार-सभाल किया करती थी। वहीं अहमद एक दिन आया और बोला, मैं तुम्हें अपने घर में बिठा लूंगा।' मैं खूब राजी हुई।
मैं कुछ नहीं कह पाया। मेरे होंठ आपस में चिपक-से गये थे। वत्तिया ने बाहर अँधेरे में निगाह गड़ा दी, मानो वहाँ कुछ टटोल रही हो! फिर उसके होंठ धीमे से हिले— फिर अहमद फौज में लौट गया। कभी-कभी धूल्या के पास चिट्ठी आती थी उसकी पटवारी पढ़के सुनाता था, मुझे जरूर सिलाम लिखता था वह! जब वल्ली पैदा हुआ तो उसने इधर-उधर अता-पता लगाया तो मालूम पड़ा कि लड़ाई चल रही है। बाद में कोई खबर लेकर आया कि अहमद मोरचे पर काम आ गया। बहुत दिन रोया मेरा।

किसी से नाते' की बात नही सोची तुमने ?

धूल्या के कहन स किया एक जने के साथ 'नाता पर निभा नही। वल्ली उस फूटी आँखो नही सुहाता था। जब मुझे शक हुआ कि वह वल्ली को किसी-न किसी दिन कुए म फेंक आयेगा तो मैंने नाता ताड लिया। पर तब तक इस कलमुहे धूल्या की नीयत खराब हो गयी।' एक लबी साँस भरी बत्तियाँ ने अब तो सभी धूल्या हो गये है लेकिन मरा बेटा बडा हो रहा है। चार छह साल की बात है फिर कोई तकलीफ नही रहगी मुझे। वल्ली अच्छा लडका है न ?"

हाँ, काफी समझदार।

'मुझ पर जान छिडकता है। यो कभी-कभार नाराज हो जाता है तो क्या ?

सुबह जब मैं झूँपे स बाहर निकला तो बत्तियाँ और वल्ली कबल म दुबके हुए सो रह थ। मैं पुल की तरफ चल दिया। मजूर आ रह थ। अलग-अलग काम। अलग अलग जत्थे। गिनती क बाद मैं एक ढूह पर बठ गया।

'मिस्तरी!'

मैंन घूम कर दखा वल्ली दौडता हुआ मेरी ओर आ रहा था। जब वह मरे निकट पहुच गया तो मैंने पूछा, वल्ली तुम मुझ पहाड पर चढना सिखलाओगे ?

'हाँ, अभी चलो।' उसन उत्साह से कहा।

हम पहाड की तरफ चलने लग।

मा क्या कर रही है ?'

अम्मी खाना बना रही है। उसने मुझसे कहा, 'बाहर खेल आओ।'

'हाँ जब हम पहाड से लौटेंगे तो मा के हाथ का खाना खायगे।'

जली हुई रस्सी

वे लोग चले गये थे। स्यापा खत्म हो चुका था। पुन्नी ने एक गहरी साँस ली और उजाड़ आँगन में घिरते हुए अँधेरे से डर गयी, सहसा।

वह अकेली थी।

हवा में अभी भी सुबकियों के चिथड़े अटके हुए थे।

जैसे कोई मूँज की कूँची से धीरे-धीरे दीवारों पर कोयले का घोल पोत रहा हो, रात चौतरफ़ा लिपटने लगी थी।

आँगन के आखिरी सिरे का आसमान जुलाहे की छतरी की भाँति कोनता-सा नज़र आ रहा था।

वह खड़ी हुई। उसके पाँव ज़मीन पर टिके थे, पर उसने महसूस किया जैसे वे चलती हुई बैलगाड़ी में बेतरह डगमगा रहे हों।

दूर तक कोई आवाज़ नहीं थी।

मौत ने छोटी-सी ढाणी को भयानक ढंग से चुप्पी में गाड़ लिया था। शाम के बाद का यह वक़्त तो सिर्फ़ हो-हल्ले और हँसी-बतलावन में बीतता है। आज सब कुछ बन्द-सा हुआ था।

पुन्नी के नथुनों में एक अजीब-सी गंध घहरान लगी। उससे जान

छुडान क लिए वह छत पर चली गयी।

बिछावन के वोर गोलमोल लपेट कर एक कोने म डाले हुए थे। उसने अपना बोरा खाल कर फलाया और बैठ गयी।

न चाहते हुए भी उसकी आँख बस्ती के बाहर कुछ टोहन लगी। मसान जहा थ वहा के दरख्तो और भोमी को वह पहचानती थी। उसन टीलो और टीलो के पार एक जगह जलती हुई आग क अतिम धत्रों को चीन्ह लिया। वे धुधल-स लाल लाल चमक रह थ माना किसी गाडिया लुहार की भट्टी म तपाए हुए पत्तर पडे हा।

वह राख हो गया है। पुनी ने सोचा।

वह अब नही है।

कितना सीधा और किसी हद तक गवदू-सा था वह!

उसे मारन की क्या जरूरत थी?

क्यो किया गया ऐसा?

उसन तो कभी किसी का कोई विगाड नही किया था।

नरसी न कस आरी चलायी हागी उस पर?

उसका हाथ नही कापा, जरा भी?

और जम्मुन ने भी विराध नही किया?

पुनी ने दोना हथलियो के बीच अपना माथा दबोच लिया और धीर धीर कनपटियाँ सहलाने लगी। उसके विचार बर्छी के नुकील छरों की तरह उस पर आक्रमण कर रहे थ।

हो॰ !'

दरवज्जे के वाहर आहट हुई।

'पुनी!

किसी ने नीचे आँगन म पुकारा।

आ हाऽऽ।'

पुनी ने गले म उमडती हुइ रुलाई को जबरन राकत हुए जवाब दिया।

ऊपर हो'

फिर सीढियो पर जूता की धम धमक हुई।

"यहाँ क्या कर रही हो ?"

रावजी थे।

पुनी खामोशी से उन्हें देखती रही। पल्लू को मुट्ठी से आँखें-नाक पोंछते हुए सिर झुका लिया।

"तुमने कुछ खाया ?"

पुनी को लगा एक अदृश्य तल है और वह उसमें धँसती चली जा रही है।

"दो दिन हो गये। अन्न को छुआ तक नहीं तुमने !"

रावजी पास आकर बोरे पर बैठ गये।

'ऐसे कब तक चलेगा ?'

पुनी के मन में एक उफान उठा। इच्छा हुई एक ठोंसा लगाकर रावजी का मुँह बंद कर दे। वह बोले चले जा रहे थे मकर मकर। लेकिन अचानक एक झोंका आया और सारा उफान पेंदे में चला गया।

'अभी लौट कर आए हो ?"

उसने पूछा। वह जानना चाहती थी कि शहर में क्या हुआ ? नरमी कहाँ है ?

'हवा में ठंड व्यापने लगी है।"

रावजी ने कहा। फिर एक पोटली की गाँठ खोलने लगे।

'मावे की गुझियाँ हैं। तुम्हें बहुत अच्छी लगती हैं मुझे मालूम है।'

'आज नहीं।'

'खाओ। खाओ तो, कालू हलवाई के यहाँ से लाया हूँ।"

"नहीं। तबियत नहीं है।'

'और अपने लिए यह कूपी लाया हूँ।"

'दारू पिओगी ?"

पुनी के भीतर भय खिंच गया ठंडी लकीर की तरह। पीने के बाद रावजी बहुत खूँखार हो जाते हैं।

लकीर पर अपनी भारी हथेली रखते हुए रावजी ने कहा, 'मात परेशान था। इसलिए दिन में आया न चलो। बस के अड्डे पर ही तो ठेका है।' फिर कूपी को सूँघा 'एकदम तर माल है।'

"वो कैसा है ?'
शब्द पुन्नी के कंठ में घुस गये।
मज़े में है।
ऐसे मत बालो।
सच्ची, वहाँ तो मौजाँ-ही मौज है।'
'जेल कैसी होती है ?
एकदम घर जगी। वहाँ से तो अच्छी है। अच्छा खाने को मिलता। एक ड्रेस भी दे देंगे उसको। एकदम फैनाफन्न उजली।
तुम मिले थे उससे ?
नहीं, मुझे अंदर नहीं जाने दिया पुलीस ने।'
'मारपीट करेंगे उसके साथ ?
'पता नहीं।'
"वो बहोत कमजोर है।
'जानवर है!'
तुम तो सदा उसके खेलाफ रहे हो।
'मुझे कोई मतलब नहीं। भाड़ में जाए।"
रावजी ने कूपी होंठों में दबा ली और गटागट डालने लगे।
गुस्सा मत करो।'
रावजी चुपचाप पीते रहे।
मेरे पापा का फल उसे क्यों मिला है।'
तुमने क्या किया है ?
'माय कहा करती थी किसी की लुगाई खराब हो जाए तो वो सब कुछ भकख लेती है।
'उसने नरकी ने बिना बात जम्मुन का खून कर दिया। बेवकूफ!"
'मेरी गंदगी मेरे मरद को खा गयी।
यह बेलाप बंद करो। तुम पगला गयी हो।
एक निकम्मी औरत हूँ मैं। किसमत ने मुझे कुछ देना चाहा था कि लो यह घर है यह गिरस्थी है यह इज्जत है—लेकिन मैंने तो घूरे में मुंह धँसा दिया।'

तो मैं घूरा हूँ ?"

रावजी न नथुने फलफलाए पर स्वर सहमा हुआ था।

'कित्ती भद्दी बात है यह !'

फिर देर तक दोनो के बीच एक बीहड फैला रहा।

पुनी कोई पगडंडी खोजना चाह रही थी कि किसी तरह अपने को शिकजे स मुक्त कर भाग सके।

अधेरा बढ गया था और उसम स दलदल की बू उठ रही थी।

टीला को लाघ कर एक चिता की धधक साफ दिखाई दे रही थी। वह कातर हो उठी।

'जम्मुन से ता उसकी खूब पटती थी।'

'नरमी अपना भेद किसी को नही देता था। भोत चालाक था।"

रावजी न एक गुजी मुह म डाल ली और चुबल-चुबल आवाज के साथ खाने लगे।

नही। उसन हमेशा सभी पर विसवास किया। मुझ पर भी।

तुम तो मैं जो कहूँगा, मानोगी ही नही।'

सभया को जम्मुन का भाई आया था।"

'छोट वाला ?'

रावजी चौंके। चलत हुए जबडे रुक गये।

"हा, कह रहा था यह काम नरसी का नही है। उसकी जम्मुन भया से कभी कोई लाग नही रही।

"वो कौन है। ऐसी बकवास करता फिरेगा तो मैं उसे भी हवालात म बद करा दूगा।'

तुम सब कुछ करा सकत हो ?"

हा। सब-कुछ।

रावजी ने एक लबा घूट लेकर जोर से कुप्पी नीचे रख दी।

कोई तुम्हारा भी तो नुकसान कर सकता है।"

पुनी के अदर से एक विषली लहर लहराती हुई बाहर आयी और अधकार की काली रेती पर सिर पटक कर सूख गयी।

मैं उसकी आंतो मे कुत्ते का गू भर दूगा।'

रावजी ने थूका। एक बार। दो बार। तीन बार। फिर खँखार कर खामोश हो गये।

कुछ क्षणो के गुजरने पर एक ठूठ जसे सख्त हाथ ने पुन्नी के जिस्म को छुआ। उसकी पथराती हुई देह मे झटका सा लगा।

'उसे मौत की सजा हो जाएगी ?

स्यात।"

तुम बचाने की कोशिश नही करोगे ? मेरा पति है।

करूँगा। काफी खर्चा होगा इसमे।

पुन्नी कुछ सोचती रही।

नरसी का कालरी वाला खेत मेरे खेत मे लगता है। तुम उसे मुझे बेच दो।"

'बेच दूगी।

वो उपजाऊ है। मैं उसमे चने डालूगा।

बहुत समय से तुम्हारी उस खेत पर निगाह थी।

निगाह तो तुम पर भी थी।

रावजी हसे। कूपी मे थोडी सी बची थी।

उसी के लिए तुमने मेरे आदमी को फँसाया ?'

रावजी हसते रहे। एसी करांती घरांती भर्रांती हुई हँसी मानो किसी हथियार को धार देने के लिए सिल पर रगडा जा रहा हो।

मैं किसी को फसाता नही।

वह हत्या करने की सोच भी नही सकता है। मैं जानती हूँ।

तुम कुछ नही जानती हो।

मैं सोचती थी, वह कभी मेरी हत्या करेगा लेकिन उसने तो आज तक आखो मे रीस लाकर हा मुझे नही देखा।

उसे पता था कि तुम मेरे साथ ?'

बातें उस तक पहुच गयी थी।

फिर भी वह गुस्साया नही ?"

उसे मुझ पर बहुत भरोसा था। एक बार यो ही पूछा तो मैंने कह दिया नही ऐसा कुछ नही है। बस उसने सच मान लिया। एसा नेक

आदमी—किसी पर आरी चला सकता है ?"

अब उसकी ज्यादा तरफदारी मत करो।"

रावजी ने उसे अपनी बाँहों के जाल में फँसा लिया।

मैं गंदी हूँ मुझे भी मार डालो। हत्यारे।'

वह घुटती हुई बुदबुदाई। चीखना चाहती थी किंतु—

रावजी की नसों में नशे के डोरे खिंचने लगे। एकाएक उन्हें ताव आ गया, कमाली गुरू से बके जा रही है।' उन्होंने पुनी को बोरे पर पटक लिया। ओढ़नी को खींचा परे फेंक दिया। फिर नेफे में अंगुली डाल कर घाघरे को फाड़ डाला। अब वह उनके घुटनों के नीचे थी। वे जगह जगह उसे दाँतों से काट रहे थे और वह एकदम चुप थी। डरी हुई। जैसे काल के दूत को देख रही हो प्रत्यक्ष।

'मैं समूचे गाँव को रौंद सकता हूँ। एक मिनट में।"

रावजी उसे चीरने लगे। बरहम होकर।

मैं इसी लायक हूँ। मुझसे ऐसा ही सलूक करो।'

पुनी ने कहा और स्वयं को सपाट हवाले कर दिया।

'तुम ससुरी जली हुई रस्सी। सारी अकड़ निकाल दूँगा तेरी। राख कर दूँगा। मज्जा दे मुझे, मज्जा।"

रावजी दाँत पीस रहे थे और हाँफ रहे थे।

यमराज

खारियावास तक पहुँचते-पहुँचते रात पड गयी और रास्ता अधेरे स भर गया। टीलो के पीछे छुपे हुए पेड़ अचानक भयावह मे लगने लगे। जब एक भाड़ी मे लोमड़ी की गुर्राहट सुनाई दी तो राका चौंक उठा और दाती म अगुलिया डाल कर इस तरह नीचे देखने लगा मानो कीच म पाव धममसा गय हो। फिर पचास-साठ गज की दूरी पर किसी की पद चाप उभरी तो उसने हेला दिया ओऽहो ज रामदव बाबा!

ज हो कौण है भई? आवाज आयी बोझिल और थकी हुई।

राका एकदम कोई उत्तर नहीं दे पाया।

'राहगीर हो क्या?

'यही समझो।'

कौण-सा मुकाम?'

राका फिर अपन भीतर की घुडियो म उलझ गया और उसकी जीभ म जसे आट पड गयी। आग के दूसरे सवालो से बचन के लिए उसन कह दिया बहुत दूर है अच्छा इस गाव म ठहरने-वहरन की कोई जगह है?"

गाँव तो ठहरने के लिए ही होता है। किस जात के हो ?"

'खटीक।"

'तो इस ढलान से उतर कर पूरब की तरफ मुड जाना। पहले एक कुआँ आयगा। फिर कीकर के पेडा का झुरमुट बस वही डाल्ने खटीक का घर है। रात वासा मिल जायेगा तुम्हें।"

अधेरे की बातचीत अधेरे में गुम हो गयी।

राका टोह लेता हुआ आगे बढा। कुएँ पर डाल-बाल्टिया की खन-खनाहट और डगर-ढोरो की गुरयम-गुत्थाइ उसे बरसो पुराने माहौल म खींच ले गयी। नहीं वह पीछे मुडकर नहीं देखेगा। राका जानता था ऐसा करते ही वक्त का कितना भारी और निर्जीव बोझ उसकी पीठ पर आ पडेगा। कमर सहसा दोहरी हो जायगी। दो कदम भी नहीं चल पायगा। वह और जड होकर, एक अदृश्य दुनिया की बर्फ म गलता बीतता चला जायगा।

फूस के एक छप्पर की किवाडी हिली। किसी ने बाहर झाँका फिर अंदर की ओर मुड कर फुसफुसाया "हे बुआ! तुमने बिलकुल सच कहा था —देखो जादूगर।

राका के पाव अटक गये। एक नजर उसने अपने कपडो पर डाली। नीले रंग का सुथना चौखाने की लंबी सी कमीज और सिर पर लहरिया का पगड। वह मुस्कराया। सूखे पपडियाये होठ अजीब तरह से खिंच गये—बच्चे का अनुमान उसके भेष को लेकर गलत नहीं है।

आसमान धीरे धीरे बडा हो रहा था, चाँद के गर्द भरे उजाले म। खारियावास की झोपडियों म रात के पहले पहर का शोर तैर रहा था। कुछ भी नहीं बदला आठ साल पहले ऐसा ही था वह गाँव—इसी तरह उदास और अपने में ही दोवट में लिपटा हुआ राका ने सोचा। वह कई दफे यहाँ से होकर गुजरा है—कभी निश्चित और चुपचाप कभी भयभीत और बदहवास। उसे याद आया—खारियावास के उत्तर म कूडे का एक ढेर एक बार वह पीछा करने वाले लोगो के डर से चोरी का कुछ माल उसके नीचे दबा कर अरणा और करेडा के जंगल म भाग गया था।

यमराज

ग्वारियावास तक पहुँचत-पहुँचते रात पड गयी और रास्ता अधरे स भर गया। टीलो के पीछे छुपे हुए पड अचानक भयावह से लगन लगे। जब एक झाडी मे लोमडी की गुराहट सुनाइ दी तो राका चौंक उठा और दाढी म अँगुलियाँ डाल कर इस तरह नीचे दखन लगा, मानो कीच म पाँव घसमसा गय हो। फिर पचास-साठ गज की दूरी पर किसी की पद चाप उभरी तो उसने हेला दिया ओऽहो जै रामदेव बाबा!

ज हो कौण है भई? आवाज आया बोभिल और थकी हुइ।

राका एकदम कोई उत्तर नही दे पाया।

'राहगीर हो क्या?'

'यही समभो।'

कौण-सा मुकाम?

राका फिर अपन भीतर की धुडियो म उलभ गया और उसकी जीभ म जैसे आँट पड गयी। आगे के दूसरे सवाला स बचन के लिए उसन कह दिया बहुत दूर है अच्छा इस गाव म ठहरने-वहरन की कोई जगह है?"

गाँव तो ठहरने के लिए ही होता है। किस जात के हो?"

"जटीन।"

"तो इस दलान से उतर कर पूरब की तरफ मुड़ जाना। पहले एक कुआँ आयगा। फिर कीकर के पेड़ों का झुरमुट बस वहीं लालू घटीर का घर है। रात बाबा मिल जायगा तुम्हें।"

अधर की बातचीत अधेरे में गुम हो गयी।

राका टोह लेता हुआ आगे बढ़ा। कुएँ पर डाल-बाल्टियों की खन-खनाहट और डगर-ढोरों की गुत्थम-गुत्थाई उस बरसों पुराने माहौल में खींच ले गयी। नहीं वह पीछे मुड़कर नहीं देखेगा। राका जानता था ऐसा करते ही वक्त का कितना भारी और निर्जीव बोझ उसकी पीठ पर आ पड़ेगा। कमर सहमी दोहरी हो जायगी। दो कदम भी नहीं चल पायगा। वह और जड़ होकर एक अनजानी दुनिया की बर्फ में धसता गीतता चला जायगा।

कुम के एक टापर की विदाई हिली। किसी ने बाहर झाँका फिर अंदर की ओर मुड़ कर फुसफुसाया हुह बुआ! तुमने ठीक ही सच कहा था —कोई जादूगर।'

राका के पाँव अटक गये। एक नज़र उसने अपने कपड़ों पर डाली। नीले रंग का सुथना चौखाने की लंबी-सी कमीज़ और सिर पर लहरिये का पगड़। वह मुस्कराया। सूखे पपड़ियाये होठ अजीब तरह से खिंच गये—बच्चे का अनुमान उसके रूप को लेकर गलत नहीं है।

आसमान धीरे धीरे बड़ा हो रहा था, चाँद के गहरे उजाले में। खारियावास की झोपड़ियां में रात के पहले पहर का शोर तैर रहा था। कुछ भी नहीं बदला आठ साल पहले ऐसा ही था वह गाँव—उसी तरह उदास और अपने मन के दायरे में लिपटा हुआ राका ने सोचा। वह कई दफे यहाँ से होकर गुजरा है—कभी निश्चिंत और चुपचाप कभी भयभीत और बेहवास। उसे याद आया—खारियावास के उत्तर में कूड़े का एक ढेर एक बार वह पीछा करने वाले लोगों के डर से चोरी का कुछ माल उसके नीचे दबा कर अरणों और कंकेड़ों के जंगल में भाग गया था।

किवाडी बजी। पूरी तरह खुली और धुंधली चाँदनी म एक बुढिया उजागर हुई। राका ने देखा दस ग्यारह बरस का एक बच्चा टोकरी के ओढन म छुप कर सहमा सा खडा था। वह हँसा डरो मत मैं जादूगर नही हूँ।

बच्चा सिकुड कर उसे घूरने लगा। बुढिया बोली कहाणी सुणा रही थी मैं इसे। बीच म ही पूछण लगा—बुआ जादूगर कसा होता है? मैंने टालणे क लिए कह दिया—बाहर खडा है जाके देख लो। फिर देर क्या थी ऱसने सचमुच ही ।

चुप! यह तुम्हे बिल्ली बना देगा बुआ।' बच्चे न बुढिया को तेजी से टोका।

इस बार राका और बुढिया साथ-साथ हँसे।

मैं तो यो ही बहला रही थी तुम्हें समचू!' बुढिया न बच्चे के सिर पर हाथ फेरा फिर बोला कभी कभी कसा सजोग बठ जाता है।

'डाल्ले खटीक का घर है यह? राका ने पूछा।

'हाँ है तो सही लकिन डाल्ले को मरे डेढ साल हो गया। गोहरे ने काट खाया था। ऐसा जोर मारा जहर ने कि एक घडी भी नही निकाल सका समचू उसी का बटा है।

मैं भी खटीक हू। रात बासा चाह रहा था ।

ओहो तो इसमे इतने सकोच की क्या बात? बटाऊ क लिए कोई रोक थोडे ही है। मैं बाहर माची निकाल देती हूँ। अब तक थोडा बिस राम करोगे रोट्टी बण जायेगी।'

बुढिया भीतर गयी। किवाडी के पास राका ने उससे माची थाम ली और दरवाजे क नजदीक डाल कर बठ गया। एक लबे अरसे के बाद वह मूज की बुनी हुई खाट पर यो बैठा था। उसके अति-परिचित खुरदुरेपन स राका का रोमाच हो आया। जेल की पत्थर पट्टी पर सात बरस उसकी देह पथरा सी गयी थी। मूज की भुनावन ने उसकी नसो को एक कोमल ताप और हिलकोर से भर दिया।

किवाडी दृट की अटकावन लगा कर खुली छोड दी गयी थी। बुढिया काटी के टुकडे डाल कर चूल्हे की आग तेज कर रही थी और बीच बीच म

राका की ओर ताक लेती थी। राका कुछ अस्त व्यस्त हो गया। वह जानता था अब उसका नाम-पता ठिकाना पूछा जायेगा और उन तमाम धारदार, नुकीली चीजों को टटोला जायगा जिनसे वह बचना चाहता है। वह खुद को तैयार करने लगा। चोरी चपाटी करते हुए पकडे जाने पर थाने-वालों के सामने तरह-तरह के झूठ बोलने की जो आदत पड गयी थी जेल की जिंदगी में उससे काफी-कुछ छुटकारा मिल गया था लेकिन अब बुल्या की ओर से आनेवाले प्रश्नों का सामना करने के लिए वह हवा के आरपार फिर कुछ गढने लगा।

"डाले की बड़ी इज्जत थी बस्ती-परबस्ती में। मेरा भाई था वह।' बुल्या काठ की छननी में आटा छानते हुए कह रही थी तीन औरतें की उसने पण भाग की माया देखो सीना नहीं रही। एक चेचक में मर गयी। दूसरी जोहड़ की गुनाई के वक्त मिट्टी की भीत गिर जाने से दब कर मास तोड गयी और तीसरी डाले की मौत के चार महीने बाद ही एक कंजर के साथ लग नगा गयी। समचू उसी के पेट से है।' अचानक उसे ध्यान आया 'आ हो समचू! कहाँ जाके छुप गया तू? लोहा लट्ठ था तेरा बाप और सपूत ऐसा डरपोक!"

उपला के बटाडे की ओट से समचू प्रकट हुआ और राका से कुछ कदम की दूरी पर खडा हो गया।

जादूगर नहीं हो तुम?' उसने पूछा राका से अटकते हुए।

'बिलकुल नहीं। यहाँ मेरे पास आओ तो!" राका को समचू के भोलेपन ने मोह लिया।

'तुम फूंक मार कर भूतों को बुला सकते हो?'

नाऽ यह लो फूंक मारता हूँ कोई भूत नहीं आया।'

तुम्हारे कुर्ते की जेब में हरा रुमाल है?"

हरा रुमाल? किस वास्ते?

तुम उसे हिलाओगे और अक्काश में उड़ने लगोगे।

नहीं ऐसा तो कुछ भी नहीं है मेरे पास।

सच्ची बात कह हो?"

गया तो यमराज को अपने काम का खयाल आया और वह लड़के से कहने लगा—मैं तुम्हारे बाप को लेने आया हूँ। लड़के को यमराज की बात पर बड़ा अचंभा हुआ। वह जानता था कि बाप को खेल-खेल में कोई दिलचस्पी नहीं है। उसने यमराज से कहा—मेरे बाप को छोड़ो, मुझे अपने संग ले चलो हम दोनों खूब मज्ज करेंगे। यमराज चिंता में पड़ गया। तब लड़के ने धमकी दी—अगर तुमने मेरा कहा नहीं माना, तो मैं तुमसे कुट्टी कर लूँगा। यमराज लड़के को साथ लेकर चल पड़ा। चलते चलते लड़का जब थक गया तो यमराज ने उसे गोद में उठा लिया। लड़के को नींद आ गयी और वह यमराज के कंधे से लग कर सो गया।

समचू की पलकों पर नींद उतरने लगी। शुरू में तो कहानी उसे रोचक लगी थी और वह गौर से सुन रहा था पर आगे जाकर उसकी आँखों के गिर्द धुंध-सी मँडराने लगी। वह खाटी पर लेट गया।

नींद आ रही है?

उहूँ! समचू के मुँह से निकला। तभी एक तारा टूटा आकाश में और उजास की लकीर बनाता नीचे आ गया।

"रास्ते में यमराज को एक राक्षस मिला। राक्षस भूखा था। उसने यमराज से कहा—यह लड़का मुझे दे दो और मुँहमाँगा इनाम ले लो। यमराज ने इंकार कर दिया। तब राक्षस ने लालच दिया कि मेरे पास हीरे मोतियों के सात घड़े हैं वे सब मैं तुम्हें दे दूँगा। यमराज का चित्त डाँवाडोल हो गया।'

समचू हो! बुढ़िया ने पुकारा। यह थाली में जौ के टिक्कड़ और चटनी रख कर लायी थी नाक बज रही है इसकी तो लो तुम जीम लो!'

राका के नथुनों में गरम गरम रोटियों की गंध उत्तेजना भरने लगी। कहानी को बीच में छोड़कर उसने समचू की तरफ देखा। वह बाँह पर माथा टिकाये बेखबर सो रहा था। बारीक भौंहें, तीखी नाक जरा खुले-से पतले होंठ और कानों को ढँकते हुए अधभूरे बाल। कितना प्यारा बच्चा है राका का मन कैसा-कैसा तो हो गया। स्वयं पर अंकुश लगाते हुए उसने

थाली की ओर हाथ बढाया और पहला कौर तोडा।

बुढ़िया अपने लिए चिलम भर लायी थी।

'तुम दोनो न खाणा खा लिया ?"

'हाँ बुढ़ापा है आँखो से कम सूझता है। रात का रोट्टी बणाती हूँ, तो जलणे बलणे का डर रहता है इसलिए दिन रहते रहते सारे काम निपटा लती हूँ।

"मेरी वजह से तुम्हे तकलीफ उठाणी पडी ।

'वा...वीरा तुमने भी खूब कही। खटीक को अगर खटीक के घर रोट्टी नही मिलगी तो कहा मिलेगी ? तुम तो अच्छी तरह खाओ रगत ल के। कच्चा तो नही रह गया कोई टिक्कड ?

नही, एकदम करारे हैं। राका कुछ देर खामोशी म मुह चलाता रहा, फिर उसने खोये खोये से पूछा, 'आसुतलला कित्ती दूर है यहा स ?

'नजीक ही है—यहा कोई छह-सात कोस।' बुढ़िया न एक गहरा कश लेकर धुआ छोडा।

वहा के राका खटीक को जाणती हो तुम ? '

राका ?' बुढिया की भव सिकुड गयी 'अच्छा कोई हत्यारा! उसने समूची खटीक बिरादरी पर कलक लगा दिया। जेल म है आजकल।

राका के जबडे कस गये। हाथ की अँगुलियो से लगा हुआ कौर थाली म गिर गया।

'अ बल दर्जे का चोर था सेंधमार। फिर जब उमर ढलणे पर सुधर गया तो हरजी पटेल क यहाँ चाकरी करता था वो। रडा मडा था अकेला। महनती भी खूब था और पटेल उसे बहुत चाहते थे। लकिन हुआ यह कि पचात की तरफ स तालाब बणवाण क लिए शहर से एक ठेकेदार को बुलाया गया। ज्यो ही तालाब बणके तयार हुआ उसका पेंदा तडक गया और सब किया कराया अकारथ गया। किसी तरह फिर पेंदे को पक्का किया गया वह हफ्ते भर भी नही टिका और टूट गया। चार बार यही हालत हुई। तब किसी ने ठकेदार से कह दिया कि तालाब बलि माँग रहा है मिनख की बलि। ठेकेदार का सोलह आने सही जच गयी। उसने राका को पटाया।'

बुढ़िया को खाँसी आ गयी। कुछ पल रुक कर उसने कहा, 'हरजी पटेल क एक लड़का था। तीन-साढ़े तीन साल का। राका खेल-खेल म, घोड़ा बन कर उस पीठ पर बिठाये हुए तालाब तक ले गया। वहाँ उस पापी न कुल्हाड़ी से बच्चे के दो टुकड़े कर दिय। ठेकेदार न तालाब के पेंदे म बच्चे का खून डाला। सौ रुपये दिये राका को ठेकेदार न पण बाद म भद खुल गया। पुलिस ने राका की बड़ी दुरगत की। उसको और ठेकेदार को सजा हो गयी।' चिलम औंधी मार कर बुढ़िया ने राका की तरफ देखा तुमन तो कुछ खाया ही नहीं।'

इत्ती ही भूख थी।" माँची के नीचे थाली रख कर वह उठ खड़ा हुआ। हाथ धोय। लोटा भर ठंडा पानी पिया।

हवा तज़ हो गयी थी और दरख्तो के पत्ते बज रहे थे। एक सियार हुआँ हुआँ करता हुआ पास के जगल की चौकीदारी कर रहा था। कहीं दा रे एक बछड़ा बेचैनी स रभा रहा था। बुढ़िया बटाही के बिछावन के लिए गूदड़ निकालन लगी।

क्या नाम था उसका उस बच्चे का? राका दाग्री खाते हुआ याद करना चाह रहा था किंतु बहुत कोशिश करन के बावजूद उसकी स्मति मृत बनी रही। एक अस्पष्ट सा मासूम चेहरा रह रह कर उसके आसपास खिलखिलाता रहा— लोका घोला लाका घोला अच्छा घोला!'

बुढ़िया ने तो नहा सुनी यह तोतली आवाज? सकपका कर राका न आज बाजू दखा। समचू पर उसकी निगाह ठहर गयी—ओह कितना सुंदर! वह हरजी पटेल का बटा अगर जिंदा रहता तो आज इतना ही बड़ा हो जाता।

रात के आखिरी पहर म राका चुपचाप उठा और वहा से चल दिया। थोड़ी दूर तक तो वह बआवाज चलता रहा—धीमे धीमे। फिर घोड़ की तरह टापें मारता हुआ जमीन सूंघता हुआ दौड़ने लगा।